दूर्वाक्षत

मिठगर मैथिली, मिसरिक बोल! सीखू मिथिलाक्षर, बनू अनमोल!!

‘दूर्वाक्षत’ संस्थाक स्मारिका 2020

https://www.facebook.com/mithilaksharabhiyaan/ @mithilakshar19 https://doorvaksata.org/

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान : मीडियाक नजरिमे





मैथिली और भोजपुरी की ऑनलाइन काव्य गोष्ठियों की बहार, लाइव परफॉर्मेंस हिट

Priyaranjan.jha@timesgroup.com

कोरोना ने लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ दिया है। एक तो लॉकडाउन के कारण लोगों के पास समय बहुत है, फिर बंदी ने लोगों को यह अहसास कराया है कि जड़ से जुड़ना बहुत जरूरी है। ऐसे में मैथिल और भोजपुरिया समाज के लोग भी अपनी जड़ों और यहां की अपनी दुनिया को इन दिनों बहुत याद कर रहे हैं और इस याद से लगभग ऐसी चीजों से जुड़ रहे हैं, जिनके लिए उनके पास अब तक समय का अभाव रहता था। दिलचस्प बात यह है कि दोनों ही समाज के लोग जड़ों से जुड़ने के लिए इन दिनों टैक्नोलॉजी का उपयोग कई प्लैटफॉर्म पर कर रहे हैं। यूट्यूब, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म्स का इसमें खूब उपयोग हो रहा है तो जूम जैसे ऐप का यूज बड़ी उम्र के लोग भी काफी सीख गए हैं।



मैथिल और भोजपुरी

कर सकते हैं।'

दूसरी ओर, मैथिली साहित्य और संगीत के उत्थान के इस मौके

मिथिलाक्षर लिपि में 500 को ऑनलाइन प्रशिक्षित किया

■ प्रस, नई दिल्ली: मिथिलाक्षर,लिहुता लिपि को प्रसारित और प्रचारित करने में अग्रसर संस्था 'दूर्वाक्षत' ने कोरोना काल में देश के विभिन्न क्षेत्रों के साथ-साथ इंग्लैंड, अमेरिका, सिंगापुर, मॉरीशस, साउथ अफ्रीका, होंग कॉन्ग, साउदी अरब और नेपाल के लगभग 500 अभ्यर्थियों को घर बैठे मिथिलाक्षर लिपि सिखाने में सफलता पाई। इसी क्रम में संस्था अपना 50वां बैच भी पूरा किया जो हर महीने निरंतर चला आ रहा है। संस्था के संस्थापक सदस्य पंडित कौशल झा ने बताया कि यह संस्था घर बैठे निःशुल्क मिथिलाक्षर लिपि सिखाने का काम कर रही है। संस्था ने व्हाट्सएप के माध्यम से लोगों को प्रशिक्षित करने में निपुणता हासिल कर रखा है। झा ने बताया कि संस्था को इसके लिए सरकार और सामाजिक संस्थाओं से समय-समय पर मदद मिलती रही है।

मिथिलाक्षर सीखने वालों का होगा सम्मान

■ दिस, नई दिल्ली: देश की पारंपरिक भाषाओं में से एक मैथिली की लिपि मिथिलाक्षर या तिरहुता थी, लेकिन कालांतर में मैथिली भाषा को देवनागरी में लिखा जाने लगा। ऐसे में धीरे-धीरे यह लिपि विलुप्त हो गई। हालांकि पिछले कुछ समय से मैथिल समाज से जुड़ी कई संस्थाएं फिर से इस लिपि में लोगों की दिलचस्पी जगाने में लगी हुई हैं। इन्हीं में से एक है दूर्वाक्षत संस्था की मिशन मिथिलाक्षर योजना। लॉकडाउन की मदद से देश ही नहीं, विदेश में रहने वाले मैथिलों को भी संस्था यह लिपि आसानी से सिखा रही है। जो लोग इस लिपि में पारंगत हो चुके हैं, अब दूर्वाक्षत ऐसे लोगों को सम्मानित करने के लिए 'मिथिलाक्षर प्रवीण सम्मान -2020' का आयोजन करने जा रही है। 12 अप्रैल को इसका आयोजन दिल्ली के राजेंद्र भवन सभागार, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग में होगा। नवभारत टाइम्स 29/2/20

दिल्ली में होगा समारोह

'दूर्वाक्षत' द्वारा संचालित इस मिशन से उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को 'मिथिलाक्षर प्रवीण सम्मान -2020' में सम्मानित किया जाएगा। यह आयोजन दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर और मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली सरकार के सहयोग से दिल्ली के दीन दयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेंद्र भवन सभागार में आगामी 12 अप्रैल को अपराह्न तीन बजे से शुरू किया जाएगा। यह जानकारी शनिवार को 'दूर्वाक्षत' के संस्थापक एवं अध्यक्ष पं. कौशल झा ने दी है।

मिथिलाक्षर सीखने वालों का होगा सम्मान

जमाने के साथ आगे बढ़ने की चाह, लेकिन विरासत को बचाने की बेचैनी भी



लहेरि

लक्ष्मीश्वर सिंह संग्रहालय में कैथी एवं मिथिलाक्षर प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्घाटन

मिथिलाक्षर व कैथी लिपि की पढ़ाई प्राथमिक विद्यालय से हो









दूर्वाक्षत

संस्थापक
पं. कौशल झा 'गुरुजी'
संपादक
स्वाती शाकम्भरी
कार्यकारी संपादक
अंजनी कुमार चौधरी
शैलेन्द्र झा (लिप्यांतरण)
सहायक संपादक
डॉ. त्रिपुरारि ठाकुर
सविता झा 'सोनी' (लिप्यांतरण)
कुमुद झा (लिप्यांतरण)
समन्वय सहयोग
शरद कुमार झा
प्रबंध संपादक
अखिलेश मिश्र
आवरण
मनोज कर्ण
अंतिम आवरण
साधना सुनील झा
डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

संपर्क
डी-9, नन्हे पार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059
फोन: +91-9999327551
doorvaksata@gmail.com
https://doorvaksata.org/
https://www.facebook.com/mithilaksharabhiyaan/
@mithilakshar19
https://www.youtube.com/channel/UCm8vQ73AB-dT8-rcytr53B8A

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

संस्थापक
पं कौशल झा 'गुरुजी'
संपादक
स्वाती शाकम्भरी
कार्यकारी संपादक
अंजनी कुमार चौधरी
शैलेन्द्र झा(लिप्यांतरण)
सहायक संपादक
डॉ. त्रिपुरारि ठाकुर
सविता झा 'सोनी' (लिप्यांतरण)
कुमुद झा (लिप्यांतरण)
समन्वय सहयोग
शरद कुमार झा
प्रबंध संपादक
अखिलेश मिश्र
आवरण
मनोज कर्ण
अंतिम आवरण
साधना सुनील झा
डिजाइनर
मणिशंकर कुमार

संपर्क
डी-९,नन्हे पार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-११००५९
फोन: +९१-९९९९३२७५५१

(उपरोक्त सभ टा पद मानद आ अवैतनिक अछि)

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर गीत

अबियौ जुड़ियौ बाबू भैया
अबियौ जुड़ियौ मैया दैया
बौआ बुच्ची अबियौ जुड़ियौ
शुभ अभियानमे
दूर्वाक्षतक पलानमे ना।।

मैथिली लिपी सभ जन सिखियौ
मैथिली बजियौ पढियौ लिखियौ
मैथिली भाषाके लिपी
निज सिखियौ शानमे
दूर्वाक्षतक पलानमे ना।।

खाहे मिथिला बसी विदेश
अथवा बाहर कोनो प्रदेश
वाट्सअप मादे सीखू
मिथिलाक्षर अभियानमे
अपना भाषा शानमे ना।।

दूर्वाक्षत संस्थासँ जुड़ियौ
मैथिली लिपी सीखि सिखबियौ
लगियौ हिलमिल भाई बहिन
मिथिला उत्थान मे
दूर्वाक्षतक पलानमे ना।।

मैथिली भाषा अपन प्रतीक
मैथिली लिपी ललित सटीक
बढबू निज गौरव सौरभ
"धीरेन्द्र" जहान मे
अपना शान गुमानमे ना।

विषय सूची | রিষয সূচী

शुभकामना संदेश	5-14	শুভকামনা সংদেশ
संपादकीय	15	সংপাদকীয
गणेश वंदना / गौरी शरण झा	16	গণেশ বংদনা / গৌৰী শৰণ ঝা
अध्य्क्षक कलम सं	17	অধ্যক্ষক কলম সং
कविता / अर्चना झा अन्नू	20	কৱিতা / অৰ্চনা ঝা অন্নূ
दूर्वाक्षत – मिशन मिथिलाक्षर : एक यात्रा	21	দূৰ্বাক্ষত – মিশন মিথিলাক্ষৰ : এক যাত্ৰা
दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान : संस्था परिचय	26	দূৰ্বাক্ষত মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান : সংস্থা পৰিচয
मिथिलाक्षर प्रवीण : भविष्यक कर्णधार	32	মিথিলাক্ষৰ প্ৰৱীণ : ভৱিষ্যক কৰ্ণধাৰ
मिथिलाक्षर प्रवीण : वरिष्ठ नागरिक	33	মিথিলাক্ষৰ প্ৰৱীণ : ৱৰিষ্ঠ নাগৰিক
मिथिलाक्षर प्रवीण : ग्लोबल मैथिल	34	মিথিলাক্ষৰ প্ৰৱীণ : গ্লোৱঁল মৈথিল
मिथिलाक्षर वर्णमाला	35	মিথিলাক্ষৰ ৱৰ্ণমালা
अनुभव / मनोज कर्ण, मृणालिनी पालन	36	অনুভৱ / মনোজ কৰ্ণ, মৃণালিনী পালন
दूर्वाक्षत गीत / धीरेन्द्र कुमार झा	37	দূৰ্বাক্ষত গীত / ধীৰেন্দ্ৰ কুমাৰ ঝা
आजुक नव्यतम पीढ़ी आ मैथिली / डॉ शेफालिका वर्मा	38	আজুক নৱ্যতম পীঢ়ী আ মৈথিলী / ডা শেফালিকা ৱৰ্মা
नारीक सम्मान आ प्रेम आदिवासी समाज सँ ग्रहण क'		নাৰীক সম্মান আ প্ৰেম আদিৱাসী সমাজ
सकैत छी / डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	40	সং গ্ৰহণ ক' সকৈত ছী / ডা. কৈলাশ কুমাৰ মিশ্ৰ
मां सरस्वती वंदना / कैलाश कुमार झा	42	মাঁ সৰস্বতী বংদনা / কৈলাশ কুমাৰ ঝা
जेनऊ / डॉ. चंद्रशेखर झा	43	জেনঙ / ডা. চংদ্ৰশেখৰ ঝা
कविता / अर्चना झा अन्नू	44	কৱিতা / অৰ্চনা ঝা অন্নূ
मिथिलाक्षर : मात्र एक लिपि नहि / रमेश चन्द्र झा	45	মিথিলাক্ষৰ : মাত্ৰ এক লিপি নহি / ৰমেশ চন্দ্ৰ ঝা
मंगल गीत / देवानन्द मिश्र	51	মংগল গীত / দেৱানন্দ মিশ্ৰ
मिथिला वर्णन / अंजनी कुमार चौधरी	52	মিথিলা ৱৰ্ণন / অংজনী কুমাৰ চৌধৰী
लोरी / ममता ठाकुर	54	লোৰী / মমতা ঠাকুৰ
अहिबातक पातिल / स्वाती शाकम्भरी	56	অহিৱাঁতক পাতিল / স্বাতী শাকম্ভৰী
दोहा / प्रतिभा स्मृति	57	দোহা / প্ৰতিভা স্মৃতি
कोरोना / राजीव रंजन दास	58	কোৰোনা / ৰাজীৱ ৰংজন দাস
ब्यूटी / शरद कुमार झा	59	ব্যূঁটী / শৰদ কুমাৰ ঝা
जीव जीवात्मा आउर संस्कार / जयन्त के श्रीवास्तव	60	জীৱ জীৱাত্মা আউৰ সংস্কাৰ / জযন্ত কে শ্ৰীৱাস্তৱ
श्री दुर्गा शप्तशती / भव्या अविनाश	62	শ্ৰী দুৰ্গা শপ্তশতী / ভৱ্যা অৱিনাশ
मैथिली गीत / गणेश झा	63	মৈথিলী গীত / গণেশ ঝা
कोजागरा / साधना सुनील झा	64	কোজাগৰা / সাধনা সুনীল ঝা
भगवती गीत / पूनम झा	66	ভগৱতী গীত / পূনম ঝা
छठि मैया के गीत / अंजनी झा	67	ছঠি মৈযা কে গীত / অংজনী ঝা
कतेक आजाद छी हम आइ स्वतंत्र भारतमे / गिन्नी झा	70	কতেক আজাদ ছী হম আঅ স্বতংত্ৰ ভাৰতমে / গিন্নী ঝা
कविता / शंकर कुमार (मधुपांश), नागेंद्र ठाकुर	71	কৱিতা / শংকৰ কুমাৰ (মধুপাংশ), নাগেংদ্ৰ ঠাকুৰ
नारीक शिक्षा / दिव्या चौधरी	72	নাৰীক শিক্ষা / দিৱ্যা চৌধৰী
कविता / मणि 'आमा रुपी', श्याम झा	73	কৱিতা /মণি 'আমা ৰুপী', শ্যাম ঝা
पिपरक गाछ / श्याम चन्द्र मिश्र	74	পিপৰক গাছ / শ্যাম চন্দ্ৰ মিশ্ৰ
मातृभाषा / उज्ज्वल झा	76	মাতৃভাষা / উজ্জ্বল ঝা
कविता / आनन्द मोहन झा	76	কৱিতা / আনন্দ মোহন ঝা
कविता / शरद कुमार झा, ममता ठाकुर	77	কৱিতা / শৰদ কুমাৰ ঝা, মমতা ঠাকুৰ
मातृभाषाक महत्व / साधना सुनील झा	77	মাতৃভাষাক মহত্ত্ব / সাধনা সুনীল ঝা
मिथिलाक्षर लिपि अछि हम्मर सम्मान / डॉ. सबिता झा 'सोनी'	78	মিথিলাক্ষৰ লিপি অছি হম্মৰ সম্মান / ডা. সৱিঁতা ঝা 'সোনী'
भारतक सभ्यता आर संस्कार / ओम चौधरी	79	ভাৰতক সভ্যতা আৰ সংস্কাৰ / ওম চৌধৰী
डिस्कवरी ऑफ मिथिला / लिप्यांतरण : कुमुद झा	80	ডিস্কৱৰী আফ মিথিলা / লিপ্যান্তৰণ : কুমুদ ঝা

पत्रिकामे प्रकाशित आलेख आ रचनामे व्यक्त विचार आ दृष्टिकोण लेखक केर छनि। संपादक अथवा प्रकाशक कें ओहिसं सहमत होयब आवश्यक नञ अछि।

পত্ৰিকামে প্ৰকাশিত আলেখ আ ৰচনামে ব্যক্ত বিচাৰ আ দৃষ্টিকোণ লেখক কেৰ ছনি। সংপাদক অথৱা প্ৰকাশক কেঁ ওহিসং সহমত হোযৱঁ আৱশ্যক নঞ অছি।

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Ramesh Pokhriyal 'Nishank'

सत्यमेव जयते

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि दूर्वाक्षत (पंजी.) संस्था, उत्तम नगर, नई दिल्ली द्वारा "मिथिलाक्षर प्रवीण सम्मान समारोह - 2020" का वेबिनार आयोजन 1 जनवरी, 2021 को किया जा रहा है तथा इस सुअवसर पर एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

'मिथिला' राजा जनक की भूमि है – यह आध्यात्म और ज्ञान की भूमि है। 'मिथिला' सीता जी की भूमि है जो हमारी संस्कृति में नारी मर्यादा का पूज्य प्रतीक है। मुझे हर्ष है कि मैथिल समुदाय के लोगों के अथक प्रयास से मैथिली भाषा को संविधान की अष्टम सूची में स्थान मिला। भाषाएं हमारी संस्कृति की पोषक एवं वाहक हैं। किसी भी भू-भाग की मातृभाषा वहां के लोगों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। कोई बाहरी भाषा स्थानीय या क्षेत्रीय मान्यताओं, प्रतीकों और जीवनशैली को उस सहजता और स्वच्छन्दता से निरूपित नहीं कर सकती जो स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा कर सकती है। भाषा कला एवं संस्कृति का अभिन्न अंग है। मूल रूप से किसी भाषा को बोलने वाला व्यक्ति अपने अनुभवों को कैसे समझता है, ग्रहण करता है और अभिव्यक्त करता है, यह भाषा की संरचना से तय होता है। क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक भाषाएं भारत की सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध करती हैं। अत: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भाषायी बहुलवाद को प्रोत्साहित करती है।

मुझे विश्वास है कि मैथिल भाषी नागरिक स्वयं मैथिल के समृद्ध लोक साहित्य और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए सतत् प्रयास करते रहेंगे। दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान के पदाधिकारियों एवं समस्त कार्यकर्ताओं के प्रयास सराहनीय हैं। मैं "मिथिलाक्षर प्रवीण 2020" तथा प्रकाश्यमान "दूर्वाक्षत" स्मारिका हेतु अपनी अनंत शुभकामनाएँ संप्रेषित करता हूँ।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

स्वच्छ भारत

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in

प्रहलाद सिंह पटेल
Prahlad Singh Patel

सत्यमेव जयते

संस्कृति एवं पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार, नई दिल्ली
Minister of State for Culture & Tourism (IC)
Government of India, New Delhi



सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि दूर्वाक्षत संस्था, नई दिल्ली (रजि.), मिथिलाक्षर लिपि प्रवीण समारोह का आयोजन 1 जनवरी 2021 को एक वेबिनार के माध्यम से करने जा रही है तथा इस सुअवसर को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

राजा जनक और माता सीता जी की भूमि मिथिला, अध्यात्म और ज्ञान की भूमि है। मैथिली भाषा को संविधान की अष्टम सूची में स्थान मिला है। दिल्ली में मैथिली-भोजपुरी अकादमी की स्थापना भी हुई है। मैथिल भाषा के समृद्ध लोक साहित्य और संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने का प्रयास स्वागत योग्य है।

विशेष स्मारिका के प्रकाशन और 'दूर्वाक्षत संस्था' के उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएं।

(प्रहलाद सिंह पटेल)

संस्कृति मंत्रालय : कमरा नं. 501, 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 91-11-23386765, 23381539, फैक्स : 91-11-23385115
Ministry of Culture : Room No. 501, 'C' Wing, Shastri Bhavan, New Delhi-110001, Tel : 91-11-23386765, 23381539 Fax : 91-11-23385115
कैम्प कार्यालय : 7-'बी' जनपथ, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 011-23017383, मो. : 09096397307
Camp Office : 7-B, Janpath, New Delhi-110001, Tel.: 011-23017383, Mob. : 09096397307
E-mail : office-hcm@gov.in, prahladspatel@gmail.com

MANISH SISODIA
मनीष सिसोदिया



सत्यमेव जयते

DEPUTY CHIEF MINISTER
GOVT. OF NCT OF DELHI
उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार
DELHI SECTT, I.P. ESTATE,
दिल्ली सचिवालय, आई०पी०एस्टेट,
NEW DELHI-110002
नई दिल्ली–110002
Email. msisodia.delhi@gov.in

D.O. No. : DyCMR/2020/1698
Date : 27-11-2020

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त खुशी हो रही है कि दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर ने COVID-19 के विकट परिस्थिति में मिथिलाक्षर लिपि के संवर्धन हेतु देश विदेश में ऑनलाइन और ऑफलाइन क्लास मिथिलाक्षर अनुरागी को जोड़ने के लिए काफी जोर शोर से काम किया ।

मिथिला आदि काल से ही अपना ज्ञान अपनी संस्कृति से अपनी पहचान बनाते आ रही है। दूर्वाक्षत मिशन द्वारा मिथिला लिपि मिथिलाक्षर के संवर्धन हेतु यह एक सार्थक कदम है।

मै दूर्वाक्षत मिशन मिथिलक्षर अभियान के समस्त कार्यकर्ताओं के इस सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और पहली वार्षिकोत्सव स्मारिका दूर्वाक्षत प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं देता हूँ ।

मनीष सिसोदिया

Nirraj Pathak
Vice Chairman



Maithili Bhojpuri Academy, Delhi
Government of NCT of Delhi
Aapurti Bhawan, Aram Bagh,
Pahar Ganj, New Delhi-110055

शुभकामना संदेश

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान द्वारा **'दूर्वाक्षत'** नामक स्मारिका प्रकाशित भ' रहल अछि, जे समस्त मिथिलावासी ले हर्षक गप्प अछि।

भाषा संस्कृति आर आदर्शक आधार होएत अछि, भाषा के आधारे कोनो प्रांतक संस्कृति आगाँ बढ़ैत छैक। कहि त' भाषा कोनो प्रांतक वर्णन हेतु एकटा सजीव रूप थिक और ओहि भाषा के मेरुदंड ओकर लिपि भेल। ओनहिए मिथिला प्रांतक भाषा मैथिली आ मैथिली भाषा के मेरुदंड मिथिलाक्षर।

आदौ काल सँ मिथिलाक संस्कृति सब सँ उत्कृष्ट छल आ एखनहुँ अछि आर एहि उत्कृष्टता केर कायम राखे हेतु पंडित कौशल झा अपन योगदान संग मिथिलाक्षर के जनज न तक पहुँचाबे मे सफल हेता आर मिथिला भाषा के संवर्धन हेतु हिनकर लुखि प्रयास भविष्य मे मिथिलावासी लेल मिलक पाथर साबित होएत।

हमर शुभकामना दूर्वाक्षत मिशन के समस्त सदस्य लोकिन के जे एहि उत्कृष्ट कार्य लेल अपना योगदान द' रहल छथिन। हुनकर योगदान सदैव सराहनीय रहत।

नीरज पाठक
(नीरज पाठक)
उपाध्यक्ष

पं. कौशल झा
अध्यक्ष,
दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान

Mob. : 9910026360, Off. : 011-23629681 | Email - nirrajpathak@gmail.com

''मिथिलाक सर्वांगीण विकास हेतु संघर्षशील''

अखिल भारतीय मिथिला संघ (पंजी0)

रजिस्टर्ड अण्डर सोसाइटी रजिस्ट्रेशन एक्ट (21 of 1860)

रजिस्ट्रेशन नं. 10288

E-mail : akhilbhartiyamithilasangh@gmail.com

Website : www.mithilasangh.com

पत्राचार कार्यालय:
20,कॉपरनिकस लेन,मंडी हाउस,
नई दिल्ली- 110001
मो0: 9650461788, 9717539000

प्रधान कार्यालय:
म.नं. 435/7 ए,
ई–ब्लॉक, संगम विहार
नई दिल्ली–110080



ডা জানি হমৰা অত্যন্ত হৰ্ষ ও ৰহুল অছি জে দূৰাক্ষত মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান কোৰিত ১৯ এহুন ৰিকট পৰিস্থিতিক ৰাঁৰজুদ মিথিলাক্ষৰ লিপিক সংৰক্ষন হেতু দেশ ৰিদেশ মে আঁননাধান ও আঁথলাধান কুাস ন' মিথিলাক্ষৰ লিপি অনুৰাগী লোকিন কেঁ একত্ৰ কৰৰাঁক লেল জোৰ শোৰ সঁ লাগল অছি।

জে মিথিলা অদৌঁ সঁ অপন জ্ঞান আ সংস্কৃতি সঁ অপন পহিচান ৰঁনৌনে অছি, ওহী মিথিলাক লিপি মিথিলাক্ষৰ কেৰ সংৰক্ষন হেতু 'দূৰাক্ষত' দ্বাৰা কাৰ্য একটা সাৰ্থক ৱেগ হোএত।

হম, দূৰাক্ষত মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান কেৰ সমস্ত কাৰ্যকৰ্তাক সৰাহুনীয় প্ৰয়াসক প্ৰশংসা কৰৈত ছী আৰ অপন পহিল ৰাষ্ট্ৰিকোসেৰক স্বঅৰসৰ স্মৰনীয় ৰঁনএৰাঁক হেতু স্মাৰিকা "দূৰাক্ষত" কেৰ প্ৰকাশন হেতু অনেকানেক শুভকামনা সংপ্ৰেষিত কৰৈত ছী।

विजय चन्द्र झा

अध्यक्ष, अ.भा.मि.सं.



ডা জানি হমৰা অত্যন্ত হৰ্ষ ভ ৰহল অছি জে দূৰাঞ্চল মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান কোৱিত ১৯ এহুন ৰিকট পৰিস্থিতিক ৰাঁৰজুদ মিথিলাক্ষৰ লিপিক সংৰক্ষন হেতু দেশ বিদেশ মে আঁননাধান ও আঁথলাধান কুাস ন' মিথিলাক্ষৰ লিপি অনুৰাগী লোকিন কেঁ একত্ৰ কৰৰাঁক লেল জোৰ শোৰ সঁ লাগল অছি।

জে মিথিলা অদৌঁ সঁ অপন জ্ঞান আ সংস্কৃতি সঁ অপন পহিচান ৰঁনৌনে অছি, ওহী মিথিলাক লিপি মিথিলাক্ষৰ কেৰ সংৰক্ষন হেতু 'দূৰাঞ্চল' দ্বাৰা কাৰ্য একটা সাৰ্থক ডেগ হোএত।

হম, দূৰাঞ্চল মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান কেৰ সমস্ত কাৰ্যকৰ্তাক সৰাহুনীয় প্ৰয়াসক প্ৰশংসা কৰৈত ছী আৰ অপন পহিল ৰাষ্ট্ৰিকোসেৰক স্বঅৰসৰ স্মৰনীয় ৰঁনএৰাঁক হেতু স্মাৰিকা "দূৰাঞ্চল" কেৰ প্ৰকাশন হেতু অনেকানেক শুভকামনা সংপ্ৰেষিত কৰৈত ছী।

विद्यानंद ठाकुर

Dr. Shefalika Verma, M.A., Ph.D.

Sahitya Akademi Awardee
Retd. H.O.D. (Hindi), SNSRKS College, Saharsa
Member-Governing Body & Executive Committee, Maithili-Bhojpuri Akademi, Govt. of Delhi (NCR)

Residence:
A-103 (Shefali–Lalan Homes), Signature View Apartments, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi -110009

email: shefalika1943@gmail.com

Ref.....



Date 29.12.2020

शुभकामना सन्देश

मिथिला मैथिलीक लिपिक इतिहास बड्ड प्राचीन अछि। एक समय छल जखन एहि लिपिक बहुत्व महत्व छल सब जनैत छल जे मैथिली भाषाक अप्पन लिपि अछि जकरा मिथिलाक्षर कहल जायत अछि, एकरा केओ तिरहुता लिपि सेहो कहैत छथि। स्यात ब्राह्मी लिपि जकाँ एहि विदेह लिपिक विकास सेहो वैदिक युग मे भेल होयत। एक समय छल जखन मिथिलाक्षर के प्रचलन बड्ड व्यापक स्तर पर छल। बीच मे जमाना बदलल समयक अनुसार विस्मृति में चलि गेल छल। मुदा, हर्षक गप्प जे आय फेर मिथिलाक्षर अपन स्थान बनओने जा रहल अछि। दुर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान संस्था बड्ड जोर शोर सँ देश विदेश मे अपन शिष्य, सहयोगी बनौने जा रहल अछि। ई शुभ संकेत मैथिलीक भविष्य लेल।

एहि सब क्रम में हम सब किछ साहित्यकार एक बेर कबीना मंत्री प्रकाश जावेडकर जी सँ भेंट कर गेल रही, हम हुनका सलाह देने रहि जे परीक्षा सब मे, खास क यूपीएससी, बीपीएससी के परीक्षा सब में दस नम्बर के प्रश्न मैथिली सँ मिथिलाक्षर में अनुवाद करवा लेल राखि दियो। प्रारम्भ एहिना क दियो, तखन देखब आय ने काल्हि लोग मिथिलाक्षर के महत्व अवश्य बुझत।

अशेष मंगलकामना पं कौशल झा जी एवम दुर्वाक्षत संस्था परिवार के जे एहिना देश विदेश में लोकक हृदय मे, मन मष्तिष्क में चेतनाक वर्तिका अक्षुण्ण राखथि। माँ मैथिलीक सेवा करैत रहैथ। साधुवाद

(शेफालिका वर्मा)

Ex-Member: *Sahitya Academy Advisory Board (M)*

Ex-Member : *Editorial Board, Bihar State Text Book Committee, Patna*

Ex-Municipal Commissioner: *Saharsa Municipality (1973–1983), Bihar*

Ex-General Secretary: *International Women Committee, Saharsa, Bihar*

Ex-Member: *Adult Education, Govt. of Bihar*

Ex-Member: *Peace Committee, Govt. of Bihar*

Ex-Member: *Child Welfare Committee, Govt. of Bihar*

Ex-Member: *Hindi Sahitya Parishad, Saharsa, Bihar*

Ex-Member: *Vigilance Committee (Saharsa Judgship), Bihar*

Ex-Member: *Red Cross Committee, Saharsa, Bihar*

Ex-General Secretary: *Saharsa Zila Mahila Samiti, Bihar*

Ex-President: *Women & Child Devt. Under International Maithili Council, Ranchi, Jharkhand*



हम दुर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान के समस्त कार्यकारिणी समिति के आ गुरूजी पंडित कौशल झा जी के हृदयसँ अशेष शुभकामना दैतछी आ प्रसन्ता व्यक्त करैतछीजे अपने लोकन्हि

अपन पहिलस्मारिकाक विमोचन कर जा रहलछी। आशा अछिजेअपनेकएहि प्रयास सँ भारत आ प्रवासी मैथिलसभ के अपन भाषा, अपन लिपि आ अपन संस्कृति के माध्यम सँ एक दोसरा स सेहोजुड़ै के मौका भेटत। हमर इ सौभाग्य अछि कि हम मिथिला कल्चरल सोसाइटी,यू के परिवार के तरफ सँमिथिलाक्षर के रक्षा मे तत्पर दुर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान केर सफलता हेतु अशेष शुभकामना पठारहलछी।

अहाँसभके एक बेर फेर सँ बहुत-बहुत बधाई आ संगहि विश्वास अछि,जे स्मारिका बहुत शोभायमान आ प्रभावकारी होयत।

अपनेक शुभकांक्षी

वंदना कर्ण

डॉ. वंदना कर्ण

अध्यक्ष

मिथिला कल्चरल सोसाइटी, यू के

इंग्लैंड

BIJHAR (SINGAPORE)

A community of Bihar & Jharkhand in Singapore
(UEN No: T06SS0238C)



दिनांक: 06-12-2020

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि दूर्वाक्षत (पंजी) संस्था नई दिल्ली, जो COVID-19 के विकट परिस्थिति मे भी मिथिलाक्षर लिपि के संवर्धन हेतु देश विदेश मे ऑनलाइन और ऑफलाइन क्लास के माध्यम से मिथिलाक्षर लिपि अनुरागी लोगों को मिथिलाक्षर सिखा रही है के द्वारा मिथिलाक्षर प्रवीण सम्मान समारोह - 2020 का आयोजन किया जा रहा है तथा इस सुअवसर को स्मरणीय बनाने के उद्देश्य से एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है जो कि सराहनीय प्रयास है।

मैं, दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान के समस्त कार्यकर्ता के सराहनीय प्रयास की प्रशंसा करता हूँ और "मिथिलाक्षर प्रवीण 2020" तथा प्रकाश्यमान “दूर्वाक्षत" स्मारिका हेतु अपनी अनंत शुभकामनाएँ संप्रेषित करता हूँ।



ध्यान चंद्र झा
(अध्यक्ष, बीझार)

। जय मिथिला ।

। जय मैथिलि ।

विश्व नव मैथिल संघ (पंजी.)



ई जानि हमरा अत्यंत हर्ष भ' रहल अछि जे दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान covid-19 एहन विकट परिस्थितिक बावजूद मिथिलाक्षर लिपिक संवर्धन हेतु देश विदेश मे ऑनलाइन ओ ऑफलाइन क्लास ल' मिथिलाक्षर लिपि अनुरागी लोकिन कें एकत्र करबाक लेल जोर शोर सँ लागल अछि।

जे मिथिला अदौं सँ अपन ज्ञान आ संस्कृति सँ अपन पहिचान बनौने अछि, ओही मिथिलाक लिपि मिथिलाक्षर केर संवर्द्धन हेतु 'दूर्वाक्षत' द्वारा कार्य एकटा सार्थक डेग होएत।

हम, दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान केर समस्त कार्यकर्ताक सराहनीय प्रयासक प्रशंसा करैत छी आर अपन पहिल वार्षिकोत्सवक सुअवसर स्मरणीय बनएबाक हेतु स्मारिका "दूर्वाक्षत" केर प्रकाशन हेतु अनेकानेक शुभकामना संप्रेषित करैत छी ।

। जय मिथिलाक्षर। । जय मिथिला। । जय मैथिलि।

5/12/2020

राजीव कुमार झा

अध्यक्ष - विश्व नव मैथिल संघ

Regd. Head office : 301, Avadh Complex, D - 5, Laxmi Nagar, Delhi - 110 092
Correspondece Add.:L 705, KDP Grand savana,Raj Nagar Ext., Ghaziabad-201017
http://www.vishwanavmaithilsangh.com , email Id: vishwanavmaithilsangh@gmail.com

संपादकीय

महात्मा गांधी कहने छलाह: 'राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा में नहीं बल्कि किसी अन्य भाषा में शिक्षा पाते हैं, वे आत्महत्या करते हैं. इससे उनका जन्मसिद्ध अधिकार छिन जाता है.' एहि कथन कें यादि राखब आजुक परिस्थितिमे विशेष महत्वपूर्ण भ जाइछ। कारण, आइ हमरा सबहक मातृभाषा अर्थात् मैथिली भाषा देशक संविधानमे मान्यता प्राप्त भाषा भ गेलाक बादहु हम सभ ई लिखित संवाद करबाक लेल उधारक लिपि (देवनागरी) प्रयोग क रहल छी। एहि विडंबनाक पाछु अनेकानेक कारण अछि, तकर सविस्तार चर्चा एकटा संक्षिप्त टिप्पणी मे सम्भव नहि अछि मुदा आइ एहि विषय पर चर्चा करैत एकटा सन्तोष सेहो मनमे भ रहल अछि जे अपनेक हाथमे जे स्मारिका अछि, ताहिमे नहि कम त आधा-आधी सामग्री मिथिलाक्षरमे लिखल अछि, सेहो हस्तलिखित।

ई त विदित अछि जे कोनो बोली वा भाषा कोनो लिपिमे लिखलाक बादहु उच्चारणक स्तर पर अपन फराक पहिचान राखि सकैत अछि। तथापि, प्रत्येक भाषाक अपन फराक लिपि हेबाक हेबाक महत्व अछि आ ओहि भाषाक विशिष्ट शब्द सबहक अभिव्यक्ति मे वएह फराक लिपि सबसँ बेशी सफल होइत अछि। लिपि बिसरबाक जे सभसँ पैघ दुष्परिणाम देखार अछि, से अछि भाषाक विशिष्ट शब्द सबहक विलुप्ति। हम सभ देख रहल छी मैथिलीक साहित्यमे हिन्दी वा कहल जाए जे हिन्दीक माध्यमे उर्दू-फारसी एहन विदेशज भाषा सबहक शब्दक प्रयोग बढ़ल चलि जा रहल अछि आ अपन स्थानिक शब्दावली प्रयोगबाह्य भेल जा रहल अछि। एकर मुख्य कारण सभमे एकटा कारण ई अछि जे लिपिक स्तर पर आन भाषा संग बनल मानसिक अनुराग हमरा सभकेँ ओहि भाषाक शब्दावली संग सेहो विशेष अनुरक्त क लैत अछि। रोमन लिपिमे लिखल हिन्दी सेहो एहने दुष्परिणाम द रहल अछि। मातृभाषाक स्थानिक शब्दावलीक ह्रास सँ नहि मात्र भाषा वरन, ओकर विरासत, ओकर शब्द, ओकर अभिव्यक्ति, समाज-पर्यावरण आदिक प्रति चिंतन-दर्शन, सम्पूर्ण ज्ञान परंपरा, आदि सभ एकाएक क्षरण दिश जा लागय छै। दुनिया भरिक उदाहरण अछि, जे समाज तें, अपन मातृभाषा आ एकर लिपिक संरक्षण लेल विशेष प्रयास आवश्यक भ जाइ अछि। पछिला 50 सालमे भारतक लगभग 20 प्रतिशत भाषा अथवा बोली सभ विलुप्त भ गेल अछि। ई क्षरणक क्रम नव भाषा सभकेँ अपना चपेट मे नेने जा रहल अछि। यूनेस्को द्वारा 2010 मे प्रकाशित 'इंटेरक्टिव एटलस' रिपोर्टक अनुसार देशज भाषा सबहक क्षरण मे भारत शीर्ष स्थान पर अछि, ई स्थिति बेहद चिंतनीय अछि। तें, अपन मातृभाषा आ एकर लिपिक संरक्षण लेल विशेष प्रयास आवश्यक भ जाइत अछि।

मैथिली आ मिथिलाक्षरक बात करी त, हाल-फिलहालमे अनेक संस्था सबहक सक्रियता सुखद परिणाम देलक अछि। दिल्ली सँ दरिभंगा धरि अनेक संस्था सभ मैथिल लोकनि कें अपना लिपिक प्रति जागरूक क रहल अछि। 'दूर्वाक्षत' सेहो मिशन मिथिलाक्षर अभियान केर माध्यम सं एहि दिशामे अहर्निश साधनारत अछि आ एकर लौ देश स विदेश धरि प्रज्वलित कएने अछि। एखन 500 सँ बेशी जिज्ञासु लोकनि एहि संस्थाक माध्यम सँ प्रवीण भ चुकल छथि। प्रवीण जिज्ञासु लोकनिक समक्ष सभसँ पैघ चुनौती अछि एहि लिपिक प्रयोग हेतु अवसर आ ओहिमे निरन्तरता। मिथिलाक्षरमे प्रकाशन केर गति आ परिमाणमे बढ़ोतरी सँ एहिमे सहयोग भेट सकैत अछि।

एखन धरि मिथिलाक्षरक अनुकूल कम्प्यूटर वा मोबाइल फॉन्ट हमरा सबहक लग सहजता स उपलब्ध नहि अछि, से मिथिलाक्षरमे प्रकाशनक दिशामे एकटा पैघ बाधा अछि। कम्प्यूटर पर किछ सॉफ्टवेयर विशेष केर मदति सँ किछु किछु प्रयोग त भ रहल मुदा जाधरि यूनिकोड मिथिलाक्षर फॉन्ट विकसित नहि होयत ताधरि एकर प्रचार-प्रसार मे एकटा बाधा त रहत। 'विदेह' सहित किछेक संस्थान किछु किछु पोथी सबहक प्रकाशन मिथिलाक्षरमे करैत आएल अछि, से खुशीक गप अछि।मिथिलाक्षर फॉन्ट पछिला किछु बरखक मध्य बेश चर्चित भेल अछि मुदा एहि दिशामे जतेक प्रगति हेबाक चाही, से नहि भेल, एहि कारण एहि स्मारिकामे हस्तलेख केर अधिकता देखार अछि। हालांकि, ई विवशताक सकारात्मक पक्ष सेहो अछि जे प्रवीण लोकनिकें अपन लिपिक व्यवहार करबाक एकटा नीक अवसर भेटल। स्मारिकाक आवरण सँ ल क अंतिम पन्ना धरि प्रवीण लोकनिक योगदान सँ तैयार भेल अछि। एकर किछु महत्वपूर्ण सामग्री सभ प्रवीण लोकनिक मध्य प्रतियोगिताक माध्यम सँ तय भेल अछि। आवरण चित्र अमेरिकाक शिकागो सँ मनोज कर्ण पठौने छथि, त अंतिम आवरण दरिभंगाक साधना सुनील झा द्वारा बनाओल अछि। स्मारिकाक नाम 'दूर्वाक्षत' मधुबनीक मनीषा झा द्वारा प्रस्तावित कएल अछि आ एकर आवरण पर मुद्रित ध्येय वाक्य दिल्लीक ममता ठाकुर रचलनि अछि। एहि अनुभव सँ उम्मीद कयल जा सकैछ जे आबय बला समय मे मिथिलाक्षर प्रवीण लोकनि अपन एहि नव कौशलक बेशी स बेशी रचनात्मक प्रयोग करबाक उद्यत रहताह। एहि स्मारिकाक प्रस्तुतिमे दूर्वाक्षत सँ सम्बद्ध अनेकानेक कार्यकर्ता लोकनि सहयोग कयलनि, खास क, अंजनी कुमार चौधरी, त्रिपुरारि ठाकुर, शरद कुमार झा आदि सामग्री संचयन आ चयन पर बहुत श्रम कयलनि। लिप्यान्तरण पक्षमे अभियानक निदेशकद्वय शैलेन्द्र झा जी आ सबिता झा सोनी जी सङ्ग पाठशाला मार्गदर्शक कुमुद झा जीक श्रम अतुल्य अछि। ई टीम मिथिलाक्षरक एकटा उज्ज्वल भविष्य केर प्रति आश्वस्त करैत अछि।

स्वाती शाकम्भरी

स्वाती शाकम्भरी

गणेश वंदना

গনেশ ৱংদনা

आउ गजानन हमरा आंगन, रिद्ध सिद्ध के साथ लेने।
আউ গজানন হমৰা আঁগন, ৰিদ্ধ সিদ্ধ কে সাথ লেনে।
मूसक वाहन परम सुहाओन, दुःख दारिद के कात केने ॥आउ॥
মূসক ৱাহন পৰম সুহাওন, দুখ দাৰিদ কে কাত কেনে ॥
विनय विनायक जन मन नायक, लड्डू मोदक हाथ लेने।
ৱিনয় ৱিনায়ক জন মন নায়ক, লড্ডূ মোদক হাথ লেনে।
विघ्न विनाशक शुभ फल दायक, असुरक दल के घात केने ॥
ৱিঘ্ন ৱিনাশক শুভ ফল দায়ক, অসুৰক দল কে ঘাত কেনে ॥
पीत पिताम्बर सुन्दर अम्बर, मुकुट मनोहर माथ धेने।
পীত পিতাম্বৰ সুন্দৰ অম্বৰ, মুকুট মনোহৰ মাথ ধেনে।
वक्र तुंड गज मुंड मनोहर सूप कर्ण प्रतिघात केने ॥
ৱক্ৰ তুঁড গজ মুঁড মনোহৰ সূপ কৰ্ণ প্ৰতিঘাত কেনে ॥
देव वृकोदर षट मुख मोदर शिव शिव परिवारक साथ देने।
দেৱ বৃকোদৰ ষট মুখ মোদৰ শিৱ শিৱ পৰিৱাৰক সাথ দেনে
जग तप सफल भए जाइछ जतय अहाँ छी लात देने ॥
জগ তপ সফল ভএ জাগছ জতয় অহাঁ ছী লাত দেনে ॥

"জয় জাগগত মিথিলা"

रचनाकार सह अनुवाद
ৰচনাকাৰ সহ অনুৱাদ
गौरी शरण झा
গৌৰী শৰণ ঝা
अधिवक्ता
অধিৱক্তা



अध्यक्षक कलम सं



मिथिला-मैथिलीक आदरणीय अनुरागीगण,

जय मिथिला, जय मिथिलाक्षर

समय सतत गतिशील अछि आ समय केर गति संग कोनहुँ व्यक्ति वा संस्थामे सेहो गतिशीलता, परिवर्तनशीलता रहब आवश्यक अछि। अहिना गतिशील 'दूर्वाक्षत - मिशन मिथिलाक्षर अभियान', मिथिला-मैथिली-मैथिल केर सेवामे उपस्थित अछि। दुनिया भरिमे पसरल मैथिलजन के एकठाम एकत्र क ह्वाट्सएप केर माध्यम स मिथिलाक्षर लिपि सिखबैक एकटा नव प्रयत्न क ओकर विकास, संवर्धन आ संरक्षण लेल प्रयास रत अछि।

मात्र तीन महीनामे घर बैसल मिथिलाक्षर सीखल जा सकैत अछि।

कोरोनाकाल एहन दुरुह समयमे सेहो मिशन बहुत सफलता प्राप्त केलक और एकटा विशाल लक्ष्य ल आगू बढे क लेल कृतसंकल्पित अछि।एहि अभियान स सम्बद्ध सब सहयोगी, संरक्षक, कार्यकारिणी, निदेशक, मार्गदर्शक, वरिष्ठ प्रशिक्षक, प्रशिक्षक निःशुल्क आ निःस्वार्थ भाव स हरदम तत्परता संग लागल रहैत छैथ।

यद्यपि तिरहुता वा मिथिलाक्षर एक फराक लिपि अछि, तथापि एकरा आ बंगला लिपिक मध्य किछू समानता तथा किछू स्वर, व्यंजन आ स्वर चिह्नमे समानता अछि लेकिन ओ समरुपता बाहरी मात्र थीक।

मिथिलाक पावन भूमि जनक, याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र, गौतम, विश्वामित्र, मैथिली, गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, भारती, विद्यापति, मंडनमिश्र, लक्ष्मीनाथ गोसाईं प्रभृति महामानवक चरणरज, कर्म, त्याग, तपस्या, संस्कार, विद्वता, अध्यात्म आ आशीष स अनुग्रहित आ अनुप्लावित अछि।हिनकर सबहक सम्प्रेषणक भाषा छल मैथिली आ लिपि छल मिथिलाक्षर (तिरहुता)। परंच वर्तमान सदी आवैत आवैत मैथिल लोकनि अपन देसिल बयना बिसैर रहल छैथ।अपवाद छोरि ओ अपन लिपि (मिथिलाक्षर)मे लिखब बन्द क देला अहि।

फ्रेंच भाषाक महान मनीषी अल्फासे डाडे कहि गेलथि जे कुनू समाज वा राष्ट्र कें यदि गुलाम बनेबाक होय, त हुन्का स हुन्कर लिपि आ भाषा छीन ली। परंच एतय हमरा लोकनिक मामिलामे भाषा आ लिपि छिनल नै अपितु परित्याग कएल गेल वा कएल जा रहल अछि।

एहि टूटल वा जानि क तोरि देल गेल डोरि कें जोरय आ परम्परा कें जीवित करय लेल 'दूर्वाक्षत- मिशन मिथिलाक्षर अभियान' द्वारा मिथिलाक्षर लिपि कें पुनर्प्रतिष्ठित क अखिल धरा पर महान मैथिल मानव समाज कें अनुगामित,अभिप्रेरित आ आह्लादित करबाक अभिलाषा स एहि अकिंचन द्वारा समर्पित अछि आ सहयोगी सबहक संग हम सब भाषानुरागी लेल सदैव सहज आ सुलभ छी आ रहब।

– पं. कौशल झा



निशा चौधरी



मोनिका सिंह

অধ্যক্ষক কলম সঁ

আদৰণীয় মিথিলা মৈথিলীক অনুৰাগীগণ
জয় মিথিলা, জয় মৈথিলী !

সময় সতত গতিশীল অছি আ সময় কেৰ গতি সঁগ কোনহুঁ ব্যক্তি রা সংস্থামে সেহো গতিশীলতা, পৰিৱৰ্তনশীলতা ৰহৰঁ আৱশ্যক অছি। অহিনা গতিশীল 'দূৰীক্ষত-মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিয়ান', মিথিলা-মৈথিলী-মৈথিল কেৰ সেৱামে উপস্থিত অছি। দুনিয়া ভৰি মে পসৰল মৈথিল জন কে এক ঠাম একত্র ক ব্লাট্‌সএপ কেৰ মাধ্যম স মিথিলাক্ষৰ লিপি সিখৰৈঁক একটা নৱ প্রয়ন্‌ক-ওকৰ রিকাস, সংৱৰ্ধন আ সংৰক্ষণ লেল প্রয়াস ৰত অছি।

মাত্র তীন মহীনামে ঘৰ বৈঁসল মিথিলাক্ষৰ সীখল জা সকৈত অছি।

কোৰোনাকাল এহন দুৰুহ সময়মে সেহো মিশন ৰঁহুত সফলতা প্রাপ্ত কেলক ওঁৰ একটা রিশাল লক্ষ্য ল আগূ রঢ়েক লেল — হৃতসংকল্পিত অছি। এহি অভিয়ান স সম্বুদ্ধ সৰঁ সহয়োগী, সংৰক্ষক, কায়কাৰিণী, নিৰ্দেশক, মাৰ্গদৰ্শক, রৰিধঠ প্রশিক্ষক, প্রশিক্ষক, নিঃশ্বল্কে আ নিঃস্বার্থ ভাৱ স হৰদম তপ্‌ৰেতা সঁগ লাগল ৰহৈত ছৈথ।

যদ্যপি তিৰহুতা রা মিথিলাক্ষৰ এক ফৰাক লিপি অছি। তথাপি একৰা আ ৰঁগলা লিপিক মধ্য কিছু সমানতা তথা কিছু স্বৰ, ব্যঞ্জন আ স্বৰ চিহ্নমে সমানতা অছি লেকিন ও সমৰূপতা ৰাঁহৰী মাত্র থীক।

মিথিলাক পারন লূমি জনক, য়াজ্ঞবল্ক্য, অষ্টাবক্র, গৌতম, বিশ্বামিত্র, মৈথিলী, গার্গী, মৈত্রেয়ী, লোপামুদ্রা, ভাৰতী, বিদ্যা-পতি, মণ্ডনমিশ্র, লক্ষ্মীনাথ গোসাঞি প্রভৃতি মহামানবক— চৰণৰজ, কর্ম, ত্যাগ, তপস্যা, সংস্কাৰ, বিদ্বতা, অধ্যায়ে আ আশীষ স সন্বগ্রহিত আ অন্বপূরিত অছি। হিনকৰ সৰঁহক - সম্প্রেষণক ভাষা ছল মৈথিলী আ লিপি ছল মিথিলাক্ষৰ (তিৰহুতা)। পৰংচ বৰ্তমান সদী আৱৈত আৱৈত মৈথিল লোকনি অপন দেসিল বঁয়না বিঁসৈৰ ৰহল ছৈথ। অপরাদ ছোৰি ও অপন লিপি (মিথিলাক্ষৰ) মে লিখৰঁ বন্দ ক দেলা অহি।

ফ্রেঁচ ভাষাক মহান মনীষী অল্ফাসে ডাডে কহি গেলথি জে শত্রু সমাজ রা ৰাষ্ট্র কেঁ যদি গুলাম বঁনেৰাঁক হোয়, ত হুনকা স হুন্কৰ লিপি আ ভাষা ছীন লী! পৰংচ এতয় হমৰা লোকনিক মামিলা মে ভাষা আ লিপি ছিনল নৈ অপিত পৰিত্যাগ কএল গেল রা কএল জা ৰহল অছি।

এহি টূটল রা জানি ক তোৰি দেল গেল ডোৰি কেঁ জোৰয় আ পৰম্পৰা কেঁ জীৱিত কৰয় লেল 'দূৰীক্ষত-মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান' দ্বাৰা মিথিলাক্ষৰ লিপি কেঁ পুনপ্রতিষ্ঠিত ক অখিল ধৰা পৰ মহান মৈথিল মানৱ সমাজ কেঁ অন্বগামিত, অভি-প্রেৰিত আ আহ্লাদিত কৰৰাঁক অভিলাষা স এহি অকিংচন দ্বাৰা সমর্পিত অছি আ সহয়োগী সৰঁহক সঁগ হম সৰঁ ভাষানুৰাগী লেল সদৈৱ সহজ আ সুলভ ছী আ ৰহৰঁ।

পং কৌশল ঝা

शुभ पहर के मुहुर्त में, भरलक एक उड़ान
दूर्वाक्षत के नाम सँ,बनल एकर पहचान।।
गाँवें - गाँव ,शहरे - शहर
सब ठाम एकरे प्रशंसा के लहर।।
सब में देखू एक्के उल्लास
के पैघ ,के छोट,,सब के बनेलक खास।।
चंद गोटे के नींव सँ ,भेल एकर निर्माण
दिनो-दिन बढल जाईया,दूर्वाक्षत के शान।।
एतबे पर नै रुकले भाई, विदेशो में एकरे
पताखा लहराई।।
एक दोसर सँ जोड़ैत कड़ी
खूब बढाबी एकर लड़ी।।
सहयोगी ,सहकर्मी के,, निरंतर योगदान
जाहि सँ गमकैया ,,दूर्वाक्षत के दलान।।
देश विदेश में एकरे उमंग
आऊ लगाबी
दूर्वाक्षत के रंग।।
अर्चना झा(अन्नू)



मनीषा झा

दूर्वाक्षत – मिशन मिथिलाक्षर : एक यात्रा

'दूर्वाक्षत' भारत सरकारक नीति आयोग सं पंजीकृत एकटा गैर-सरकारी संस्था (एनजीओ) अछि । औपचारिक रूपें एकर स्थापना साल 2017 मे भेल छल, ओना एकर बीज 2014 मे ही पडि गेल छल। वर्ष 2018 मे एहि संस्था कें दिल्ली सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त भेल आ 2019 मे भारत सरकारक नीति आयोग मे सेहो संस्था पंजीकृत भेल। संस्था मैथिल समाजक परम्परा सब कें प्रोत्साहित करबाक लेल काज रहल अछि, मुदा एकर सभसं पैघ उद्देश्य अछि मिथिलाक्षरक प्रचार प्रसार जाहि सं प्रत्येक मैथिल कें अपन मायक भाषा आ लिपि मे लिखब पढ़ब आबि जाय। जखन कि भारत सरकार मैथिली भाषा कें आठम अनुसूची मे स्थान द क एकरा गौरवशाली बना देलक अछि, संगहि नव शिक्षा नीति मे प्राथमिक स्तर पर सेहो एकरा प्रोत्साहन देबाक बात अछि तखन किएक नहि एकरा फेर स जन जन तक पहुँचाओल जाए। 'दूर्वाक्षत'क संस्थापक आ अध्यक्ष पं. कौशल झा केर कुशल नेतृत्व मे ई काज भारतक राजधानी दिल्ली सं संचालित भ रहल अछि। 'दूर्वाक्षत' द्वारा वर्ष 2019 मे मैथिली-भोजपुरी आकदमी केर माध्यम सं दिल्ली सरकारक सहयोग सं राजधानी दिल्ली मे 20 ठाम 15 दिनक ग्रीष्मकालीन कार्यशाला सेहो मिथिलाक्षर लिपि सीखबाक लेल लगाओल गेल। जै स एहि लिपिक बहुत प्रचार प्रसार भेल।

मिथिलाक्षर तं मिथिलाक लिपि अछि मुदा मिथिले टा नहि, अपितु भारतक प्रत्येक प्रांतक लोक सब सेहो मिथिलाक्षर लिपि सीखि रहल छथि। संगहि ओ लोकनि ई लिपि सीखा सेहो रहल छथि। आब तं ई मुहिम देशक संग-संग विदेश सेहो पहुँच गेल अछि। विदेश मे बसल मैथिल सब मिथिलाक्षर लिपि सीखबा मे बहुत रुचि ल रहल छथि। एखन धरि 'दूर्वाक्षत' संस्था दर्जन भरि सं बेशी देश मे अपना परचम लहरा चुकल अछि। खास क इंग्लैंड, अमेरिका, सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, सउदी अरब, कनाडा, इटली, कीनिया, जर्मनी, जापान, नेपाल आदि मे बहुत लोक एहि लिपिमे रूचि ल रहल छथि। लंदनक मैथिल समाज मिथिलाक्षर लिपि सीखय आ सिखाबै मे बहुत रुचि देखा रहल अछि । आब त आनो समाजक लोक एहि लिपि मे रूचि लिय लागल छथि।

अभियानक आरम्भ पं. कौशल झा जी अपना संग मात्र दू गोटे सहयोगी, श्री शैलेंद्र झा आ श्रीमती सविता झा 'सोनी' केर सहयोग सं कयलनि। संस्थाक आरम्भ कौशल झा जी अपन निजी खर्च स चलेबाक जिम्मेदारी लेलाह आ एखनो एहि अभियानक प्रति प्रतिबद्ध छथि। एहि लिपिक प्रति आमजन मे अगाध स्नेहक परिणाम थिक जे, आइ मिशन मिथिलाक्षर अभियान संग बहुतो रास डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर आ आन बहुत रास क्षेत्रक विशेषज्ञ सब सम्बद्ध छथि जे दिन राति निस्वार्थ भाव स मातृभाषा मैथिलीक सेवा मे 'दूर्वाक्षत' संस्थाक माध्यम सं निरंतर प्रयत्नशील छथि। एकर परिणामस्वरूप एक अत्यल्पवधि मे सामूहिक प्रयास सं हजार सं बेशी प्रशिक्षु अधिकृत रूपें मिथिलाक्षर प्रवीण भ चुकल छथि।

एखन, जखन विश्व, डिजिटल माध्यमक दिश अग्रसर अछि, तखन एहि सुविधाक प्रयोग प्रोयग अपन मिथिलाक्षर लिपिक प्रशिक्षण आ प्रचार प्रसार लेल केनाय सर्वथा उपयुक्त बुझना गेल। एहि विचारक संग घर बैसल व्हाट्सअपक माध्यम मिथिलाक्षर लिपि सीखेनाय शुरू कएल गेल। 'दूर्वाक्षत' मिशन मिथिलाक्षर अभियान सं सम्बद्ध प्रशिक्षक लोकनि 25-30 प्रशिक्षु लोकनि कें एक व्हाट्सअप ग्रुप बना क प्रतिदिन कक्षा संचालित करैत छथि। एखन 3 मास अवधिक मिथिलाक्षर प्रवीण पाठ्यक्रम 3 व्हाट्सअपक माध्यम सं संचालित भ रहल अछि। प्रतिदिन एक घंटाक अभ्यास मात्र सं एहि लिपि पर अधिकार पाओल जा सकैछ।

एहि अभियानक शुरूआतक खिस्सा सेहो बहुत दिलचस्प अछि। पं. कौशल झा, जे कि अखिल भारतीय मिथिला संघक राष्ट्रीय सचिव सेहो छथि, 2010 मे दिल्ली सं सपरिवार अपन गांव दरभंगा जिला क अलिनगर विधानसभाक ठेंगहा पंचायत गांव गेल छलाह। ओतय एक दिन हुनक पिता स्वर्गीय श्री बसंत लाल झा जी, कौशल जीक पुत्र गिरीश स पूछलखिन उन्यासी आ नवासी कतेक अन्तर होयत छै। संगहि, मिथिलाक्षरक एकटा पोथी पढ़बाक लेल देलखिन्ह। एहि दुनू विषय मे समुचित जबाव नहि देला पर ओ कौशल झा जी केन अपन माटि-पानि आ संस्कृतिक पाठ पढ़वैत कहलखिन्ह जे ट्रिपल एमए वा पीएचडी करब नीक बात छै, मुदा अपन संस्कार-संस्कृति केर मूल स कटि जेनाय ठीक नहि। ताहिक बाद पंडित कौशल झा अपन मिथिलाक एहि प्राचीन लिपि आ भाषा क सीखय आ सिखाबै केर संकल्प लेलाह।

एहि संकल्पक संग ओ सपरिवार दिल्ली एलाक बाद लगातार मिथिलाक्षर सीखैक क प्रयास म दिन राति लागल रहला। ओ कहैत छथि "2014 केर बात अछि, स्वयं प्रतिदिन एक घंटा एहि लिपिक अभ्यास केलौं। एक साल तक सीखबाक बाद सबस पहिने ई लिपि अपन धर्मपत्नी आभा झा कें सिखेलौ। मिथिलाक्षर सीखला सिखेलाक बाद आरो लोक सबकें सिखेबाक संकल्प लेलौं आ सन 2017 मे एकरा निःशुल्क सिखेबाक संबंधी सूचना अपन फेसबुक पर देलों। तखन स आइ धरि लगभग हजारो जिज्ञासु कें ई मिथिलाक्षर लिपि सिखा चुकल छी।"

एवं प्रकारेण "दूर्वाक्षत – मिशन मिथिलाक्षर अभियान" प्रगति पथ पर अग्रसर अछि आ लिपिक प्रचार प्रसार मे अनवरत संलग्न अछि। एकरा देश-विदेश सं भेटैत समर्थन अभियान सं सम्बद्ध लोक सभहक, सम्पूर्ण दूर्वाक्षत परिवारक मनोबल पुष्ट क रहल अछि। मिथिलाक्षरक भविष्य उज्ज्वल बुझा रहल अछि।

শ্রী গণেশায় নমঃ

দূরীক্ষত - মিথিলাক্ষর : এক যাত্রা

'দূরীক্ষত' ভারত সরকার নীতি প্রয়োগ সং পঁজীকৃত একটা গৈর-সরকারী সংস্থা (এনজীও) প্রছি।

ঔপচারিক রূপে একর স্থাপনা সাল ২০১৭ মে ভেল ছল, ওना একর রীঁজ ২০১৪ মে হী পতি গেল ছল। বর্ষ ২০১৫ মে এহি সংস্থা কে দিল্লী সরকার দ্বারা মান্যতা প্রাপ্ত ভেল প্রা ২০১৯ মে ভারত সরকার নীতি প্রয়োগ মে সেন্নে সংস্থা পঁজীকৃত ভেল। সংস্থা মৌথিল সমাজক পরম্পরা অরঁ কে প্রোস্োহিত কররাঁক লেল কাজ ক রহল প্রছি, মুদ্দা একর সভসং পৈঘ উদ্দেশ্য প্রছি মিথিলাক্ষরক প্রচারপ্রসার -ব জাহি সং প্রন্তেক মৌথিল কে স্বপন মায়ক ভাষা প্রা লিপি মে লিখরঁ পড়রঁ প্রারিঁ জায়। হখন কি ভারত সরকার মৌথিলী ভাষা কে প্রাঠম প্রনুসূচী মে স্থান দক একরা গৌরমানী রঁনা দেলক প্রছি, অগহি নর শিক্ষা নীতি মে প্রাথমিক স্তর পর সেন্নে একরা প্রোস্োহন দেরাঁক রাঁত প্রছি তখন কিএক নহি একরা ফের স জন জন তক পহুঁচাওল জাএ। 'দূরীক্ষত'क संस्थापक প্রা প্রধ্যক্ষ পং কৌশল ঝা কের সম্মান নেতৃত্ব মেঁ গ কাজ ভারতক রাজধানী দিল্লী সং সংচালিত ভ রহল প্রছি। 'দূরীক্ষত' দ্বারা বর্ষ ২০১৯ মে মৌথিলী-ভোজপুরী প্রাকাদমী কের মাধ্যম সং দিল্লী সরকার সহযোগ সং রাজধানী দিল্লী মে ২০ টাম ১৩ দিনক গ্রীষ্মকালীন কার্য-শালা সেন্নে মিথিলাক্ষর লিপি সীখরাঁক লেল লগাওল গেল। জে স এহি লিপিক রঁহত প্রচার প্রসার ভেল।

মিথিলাক্ষৰ তঁ মিথিলাক লিপি অছি মুদা মিথিলে টা নহি, অপিত্ত ভাৰতক প্ৰত্যেক প্ৰাংতক লোক সৱঁ সেহো মিথিলাক্ষৰ লিপি সিখ ৰহল। সীখি ৰহল ছথি। সংগহি ও লোকনি ত্ৰা লিপি সীখা সেহো ৰহল ছথি। আৱঁ তঁ ত্ৰা মুহিম দেশক সংগ-সংগ রিদেশ সেহো পহুঁচ গেল অছি। রিদেশ মে রঁসল মৈথিল সৱঁ মিথিলাক্ষৰ লিপি সীখৱাঁ মে রঁহুত ৰুচি ল ৰহল ছথি। এখন ধৰি 'দূৰীক্ষত' সংস্থা দৰ্জন ভৰি সঁ রেঁশী দেশ মে অপন পৰচম লহৰা চুকল অছি। খাসক গংগ্লৈঁড, অমেৰিকা, সিংগাপুৰ, দক্ষিণ অফ্ৰীকা, মাঁৰীশস, সউদী-অৰৱঁ, কনাডা, গটলী, কীনিয়া, জৰ্মনী, জাপান, নেপাল আদি মে রঁহুত লোক এহি লিপিমে ৰুচি ল ৰহল ছথি। লংদনক মৈথিল সমাজ মিথিলাক্ষৰ লিপি সীখয় সা সিখাৱেঁ মে রঁহুত ৰুচি দেখা ৰহল ছথি। আৱঁ ত আনো — সমাজক লোক এহি লিপি মে ৰুচি লেৱঁ লাগল ছথি।

অভিয়ানক আৰম্ভ পং. কৌশল ঝা জী অপনা সংগ মাত্ৰ দু গোটে সহয়োগী, শ্ৰী শৌলেংদ্ৰ ঝা আ শ্ৰীমতী সৰিতা ঝা 'সোনী' কেৰ সহয়োগ সঁ কয়লনি। সংস্থাক আৰম্ভ কৌশল ঝা জী অপন নিজী খৰ্চ স চলেৱাঁক জিম্মেদাৰী লেলাহ আ — এখনো এহি অভিয়ানক প্ৰতি প্ৰতিৱঁদ্ধ ছথি। এহি লিপিক — প্ৰতি আমজন মে অগাধ স্নেহক পৰিণাম থিক জে, আগ মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিয়ান সংগ রঁহুতো ৰাস ডাক্টৰ, গংজীনিয়ৰ, প্ৰোফেসৰ আ আন রঁহুত ৰাস ক্ষেত্ৰক রিশেষজ্ঞ-সৱঁ সম্বঁদ্ধ ছথি।

জে দিন ৰাতি নিস্বাৰ্থ ভাৱ স মাতৃ ভাষা মৈথিলীক সেৱা মে 'দূৰাক্ষত' সংস্থাক মাধ্যম সঁ নিৰংতৰ প্ৰয়ন্শীল ছথি। একৰ পৰিণামস্বৰূপ এক অত্যল্পৰধি মে সামূহিক প্ৰয়াস সঁ হজাৰ সঁ বেঁশী প্ৰশিক্ষু অধিকৃত ৰূপেঁ মিথিলাক্ষৰ প্ৰৱীণ ভ চুকল ছথি।

এখন জখন বিশ্ব, ডিজিটল মাধ্যমক দিশ অগ্ৰসৰ অছি, তখন এহি সুবিধাক প্ৰয়োগ অপন মিথিলাক্ষৰ লিপিক প্ৰশিক্ষণ আ প্ৰচাৰ প্ৰসাৰ লেল কেনায় সৰ্বথা উপযুক্ত চুঁঝনা গেল। এহি বিচাৰক সংগ ঘৰ বৈঁসল ৱ্হাট্‌স অপক মাধ্যম মিথিলাক্ষৰ লিপি সীখেনায় শুৰু কএল গেল। 'দূৰাক্ষত' মিশন-মিথিলাক্ষৰ অভিয়ান সঁ সম্বন্ধ প্ৰশিক্ষক লোকনি ২৫-৩০— প্ৰশিক্ষু লোকনি কে এক ৱ্হাট্‌সঅপ গ্ৰুপ ৰঁনাক প্ৰতিদিন কক্ষা সংচালিত কৰৈত ছথি। এখন ২ মাস অৱধিক মিথিলাক্ষৰপ্ৰৱীণ পাঠ্যক্ৰম ২ ৱ্হাট্‌সঅপক মাধ্যম সঁ সংচালিত ভ ৰহল অছি। প্ৰতিদিন এক ঘঁটাক অভ্যাস মাত্ৰ সঁ এহি লিপি পৰ অধিকাৰ পাওল জা সকৈছ।

এহি অভিয়ানক শুৰুআতক খিস্সা সেহো ৰঁহুত দিলচস্প অছি। পঁ কৌশল ঝা, জে কি অখিল ভাৰতীয় মিথিলা সংঘক ৰাষ্ট্ৰীয় সচিব সেহো ছথি, ২০১০মে দিল্লী সঁ সপৰিৱাৰ অপন গাৱ দৰভংগা জিলাক অলিনগৰ বিধানসভা-ক ঠেংগহা পঁচায়ত গাঁৱ গেল ছলাহ। ওতয় এক দিন হুনক পিতা স্বৰ্গীয় শ্ৰী ৰঁসংত লাল ঝাজী, কৌশল জীকপুত্ৰ গিৰীশ-

স পূছলখিন উন্যাসী আ নরাসী কতেক অন্তৰ হোয়ত ছৈ। সংগহি মিথিলাক্ষৰক একটা পোথী পঢ়ৰাঁক লেল দেলখিন্হ। এহি দ্বন্দ্ব রিষয় মে সম্বচিত জৰাঁৱ নহি দেলা পৰ ও কৌশল ঝাজী কে অপন মাটি-পানি আ সংস্কৃতিক পাঠ পঢ়ৰৈত কহলখিন্হ জে ট্রিপল এমএ রা পীএচডী কৰৱঁ নীক রাঁত ছৈ, মুদা অপন সংস্কাৰ— -সংস্কৃতি কেৰ মূল স কটি জেনায় ঠীক নহি। তাহিক রাঁদ পঁডিত-কৌশল ঝা অপন মিথিলাক এহি প্রাচিন লিপি আ ভাষাক সীখয় আ সিখৱেঁ কেৰ সংকল্প লেলাহ।

এহি সংকল্পক সংগ ও সপৰিৱাৰ দিল্লী এলাক রাঁদ লগাতাৰ মিথিলাক্ষৰ সীখৈক প্রয়াস ম দিন ৰাতি লাগল ৰহলা। ও কহৈত ছথি "২০১৪ কেৰ রাঁত অছি, স্বয়ং— প্রতিদিন এক ঘঁটা এহি লিপিক অভ্যাস কেলৌ। এক সাল তক সীখৱাঁক রাঁদ সৱঁস পহিনে ত্তা লিপি অপন ধর্মপত্নী আভা ঝা কেঁ সিখেলৌ। মিথিলাক্ষৰ সীখলা সিখেলাক রাঁদ আৰো লোক সৱঁকেঁ সিখেৱাঁক সংকল্প লেলৌ আ সন ২০১৭ মে একৰা নিঃশ্বল্কে সিখেৱাঁক সংৱংধী সূচনা অপন ফেসচুঁক পৰ দেলৌ। তখন স আগ ধৰি লগভগ হজাৰো জিজ্ঞাসু কেঁ ত্তা মিথি-লাক্ষৰ লিপি সিখা চুকল ছী।"

এৱং প্রকাৰেণ "দূৰীক্ষত-মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিয়ান" প্রগতি পথ পৰ অগ্রসৰ অছি আ লিপিক প্রচাৰ প্রসাৰ মে অনৱৰত সংলগ্ন অছি। একৰা দেশ রিদেশ সং ভেটৈত সমর্থন অভি-য়ান স সম্বুদ্ধ লোক সৱহক সম্পূর্ণ দূৰীক্ষত পৰিৱাৰক মনো-ৱঁল পুষ্ট ক ৰহল অছি। মিথিলাক্ষৰক ভৱিষ্য উজ্জ্বল চুঁঝা ৰহল অছি।

दूर्वाक्षत केर आधार स्तंभ

संरक्षक

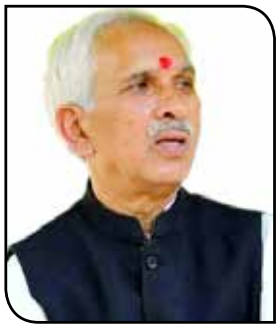

श्री विजय चन्द्र झा



श्री अखिलेश मिश्रा



श्री नीरज पाठक



डॉ. ममता ठाकुर

पदाधिकारीगण



पं. कौशल झा
अध्यक्ष



सविता झा 'सोनी'
महासचिव



शैलेन्द्र झा
कोषाध्यक्ष



बृज मोहन झा
उपाध्यक्ष



नवीन झा
उपाध्यक्ष



साधना सुनिल झा
उपाध्यक्ष



स्वाती शाकम्भरी
सचिव



अरुण कु यादव
सचिव



ॐ कुमार चौधरी
सचिव

कार्यकारिणी सदस्य


प्रो. त्रिपुरारि ठाकुर


श्री प्रवीण झा


श्रीमती आभा झा


श्रीमती ज्योति झा


श्रीमती मधुलता मिश्रा


श्री गुणानंद झा


श्री अमलेन्दू कुमार अस्थाना


श्री शम्भू मिश्र


डॉ प्रणव कुमार


श्री मनोज झा


श्री अरुण पंजियार

विशेष आमंत्रित सदस्य


डॉ. राजीव रंजन दास


डॉ. वंदना कर्ण


डॉ. मिथिलेश कु. झा


श्री रमेश मिश्र


श्री अखिलेश झा


रागासुधा विन्जामुरी


श्री पवन झा


श्रीमती पिंकी झा


श्री प्रवीण मिश्रा


श्रीमती गोपी साह

मार्गदर्शक मंडल



शरद कुमार झा
मार्गदर्शक (ग्लोबल)



मनोज कर्ण
मार्गदर्शक (आईटी)



अंजनी कुमार चौधरी
मार्गदर्शक (सोशल मीडिया)



ऋतेश पाठक
मार्गदर्शक (प्रकाशन)



अर्चना झा अन्नु
मार्गदर्शक (पाठशाला)



कुमुद झा
मार्गदर्शक (पाठशाला)



मधु चौधरी
मार्गदर्शक (पाठशाला)



पूनम झा
मार्गदर्शक (पाठशाला)



कृष्ण कुमार मिश्र
मार्गदर्शक (पाठशाला)

सोशल मीडिया समिति



अंजनी कु. चौधरी
संयोजक



दिव्या चौधरी



चन्दा झा



गिन्नी झा



अंजनी झा



पूनम झा

आईटी समिति



मनोज कर्ण
संयोजक



प्रदीप कर्ण



ओम चौधरी



मधु चौधरी



ममता ठाकुर



मुकेश झा

स्मारिका समिति



ऋतेश पाठक
संयोजक



शैलेन्द्र झा



कुमुद झा



स्वाती शाकम्भरी



अर्चना झा अन्नू



डॉ. चन्द्रशेखर झा

दूर्वाक्षत-मिशन मिथिलाक्षर अभियान (पाठशाला)

पदाधिकारीगण

संस्थापक



पं कौशल झा

निदेशक



शैलेंद्र झा

निदेशक



सबिता झा सोनी

निदेशक



साधना सुनिल झा

निदेशक



आभा झा

वरिष्ठ प्रशिक्षक



डॉ. चन्द्रशेखर झा



जयन्त श्रीवास्तव



संतोष कुमार राम



ममता ठाकुर



दिव्या चौधरी



नंदिता शर्मा



रीना झा



सरिता मिश्रा



अर्चना अरुण झा



गिन्नी झा



किरणलता



अंजू झा



अंजनी झा



रचना मिश्र



भव्या अविनाश

प्रशिक्षक


अशोक ठाकुर


मुकेश कुमार झा


वीणा पाठक


डॉ. कमलेश्वर कुमार झा


रुवि झा


नेहा झा


विजय झा


अनुजा झा


मनीषा झा


सोनी झा


रेणू झा


नरेश झा


सीमा मिश्रा


मोनिका सिंह


नीलम झा


रमेशचन्द्र मिश्र


गीता मिश्र


सुधा ठाकुर


जुली झा


उपेंद्र नाथ झा


लोकेंद्र शर्मा


चाँदनी झा


लक्ष्मी पाठक


अर्चना झा


कल्पना झा



कृष्ण मोहन चौधरी



निमि झा



पुष्पा झा



मुकुंद झा



राखी ठाकुर



शीला झा



राकेश मिश्र



नीरज सिंह



अपर्णा झा



राखी झा



अर्चना झा अन्नू

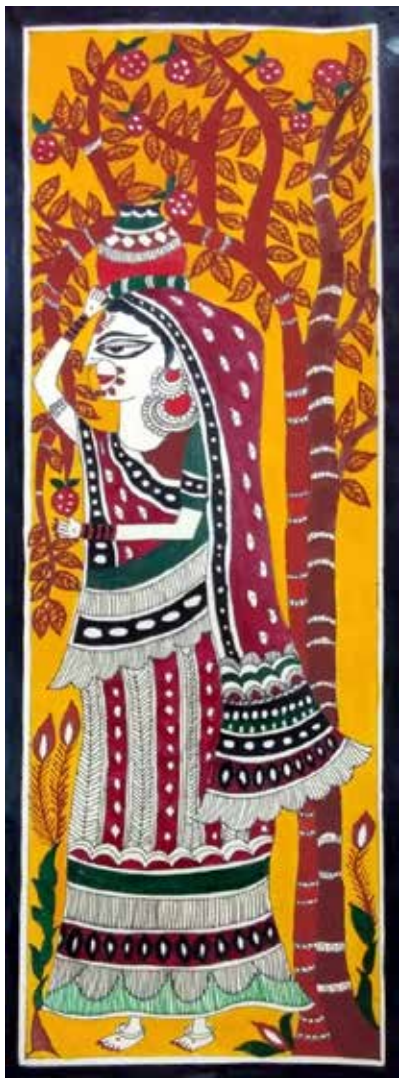

ममता ठाकुर

मिथिलाक्षर प्रवीण : भविष्यक कर्णधार



कुशाग्र कश्यप
9 वर्ष, नरपतगंज



नैना झा
9 वर्ष, ग़ाज़ियाबाद



अमन झा
10 वर्ष, नई दिल्ली



सिद्धि कुमारी
11 वर्ष, मधुबनी



सिद्धार्थ झा
13 वर्ष, न्यू दिल्ली



मुस्कान कुमारी
15 वर्ष, दरभंगा



वर्षा बाफना
15 वर्ष, मधेपुरा



कोपल मिश्रा
10 वर्ष, वाराणसी



प्रियांशु झा
14 वर्ष, दरभंगा



श्रेया श्रेयशी
12 वर्ष, नरपतगंज



सर्वजित मुरली
13 वर्ष, चेन्नई



ध्रुव ज्योति झा
15 वर्ष, कटिहार



जैत्रेया
11 वर्ष, मुंबई



खुशी मिश्रा
10 वर्ष, कोलकाता



श्रीधर झा
10 वर्ष, नई दिल्ली



अनुष्का वत्स
10 वर्ष, मधुबनी



सानू सागर
15 वर्ष, सहरसा



साक्षी प्रिया
14 वर्ष, दरभंगा



जिया कुमारी
13 वर्ष, बेगूसराय



शुभम कुमार झा
14 वर्ष, न्यू दिल्ली



अनन्या पाठक
15 वर्ष, दरभंगा



प्रणिका चौधरी
13 वर्ष, नई दिल्ली



अनुष्का झा
12 वर्ष, लुधियाना



हर्षवर्धन चौधरी
15 वर्ष, नई दिल्ली



अनंत भारद्वाज
10 वर्ष, मधुबनी

मिथिलाक्षर प्रवीण : वरिष्ठ नागरिक



भारती झालते
79 वर्ष, कोलकाता



पार्वती नटराजन
76 वर्ष, मुंबई



भारती झा
76 वर्ष, कोलकाता



महेंद्र झा
72 वर्ष, भोपाल



अशोक कुमार ठाकुर
67 वर्ष, गोड्डा



एस अन्नपूर्णा
61 वर्ष, चेन्नई



जयन्त कुमार श्रीवास्तव
68 वर्ष, समस्तीपुर



सुनील कुमार झा
65 वर्ष, दरभंगा



पं रमेश चन्द्र शर्मा
70 वर्ष, झांसी



मीरा मिश्रा
64 वर्ष, बोकारो



रमेश जी कव
65 वर्ष, जम्मू एंड कश्मीर



विकास झा
58 वर्ष, अहमदाबाद



डॉ. कुमारी सुनीता
61 वर्ष, हैदराबाद



गुणा नन्द झा
62 वर्ष, दुर्ग



वीरेश्वर झा
62 वर्ष, नॉएडा



विजय चन्द्र
58 वर्ष, पटना



रबीन्द्र नारायण चौधरी
58 वर्ष, नई दिल्ली



सत्येन्द्र झा
67 वर्ष, झांसी



राजीव कुमार झा
59 वर्ष, मुंबई



एल एल कर्ण
70 वर्ष, फ़रीदाबाद



उपेंद्र नाथ झा
56 वर्ष, उदयपुर



रंजू कुमारी
56 वर्ष, दरभंगा



संगम झा
56 वर्ष, इंदौर



गणेश झा
64 वर्ष, दरभंगा



जगदीश प्रसाद शर्मा
56 वर्ष, हाथरस

मिथिलाक्षर प्रवीण : ग्लोबल मैथिल



राजीव रंजन दास
65 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



शरद कुमार झा
48 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



अंजनी कुमार चौधरी
37 वर्ष, सिंगापुर



मनोज कर्ण
36 वर्ष, यूएसए



वंदना कर्ण
55 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



अंजनी कुमारी झा
30 वर्ष, नेपाल



चन्द्र कान्त झा
43 वर्ष, नेपाल



सुप्रिया मिश्रा
42 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



मृणालिनी पालन
44 वर्ष, केन्या



गोपी शाह
43 वर्ष, केन्या



नेहा झा
35 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



तनुजा चौधरी
32 वर्ष, सिंगापुर



अंकिता पाठक
37 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



रेखा विवेक मेहता
56 वर्ष, केन्या



कुणाल कुमार
36 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



पवन कुमार झा
55 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



पिंकी कुमारी
43 वर्ष, मॉरीशस



सोनम झा
31 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



चंदा झा
40 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



रंजू दास
50 वर्ष, नेपाल



गुंजन कर्ण
39 वर्ष, यूनाइटेड किंगडम



मोना झा
45 वर्ष, नेपाल



अखिलेश झा
31 वर्ष, दक्षिण अफ्रीका



नीतू कुमारी झा
39 वर्ष, नेपाल



रजत मिश्रा
39 वर्ष, यूएसए



अरुणा मिश्रा
66 वर्ष, नेपाल



प्रवीण कुमार मिश्र
41 वर्ष, सउदी अरब



पूजा चौधरी
30 वर्ष, सिंगापुर



राखी झा
39 वर्ष, यूएसए

मिथिलाक्षर वर्णमाला

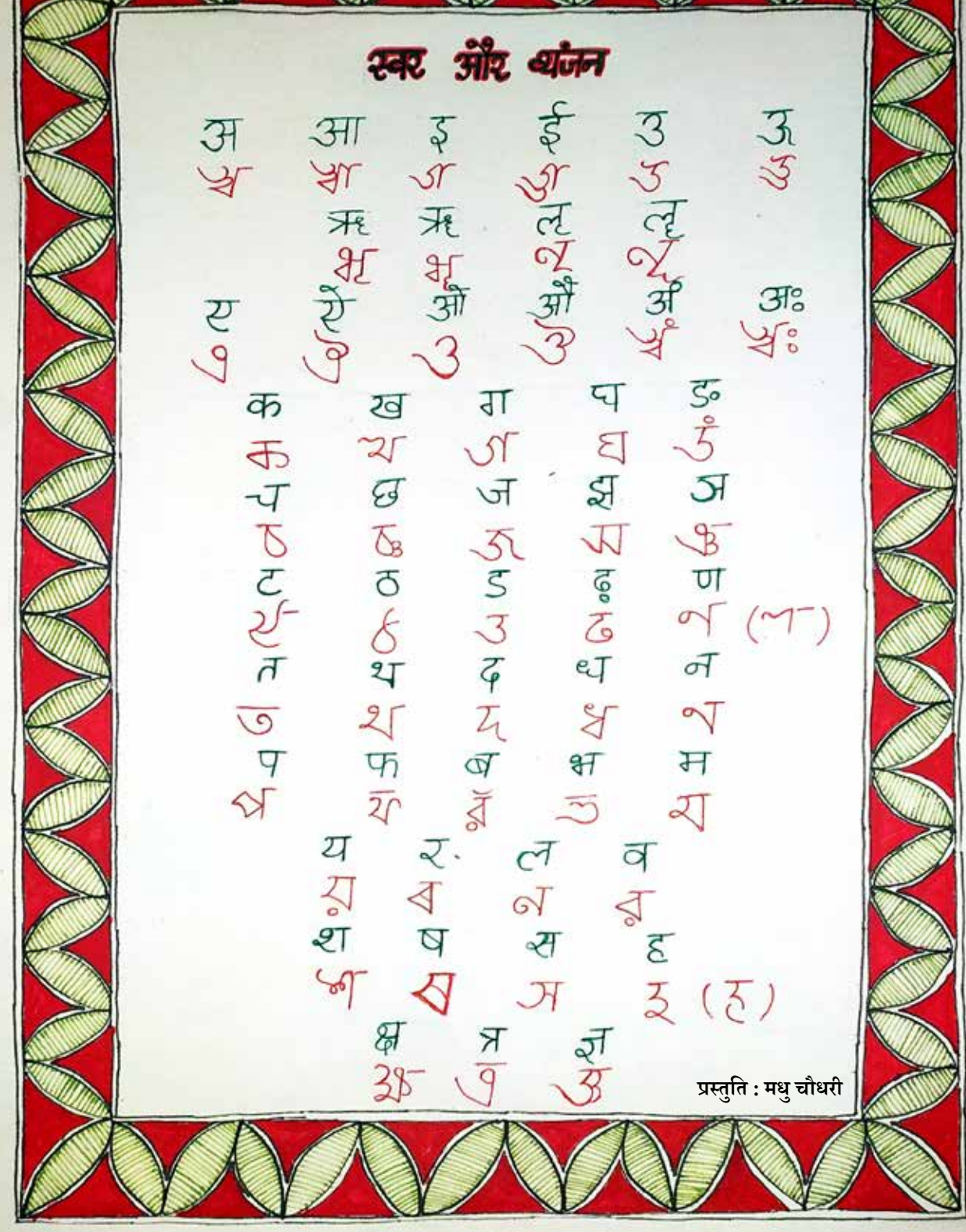

दूर्वाक्षत आ हम

हम मूलतः बिहार राज्य अंतर्गत दरभंगा जिलाक निवासी छी। मिथिला, मैथिली सँ अगाध स्नेह अछि। प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण परिवेशमे भेल जतय मैथिली भाषा सर्वोपरि छल। दसम कक्षा पर्यन्त मैथिली एकटा भाषा रूपें हमर पाठ्यक्रमक हिस्सा रहल। आगाँ चलि क पहिने हिंदी आ तखन अंग्रेजी भाषा सिखाओल गेल। तत्श्चात पंजाब सँ इंजीनियरिंग पढैत काल पंजाबी सिखलौं। कोलकातामे नौकरीक क्रममे बंगाली सिखबामे रुचि भेल। एक तरहें कहु त भिन्न-भिन्न भाषा सँ हमरा बड्ड लगाव रहल, मुदा प्राथमिकता सदैव स्पष्ट रहल : पहिने मैथिली तकर बादे कोनो आन भाषा। गत लगभग पाँच सालमे अमेरिकाक शिकागोमे रहैत जखन कखनो मैथिली बाजय छी, सुनय छी त मोन अप्पन गामक माटि-पानिसं सिक्त बुझाइत अछि।

हम मैथिली लिखब-पढ़ब एखन धरि देवनागरी लिपिमे करैत एलहुं। विद्यालयमे सेहो मैथिली देवनागरी लिपि टामे पढ़ाओल जाय छल। ई ज्ञान रहितो जे मैथिलीक शिक्षा 'मिथिलाक्षर' लिपिमे हेबाक चाही, बचपन सँ ई रंज रहल जे मिथिलाक्षर सिखेनिहार कियो नहि भेटलाह। जेना ज्ञात अछि जे 'दूर्वाक्षत' संस्था व्हाट्सअप्पक माध्यम सँ निःशुल्क मिथिलाक्षर सिखाबय लेल 'मिशन मिथिलाक्षर' नामक एकटा बड्ड पैघ अभियान चला रहल अछि। वैश्विक कोरोना महामारीक समयमे हठात हमरो दूर्वाक्षत सँ जुड़ि क मिथिलाक्षर सिखबाक अवसर भेटल। तीन मासक पाठ्यक्रम पूर्ण भेलाक उपरान्त 'मिथिलाक्षर प्रवीण' प्रमाण-पत्र भेटल। से देखि मोन अत्यंत हर्षित भ उठल।



मिथिला-मैथिलीक उत्थान लेल सदैव तत्पर संस्था दूर्वाक्षतक 'मिशन मिथिलाक्षर'मे आब 'आईटी मार्गदर्शक' आ 'अमेरिका रीजन लीड' रूपें योगदान करबाक सौभाग्य सेहो हमरा भेट रहल अछि। ई संस्था दुनिया भरिमे मिथिलाक्षरक प्रचार प्रसारमे अतुल्य समर्पण सँ चहुँ दिश प्रसंशा पाबि रहल अछि। मैथिली-मिथिलाक्षर आओर आगू बढ़य, ताहि लेल संस्था अपन पहिल स्मारिका छापि रहल अछि। एही शुभ कार्य लेल हम दूर्वाक्षतक सब अधिकारी आ कार्यकर्तागण कें बहुत रास शुभकामना आ अग्रिम बधाइ दैत छी। मिथिला, मैथिली आ मिथिलाक्षर बेशी स बेशी समृद्ध होय, से कामना करैत छी।

जय मिथिला, जय मैथिली, जय मिथिलाक्षर

- मनोज कर्ण
शिकागो, अमेरिका

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान : एक बेहतरीन अनुभव

नमस्ते !

मिथिलाक्षर मञ्च से हमें जोडनेवाला प्लेटफॉर्म शारदालिपि से चालु हुआ। जब हम शारदालिपि सिख रहे थे तब हमें मिथिलाक्षर के बारे में पता चला। हमने हमारे कई मित्रों को भी इसमें जोडा। वोट्सअप के मध्यमसे हमें सिखाया गाया। यह नया अनुभव था। किन्तु धीरे-धीरे हम सब बहुत ही अच्छी तरह से सिखने लगे। यहां के शिक्षक बहोत ही अच्छी तरह से सिखाने लगे। वे सब बहुत ही cooperative हैं। अब मैं मिथिलाक्षर प्रवीण हूं और दूर्वाक्षत परिवार का हिस्सा भी। मैं मृणालिनी पलान दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान का सहृदय आभार प्रकट करती हूं, जिनसे जुड कर हमें 'तिरहुता लिपी' सीखने का अवसर प्राप्त हुआ 'दूर्वाक्षत संस्थान' अपना एक पुस्तक भी निकालने जा रहा है, इस सुअवसर पर हमारी तरफ से 'इस संस्थान' के सभी सदस्योंको हार्दिक शुभकामनाएं संग बधाई।

धन्यवाद
मृणालिनी पलान

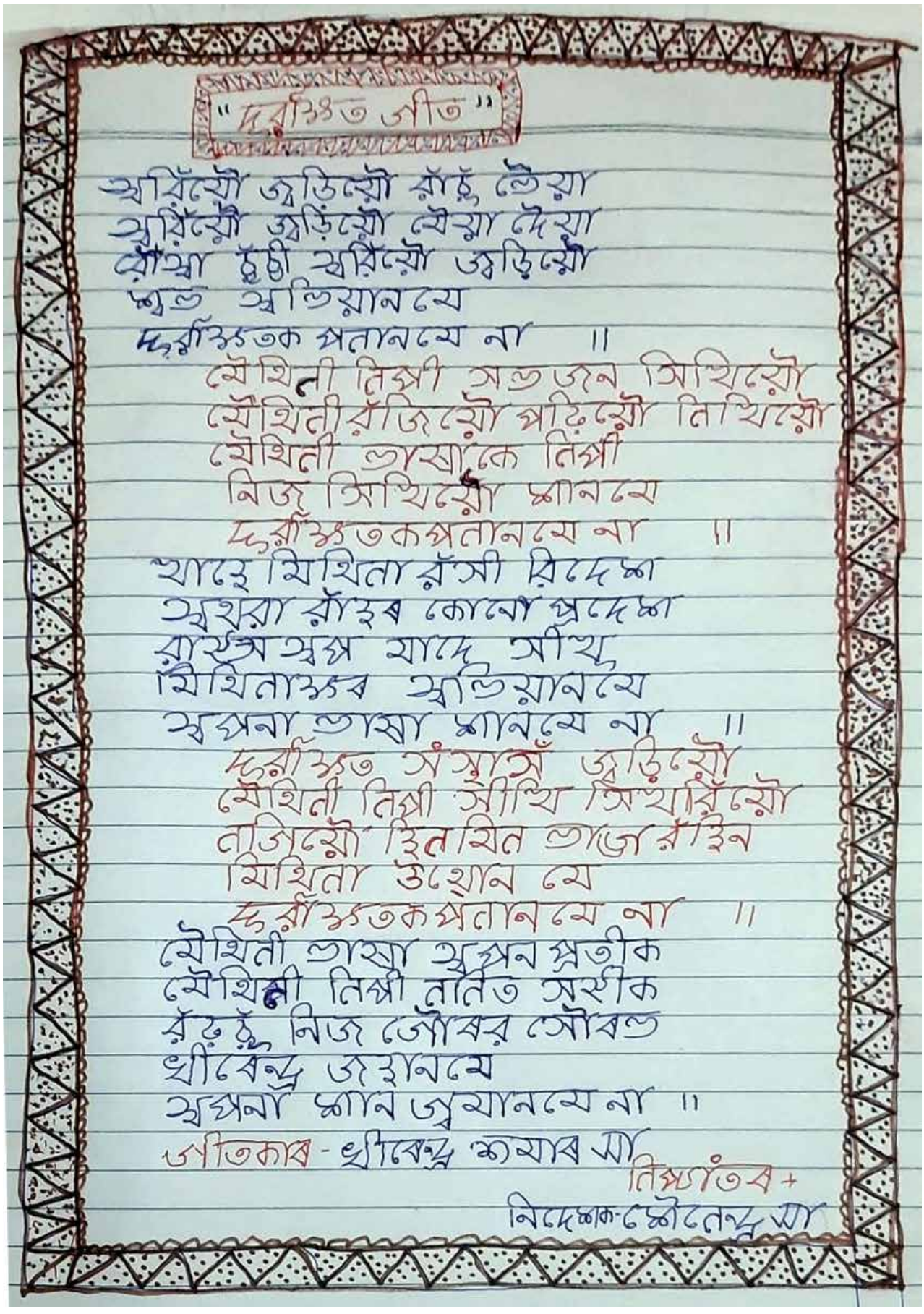

"দুৰ্বাক্ষত গীত"

স্বৰিঁয়ৌ জুড়িয়ৌ ৰাঁচুঁ ভৈয়া
স্বৰিঁয়ৌ জুড়িয়ৌ মৈয়া দৈয়া
ৰৌস্বা চুঁচী স্বৰিঁয়ৌ জুড়িয়ৌ
শুভ স্বভিয়ানমে
দুৰ্বাক্ষতক পনানমে না ॥

মৈথিলী লিপী সভজন সিখিয়ৌ
মৈথিলী ৰঁজিয়ৌ পঢ়িয়ৌ লিখিয়ৌ
মৈথিলী ভাষাকে লিপী
নিজ সিখিয়ৌ শানমে
দুৰ্বাক্ষতকপনানমে না ॥

খাহে মিথিলা ৰঁসী বিদেশ
স্বথৰা ৰাঁহৰ কোনো প্ৰদেশ
ৰাইস স্বপ যাদে সীখু
মিথিলাক্ষৰ স্বভিয়ানমে
স্বপনা ভাষা শানমে না ॥

দুৰ্বাক্ষত সংস্থাসঁ জুড়িয়ৌ
মৈথিলী লিপী সীখি সিখৰিঁয়ৌ
লজিয়ৌ হিলমিল ভাজ ৰঁহিন
মিথিলা উথোন মে
দুৰ্বাক্ষতকপনানমে না ॥

মৈথিলী ভাষা স্বপন প্ৰতীক
মৈথিলী লিপী ললিত সঙ্গীক
ৰঁঢ়চুঁ নিজ জৌৰৰ সৌৰভ
খীৰেন্দ্ৰ জহানমে
স্বপনা শান জ্বমানমে না ॥

গীতকাৰ - খীৰেন্দ্ৰ শমাৰ সা
লিপ্যাঁতৰ +
নিদেশক- শৈলেন্দ্ৰ সা

आजुक नव्यतम पीढ़ी आ मैथिली

✍ डॉ शेफालिका वर्मा

पाँच कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी। अर्थात् परिवर्तन शृंखला सुदूर अतीत सँ आबि रहल आछि। आई वैज्ञानिक क्रांति आ वैचारिक क्रांति सँ समस्त विश्व विकासक बात पर उन्मादित अछि। मानव चान-तारा पर घर बनेवाक कल्पना करए लागल अछि। विचार में, पुरूष तँ की, आई नारियो समस्तशृंखला के तोड़ि अपन अस्तित्वक लेल अपन बाट स्वयं चुनि रहलील अछि। विकासक एहि प्रक्रिया सँ विश्वक कोनो भाषा कोनो साहित्य अप्रभावित नहिं रहल।

अंग्रेजी कैं विश्वभाषा कहल जाइत अछि किन्तु अंग्रेजी भाषा अपना में कतेको रूप, कतेको ध्वनि उच्चारण आदि समाहित कय विश्वभाषा बनबाक प्रयास कऽ रहल अछि। राष्ट्रभाषा हिंदीक परिवर्तित रूप ठामे-ठाम देखाइ पड़ैत अछि-छत्तीसगढ़ी हिन्दी, राजस्थानी हिन्दी लखवी हिन्दी, हरियाणवी आदि-आदि।

राष्ट्रभाषा हिन्दी एहि सम रूप कैं अपना में समाहित केने अछि। तैं राष्ट्रभाषा हिन्दीक विपुल शब्द भंडार छैक। सांच तँ ई अछि जे भाषाक निर्माण प्रक्रिया नीचा सँ ऊपर दिसि होइत अछि। तरह-तरहक बोली सभ मिलि भाषाक विस्तृत व्यापक रूप तैयार भऽ जाइत छैक। आ तैं, भाषा ओहि समस्त लोकभाषाक ध्वनन, उच्चारण संगे मानव-मानव से संपर्क स्थापित करैत अछि।

बौद्धिकता एवं अभिव्यंजना एकर मुख्य पक्ष होइत अछि। विभिन्न प्रकारक शब्द-परक क्रमबद्धता भाषा में सार्वकालिकता एवं निश्चयात्मकताक निर्माण कऽ दैत छैक। कोनो भाषा के भाषा बना दैत छैक। कोनो भाषाक व्यापकताक लेल रचनागत आ स्वभावगत विशेषता आवश्यक छैक। आजुक साहित्याकार कैं भाषा के पराधीनता सँ मुक्त हएब आवश्यक अछि।

आन भाषा तँ दूर, हम मात्र एकटा मैथिली भाषाक लेल कहए चाहैत छी। मैथिलीक इतिहास में जखन मिथिलाक क्षेत्र नक्शा में देखाओल जाइत अछि, तँ मुजफ्फरपुर, सहरसा, पुर्णियाँ, कटिहार, भागलपुर सँ लऽ कऽ दरभंगा, मधुबनी समस्तीपुर आदि कैं सेहो देखाओल जाइत अछि।

जानल बात छैक जे सभ ठामक बोली उच्चारण ध्वनन में भिन्नता छैक। दरभंगा, मधुबनी सँ 'भ गेलैक', चलि गेहाल' आदि बाजल जाइत अछि जखन कि सहरसा पूर्णिया दिसि 'भए गेलै', 'चिल गेलखिन' आदि उच्चारणक संग मैथिली बाजल जाइत अछि। समस्त क्षेत्र मैथिली भाषी रहितो अपना कैं मैथिली नहिं बुझैत छथि। कारण जे 'भऽ गेलैक' छोड़ि, आन कोनो उच्चारण कैं मोजर नहिं देल जाइत छैक। यदि सहरसा आदि क्षेत्र में 'भऽ गैलक' आदि उच्चारण ध्वननक संग गप कयल जायत तँ ओहि क्षेत्रक जनमानस अनचिन्हार जकाँ ताकए लागत- "आई की भऽ गैलेक मालिक कैं जे एना बाजि रहल छथि?" केओ संगी बाजत, तँ लगले उत्तरों देत, 'ई मनता कथी कैं? नाटक करै छें तों?" आई एहि सभ कारणे एक दिसि बज्जिका जनम लऽ लेलक। दोसर दिसि, अंगिकाक आविर्भाव भऽ गेल। कोनो आश्चर्य नहिं होयत जे एक दिन सहरसा दिसि कोनो आन भाषाक जन्म भऽ जाय आ समस्तीपुर दिसि किछु आर।

मैथिलीक अंग-भंग होयत रहत। समाकलीनता कैं रूपायित करबाक हेतु संवेदनाक संगे सामाजिक सहभागिता आवश्यक छैक। आजुक रचनाकार समाजक घटना प्रक्रिया सँ स्वयं गुजरैते छथि। समस्त सामाजिक व्यवस्था-अव्यवस्था कैं अपन शब्द दैत छथि। एक दिसि आजुक साहित्य कैं चिन्ता आ उन्मादक युग कहल जाइत अछि तँ दोसर दिसि नव आशाक नवल विहान बुझल जाइत छैक। मानवक सामाजिक सांस्कृतिक आयाम अंतर्राष्ट्रीय पारंसपारिकताक कारण बेसी संवेदनशील भऽ गेल अछि। समाज में परसल विशृंखलता, अराजकता, बेकारी, महंगी सँ मानव टूटि रहल अछि आ कथा-कविता में छिरिया जाइत अछि, इएह भाव सभ। किन्तु, एहि सबहक उपरान्तो आजुक रचना सोझ-सपाट रस्ता जकां रचनाकार सँ रचनाकार धरि पहुंचैत अछि। जे रचनाकार पात्र छथि, हुनका सँ रचना कोसों दूर अछि। तैं आइ कृषक, बोनिहार अपन अधिकार, अपन स्थितिक आकलन नहिं कऽ पबैत छथि, दहेजक आगि में सासु-ससुर लग ओ कथा नहिं पहुंचि पबैत अछि। कथाक धारा उपरे-ऊपर बहि जाइत अछि। एकर एक कारण भाषाक संप्रेषणीयता सेहो अछि। मैथिली भाषा में बेसीतर शब्दक संग ह्रस्व इकार केर व्यवहार होइत अछि जे शब्दक अर्थ बुझवा में कष्ट भ जायत छैक मैथिली भाषा में आई उत्कृष्ट रचनाक सृजन भऽ रहल अछि जकरा विश्व में कतेको ठाम स्थान भेटल अछि। पुस्तक छपैत अछि किन्तु पाठक नहिं छथि। पढ़ऽ वला केओ नहिं। हम सभ जनैत छी एकर किंतु स्वीकारए नहिं चाहैत छी। हम एकर दुई कारण मुख्य बुझैत छी। कोनो भाषा में पुस्तक कीनि के पढ़वाक हिस्सक नहिं अछि; मैथिली में तँ एकदम्मे नहिं जखन स्वयं रचनाकार में ई हिस्सक नहिं अछि, किछु सरकारक भरोसे, किछु एकदमीसहभक भरोसे आ विश्वविद्यालय तँ तदलगत राजनीति में फंसल। कहल जाइत अछि "चैरिटी बिगिन्स एट होम।" यदि रचनाकार एक दोसरक पुस्तक कीनिक पढ़ैथ तँ आन लोक लज्यापक्षे स्वयं कीनए लगताह। पाठकक अभाव सेहो एकटा पैघ कारण थिक। भाषाक क्लिष्टता, संश्लिष्टता, पारंपरिकता कोनो रचनाक पढ़वा में बाधक भऽ जाइत अछि। आजुक युवा न्यूक्लियर

एज में सांस लऽ रहल अछि; पाश्चात्यक रंग में अपन विकासक मार्ग खोजि रहल अछि। एहेन समय में, यदि ओ मैथिलीक कोनो उत्कृष्ट रचना के मनोयोग सँ पढ़ए लगैत छथि तँ बीच में बाधक भ जाइत छैक भाषाक रूढ़िवादिता "मुदा" शब्द कैँ "किन्तु" पियौज कैँ "प्याज", "पाइन" कैँ "पानी" बुझवा में पाठक केर कंठक पाइन सूखि जाइत अछि। रचनाक प्रवाह में डूबल मोनक अचक्के रसभंग भऽ जाइत अछि। आजुक पाठकक संग समय कतए जे भाषा के बुझवा में अपन समय नष्ट करैथ! यदि तत्सम शब्दक प्रयोग मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा में होय तँ की हर्ज अछि? संस्कृत देवभाषा थिक, सभ भाषाक जननी। विकासक एहि प्रयोग में जे आगु नहिं बढ़ैत छथि ओ ठामक ठामे रहिएत जाइत अछि चाहे ओ राष्ट्र हो, समाज हो आ कि व्यक्ति।

जमाना कतए सँऽ कतए चलि जाइत अछि मुदा जो अपन ठाठ नेने असगर रहि जाइत अछि। एकर संगे एकटा प्रश्न आर ठाड़ भऽ जाइत अछि। एक दिसि हम अपन पारंपरिक भाषा के पकड़ने छी, खुट्टा में बन्हने छी; दोसर दिसि,अपन लिपि तिरहुता रिहतो हम देवनागरी लिपिक प्रयोग करैत छी। प्रश्न अछि ढेर। ढेर प्रश्न अछि। कते ठाम यदि तत्सम शब्दक प्रयोगों होइत अछि तँ ओकरा 'हिन्दीआइन' कहि नकराल जाइत अछि। किएक तँ आजुक रचनाकार स्वयं आलोचकों छथि। आय रचनाकारक दायित्व अछि मैथिलीक पाठक वर्ग तैयार केनाय आ पुस्तक बिक्रीक उपाय सोचनाय।

वेदना-संवेदना प्रतिभाक प्राण थिक। संघर्ष जतवे तीव्र, प्रतिभा ओतवे तीक्ष्ण आ तैं सृजन श्रेष्ठ होइत अछि। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास,होमर, दाँते, शेक्सपियर, तुलसी, सूर, कबीर आदि एकर अनुपम उदाहरण छथि। कालिदास आ भवभूति कैँ अपन पर्वूवर्ती कवि सभ सँ भय होइत छल। 'कुमारसंभवम्' लिखि कालिदास कैँ अपमानक सामना करए पड़लैन तँ 'मालविकाग्निमित्र' में उएह लिखलनि, 'जे पुरान अछि उएह नीक। जे नव ओ काव्य नहिं।' जे विद्वान छथि ओ कोनो रचनाक नीक आ बेजाय पर विचार करैत छथि। भवभूति कैँ 'उत्तर-रामचरितक' सृजन करवाक उपरान्त कतेक व्यंगबाण सएह पड़लनि मुदा भवभूति कहलनि, "कालोहुहं निखधिर्विपुला च पृथ्वी" बात नवका-पुरानक नहिं होइत अछि बात थीक चिरंतन सत्यक! एहि शाश्वत सत्यकैँ उजागर करबा लेल, अर्वाचीन युग में लोकप्रिय एवं संप्रेषणीय बनेवा में भाषाक भंडार कैँ नव-नव शब्द सँ सम्पन्न भेनाय आवश्यक अछि। समयक संग चलबाक रचनाकारक दायित्व भऽ जाइत छैक।

साहित्य धारा युगक अतिक्रमण करैत बहैत अछि। एकर उपरान्तो, ओकर रचना सभ कोनो युग विशेषक होइत अछि जे अपना समयक समस्या संवेदना लेल उत्प्रेरक सेहो रहैत अछि। रचनाकारक दायित्वबोधक मूल समस्या काल गति सँ उत्पन्न होइत अछि। साँच तँ ई अछि जे साहित्यक रचना सभ समयसाध्य रहल आ आस्वादन प्रक्रिया सेहो।

A, 103, सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट्स
डॉ मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
मो 9311661847

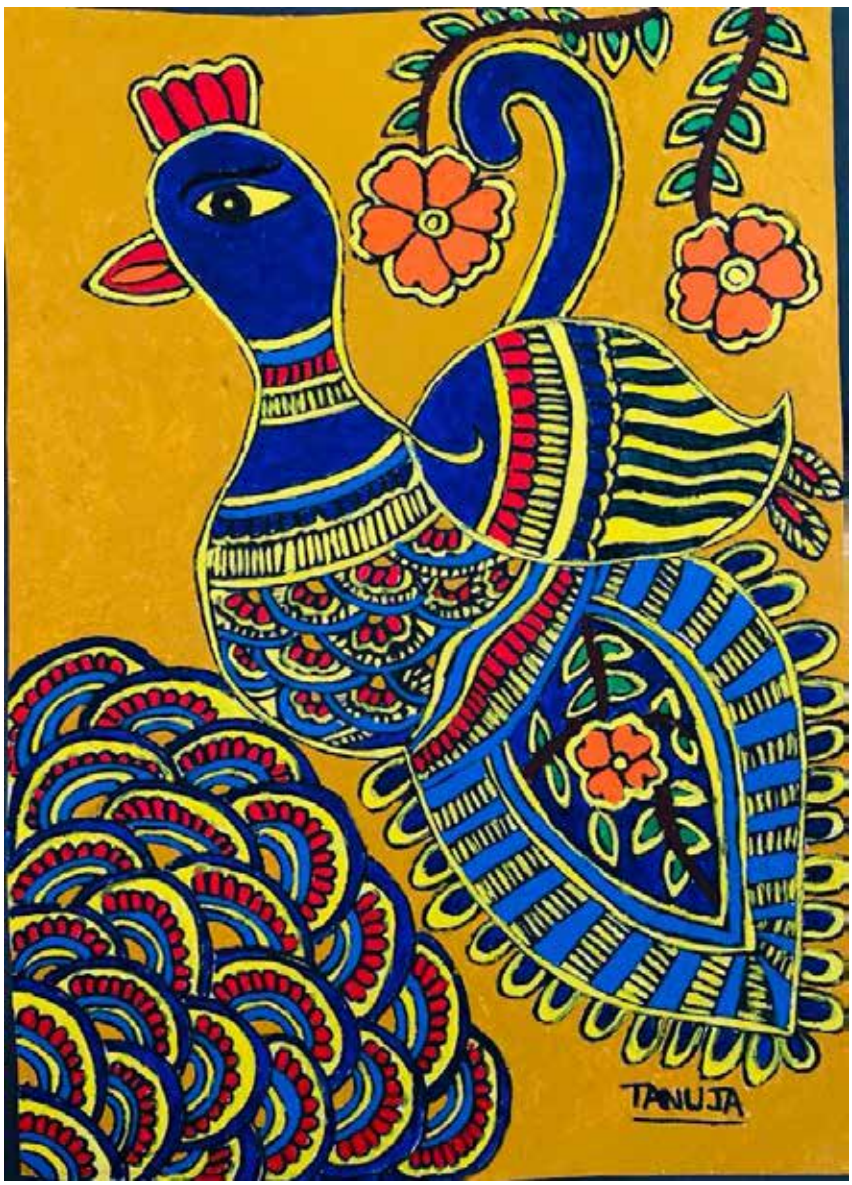

पेंटिंग - तनुजा चौधरी

नारीक सम्मान आ प्रेम आदिवासी समाज सँ ग्रहण क' सकैत छी

✍ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

हमर पिता ताइदिनक छोटानागपुर आ अजुका झारखण्डमे खादी भंडारमे नोकरी करैत छलाह। आदिवासी सब लेल किछु ने किछु योजना चलबैत रहैत छलाह। हुनका संगे हम नेने सँ रहैत रही। शुरूमे पिताजी लोहरदगा, घाघरा, सिमडेगा आदि क्षेत्र मे रहथि जतय कुल जनसंख्या केर बहुत पैघ भाग आदिवासी सबहक रहैक। सेन्हा मे किछु बनिया, तेली, राजपूत, ब्राह्मण, कुरमी, लोहार, आ मुसलमान सेहो रहैक। आदिवासीमे मूल रूप सँ ओरांव (उरांव सेहो कहि सकैत छी) आ मुन्डा लोकक जनसंख्या रहैक। दुनू आदिवासी अपन भाषा ओरांव आ मुण्डारी बजैत छलैक। दुनूकेँ भाषा आ वेष भिन्न। सामान्य लोक ओकर सबहक भाषा नहि बुझि पबैक। स्थानीय लोक सब एक दोसर सँ या एक आदिवासी केँ लोक दोसर आदिवासी समुदाय केर लोक सँ जे भाषा अर्थात लिंक भाषा मे बात करैक तकर नाम रहैक सादरी। सादरी सब बुझैक। आई काल्हि सादरी भाषा झारखंड मे प्रचलित लोकभाषा केँ स्थान ल' लेने अछि। एकर चढाई सेहो बहुत ठाम स्कूल, कॉलेज सब मे शुरू भ' गेल छैक। आब एकरा खोरठा भाषा कहल जाइत छैक। एहि मे नाना तरहक साहित्य केर रचना लोक क' रहल छथि। अनेक पोथी, पत्रिका, स्मारिका आदि छपैत रहैत छैक।

आदिवासी समाज केर लोक निश्छल होइत छल। एखनो ओ निश्छलता ओकर चेहरा पर परिलक्षित होइत रहैत छैक। एक बात आरो जे एहि समाजक लोक केँ होइत छैक जे ओकर सभक निश्छलता, सहजता आ प्रकृति प्रेम केँ देखबैत छैक ओ ई जे आदिवासी लड़का लड़की स्नान मुक्त आकाश मे करैत अछि। ककरो प्रति ककरो कुनो कुप्रबृत्ति नहि भेटि सकैत अछि। प्रेम त' प्रकृति केर गहना छैक। प्रेम आदिवासी युवक आ युवती मे सेहो होइत छैक आ खूब होइत छैक। होबाको चाही। मुदा प्रेम मे घृणा आ दोसरक मर्यादाक हननक भाव सर्वथा नहि रहैत छैक। कतेक आदिवासी लड़की जकर अवस्था 17-25 वर्षक रहैत छलैक से सब अपन वक्ष केँ केवल एक पतरका लाल गमछा सँ झपने नहाईत छलि। निर्विकार भाव- ने डर ने भय। निर्भय। ककरो कुदृष्टि ओकर अंग, यौवन पर कोनो दोसर भाव सँ नहि जाइत छलैक।

आदिवासी युवतीक शरीर गसल-गसल, चमकैत केश, शायद करंजक तेल केर व्यवहार आ प्रकृति सँग रहबाक कारणे गजबक झमटगर आ खूब कारी। घरो पर कुमारि कन्या सब निचा मे स्कर्ट अथवा छोट सन नुआ पहिरने आ अपन सुन्दर, सुडौल वक्ष केँ मात्र पातर सन आधा ट्रांसपरेंट ललका गमछा सँ झपने सब काज करैत। निर्विकार भाव आ ओकर चेहराक भाव जे देखत ओकरा ओकर भाव मे अद्भुत सौन्दर्य आ सौन्दर्यशास्त्री केँ ओहि मे सकुन्तलाक साक्षात् स्वरुप भेट सकैत छलैक। छोट-छोट आँखि, कारी मुदा भरल-भरल देह, दाड़िम सन गसल आ दूध जकाँ चकमक करैत दाँत, विकसित नितम्ब एक आदिवासी नायिका केँ विश्व सुन्दरी बना दैत छैक। ओ बाला मतबाला सभक मोन मे बैस जाइत अछि। बाला अपन प्राकृतिक सुंदरता सँ लबालब भरल बनबाला बनि जाइत अछि। ककर मोन भला एक क्षण लेल ओहि बनबाला केँ अपन बाहुपाश मे लेबाक नहि करतैक? लेकिन तमाम प्रक्रिया मे निश्छल सौन्दर्य छैक, विकृति अथवा आन बात नहि। ओहि आनंद केर अनुभूति आ दर्शन करबाक हेतु सौन्दर्य केर ज्ञान भेनाई आ ओकर दर्शन केर आनंद लेबक कला मे महारथी भेनाई परमावश्यक।

हमरा लेल जनजातीय जीवन आ परंपरा केर गाइड छल हमर स्कूल केर सङ्गी-साथी जाहि मे अधिकांश आदिवासी लड़का लड़की छल। आदिवासी सब बाल-विवाह नहि करैत अछि। कोनो लडकीक विवाह 20 वर्ष सँ पहिने नहि होइत छैक। एक बात आरो, आदिवासी समाज केर माता पिता प्रेमक मामला मे कनि नहि बल्कि बहुत अधिक उदार होइत छथि। हुनका लड़का लडकी केँ आपसी प्रेम मे कोनो बड्ड आपत्ति नहि होइत छनि। अगर कोनो लड़की कोनो लड़का सँ प्रेम करैत अछि प्रेमाधिक्य मे किछु एहनो-ओहनो भ' जाइत छैक तकर बादो अगर कोनो कारणे दुनू केँ लगैत छैक जे एक संगे जीवन संभव नहि अछि त' दुनू सहजता सँ ओहि बन्धन सँ मुक्त भ' सकैत अछि। ओहि लड़की केँ अथवा लड़का केँ मिथिला समाज जकाँ चरित्रहिन नहि बुझल जाइत छैक। ओ केहनो लड़का सँ विवाह क' सकैत अछि। विवाह मे कोनो वाधा नहि होइत छैक। माता पिता सेहो एहि बात केँ सहजता सँ स्वीकार क' लैत छथि। काश! अपना आपके विकसित, ज्ञानी, पैघ आ सर्वश्रेष्ट कहएबला मैथिल समाज एहि लघु समाज सँ प्रेमक आ स्वतंत्रता केर परिभाषा सीख लितथि???

एक बेर एक आदिवासी लड़का जे प्रखंड विकास पदाधिकारी रहैक केर विवाह ठीक भेलैक। हमर पिता पुछलथिन, "की सब भेटल सासुर सँ?"

ओ आदमी कनि असहज होइत बजला, "की भेटत, सब सँ पैघ बात ई जे एक लड़की भेटल। ओ हमर पदनाम, मूल,

गोत्र सब स्वीकारि लेलनि। एक आर्थिक, सामाजिक आ आनुवंशिकता कैँ बढ़बय बाली आबि गेलीह अहि सँ नीक कथी भ' सकैत अछि ?"

हमर पिता आदिवासी समाज कैँ एहि बात जानि बहुत आश्चर्यचकित भेलाह। जखन हमर पिता सँ ओहि व्यक्ति कैँ ई ज्ञात भेलैक जे अपना अर्थात मैथिल समाजमे लड़की बला लड़का बला कैँ बहुत पाई आ वस्तु दहेज़ कैँ रूप मे दैत छथि त' ओ आश्चर्य आ घृणा केर भाव सँ भरि गेलैक। कारण लड़का बला कैँ अर्थात ओ आदिवासी युवक अपन होमय बाली पत्नी कैँ माता पिता कैँ विवाह सँ पूर्व एक बरद, एक सुगर, एक मोन चाउर देने रहैक।

ओ व्यक्ति हमर पिता कैँ सम्मान दैत बाजल: "केहेन बात कहैत छी! एक त' लड़की अपन घर, समाज, सब नाता छोड़ि कुल कैँ त्यागि लड़का बला लग जिनगी भरि लेल जाइत अछि, आ ऊपर सँ लड़की बला लड़का बला कैँ पाई आ सामान सेहो देतैक? ई कोना संभव छैक? ई केहेन समाज अछि अहाँ सभक?"

हमर एक जनजातीय मित्रानी कहली, "केहेन संस्कार अछि अहाँ समाजक? जे सीता अहाँक मिथिला के छलीह जिनकर हाथ पत्नी कैँ रूप मे ग्रहण करबा लेल के-के नहि पहुचल। साक्षात् विष्णुअर्थात भगवान राम धनुष तोड़ि सीता कैँ अपन पत्नी बनेलनि। ताहि सीता कैँ माता पिता कैँ आई राम अनबाक हेतु पाई आ वस्तु कैँ व्यवस्था करय पड़ैत अछि! ऊपर सँ समाज विकसित अछि ताहि बातक दम्भ?"

आब होइत अछि ओ ठीके त' कहैत छलीह। अतेक शुद्ध मोनक आ उदार होइत अछि आदिवासी सब। छल आ सब कर्म सँ भरल अछि अपन मैथिल समाज। अनेरे सभ्यता आ संस्कृति मे पैघ होमाक दंभ भरैत रहैत अछि। आदिवासी सब कैँ असभ्य, जंगली, अशिक्षित, अविकसित आ ने जानि की-की कहैत अछि? बेटा कैँ विवाह मे जखन निर्लज्ज भेल अपन आ बेटा केर पद, प्रतिष्ठा, शिक्षा आदि कैँ तराजू केर एक पलड़ा मे राखि निरंकुश बनिया जकां तौलैत अछि आ मोल-भाव करैत अछि ताहि काल कत' जाइत छैक मर्यादा?

एक दिन हम आ किछु आरो आदिवासी लड़की-लड़का संगे अगल बगल केर एक गाम मे घुमक हेतु गेल रही। एकाएक एक घर सँ एक महिला के दर्द सँ चिचियेबक अबाज एलेक। हमर पैर झट दनि ठमकि गेल। तुरते एक पुरुख केर आवाज़ सेहो ओहिना एलैक। हमरा भेल जरुर परिवार मे कोनो अनिष्ट भेल छैक। मुदा कानब मे शारीरिक पीड़ा केर भाव बुझा रहल छलैक। एकर बादो अगल-बगल केर स्त्रिगन आ पुरुख मस्त भेल हँसैत आ अपना काज मे भेर। हमरा किछु नहि फुरा रहल छल!

हम एक लड़की सँ जिज्ञासा करैत पूछि देलहुँ: "ई की भ' रहल छैक?" एहि पर एक आदिवासी युवती कहलनि:

"एहि घर मे एक महिला कैँ प्रसव वेदना भ' रहल छैक। थोड़ेक काल मे बच्चा जन्म लतैक तकर निश्चित सम्भावना छैक। ओहि प्रसव पीड़ा सँ ई महिला कानि रहलि छैक।" आश्चर्य व्यक्त करैत हम पुनः जिज्ञासा कएलहुँ: "चलू, ई बात त' स्पष्ट भेल। मुदा महिला संगे पुरुख कथी लेल कानि रहल अछि?" आब ओ आदिवासी बाला बात कैँ फरछाबैत बजलीह, "सुनु, हमरा आदिवासी समाज मे एहेन परंपरा छैक जे पुरुख ई अनुभव करय जे कोना एक स्त्रीगन प्रसव कैँ समय दर्द सँ छटपटाईत छैक, कोना वेदना सहैत छैक? अगर पुरुख कैँ ई अनुभूति शुरू मे भ' जाइक त' ओकर प्रेम दुनू – संतान आ पत्नी – सँ अत्यधिक बढ़ि जेतैक। अहि परंपरा कैँ कुआवाद या सहप्रसविता कहि सकैत छी। एहि मे प्रसव पीड़ा कैँ समय गर्भवती महिला संगे ओकर पति के सेहो दोसर घर में बंद क' देल जाइत छैक। जेना-जेना पत्नी अपन घर सँ कानतैक तहिना-तहिना पति कैँ कनबाक छैक। अहि मे अभिनय नहि यथार्थ होइत छैक। जखन बच्चाक जनम भ' जाइत छैक त' पुरुख कैँ घर सँ बाहर निकालि देल जाइत छैक।"

हमरा भेल, "कतेक निक परंपरा छैक ओहि समाजक जकरा लोक अशिक्षित, असभ्य, जंगली, आ ने जानि कोन-कोन उपहासक बात सँ तुलना करैत तुच्छ बुझैत अछि।" विकास अगर एहेन अछि त' खाक विकसित छी!

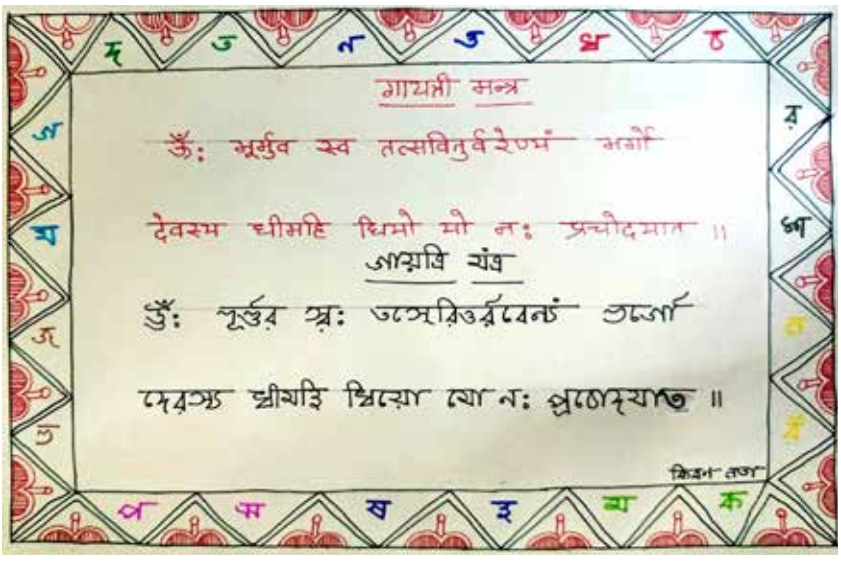

মাঁ সবস্বতী রংদনা

DELTA Pg No.
Date / /

রাজীশ রীনারাদিনী, সদ ছুঁদ্ধি প্রদায়িনী ।
চবন মেঁ শবন দিয়, নমন স্বীকাবিয়ৌ ।।
জ্ঞানধন দীপ্ত করু, উব মেঁ আনংদ ভরু ।
নাশ করু শ ছুঁদ্ধি কে, আজ হমবা তাবিয়ৌ ।।

পাহন পাষান হম, জ্ঞানহীন খাব হম ।
মানস মেঁ জ্ঞান ভরু, চিত্ত কে নিখাবিয়ৌ ।।
জ্ঞানহীন মানহীন, মংত্র-তংত্র সঁ রিহীন ।
রাঁনক নিবীহ মানি, স্নেহাশীষ রাবিয়ৌ ।।

উত্তম রিচাব বহয়, দিচ্য-চ্যরহাব বহয় ।
পুত্র হম অহীক মাঁ, হমবা নে রিঁসাবিয়ৌ ।।
রিনতী কে ধ্যান করু, উব মেঁ মাঁ জ্ঞান ভরু ।
অছুঁদ্ধি প্রদান করু, ভর স পাব উতাবিয়ৌ ।।

চবন কে দাস হম, বহী নে উদাস হম ।
ভক্তি প্রদান করু মাঁ, জীরন সঁরাবিয়ৌ ।।
সরঁহক দুখ দূব করু, অহংকাব হমব চূব করু ।
জ্ঞানরূপ রিমনা মাঁ, হৃদয় মেঁ রি বাজিয়ৌ ।।

=x=

কৈনাশ শমাব সা
৯৯১০৪৬৬১৪১

ॐ

जेनऊ

जेनऊ की थिक

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जेनऊ गुरु पितु माता॥

अहां देखने होएब जे कतको लोक बायां कान्ह सँ दाहिना भुजा के तरफ एक टा सूत लपेटने रहइत छैथ। इहे डोरी के जेनऊ कहल जाइत अइछ। तीन डोरा वाला एक टा ब्रह्मसूत होइत अइछ। जेनऊ के संस्कृत भाषा में यज्ञोपवीत सेहो कहल जाइत अइछ।

जेनउ की थिक

भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जेनउ गुरु पितु माता॥

अहां देखने होएबै जे कतेको लोक बाँया कान्ह सँ दाहिना भुजा के तरफ एक टा सूत लपेटने रहइत छैथ। एहे डोरी के जेनउ कहल जाइत अछ। तीन डोरा वाला एक टा ब्रह्मसूत होइत अछ। जेनउ के संस्कृत भाषा में यज्ञोपवीत सेहो कहल जाइत अछ।

जेनऊ के स्वरूप :-

यज्ञोपवीत में जनेऊ ९६ अंगुरक होइत अइछ, एकर अर्थ ई भेल कि जेनऊ धारण करैं वाला के ६४ कला ३२ विद्या सिखबाक कला अभ्यास करैं के चाही।

जेनउ के स्वरूप :-

यज्ञोपवीत में जेनउ ९६ अंगुरक होइत अछ, एकर अर्थ ई भेल कि जेनउ धारण करै वाला के ६४ कला ३२ विद्या सिखबाक कला अभ्यास करै के चाही।

डॉ० चन्द्रशेखर झा
छतौनी चौक
मोतिहारी
पूर्वी चम्पारण
बिहार
मो- 9470607406

দূর্বাক্ষত বিশ্লেষণ

মিথিলাক্ষর অভিযান

की कही, मोनक बात मोने रहल !! की कही योनक रॉत योने रहल
कतेक जतन सँ मिटिंग बजेलऊँ, कतेक जतन सँ मिटिंग रॅजेलहुँ
सबहक बिचार सुनलऊँ सुनेलऊँ सरॅहक रिॅचार सुनलहुँ सुनेलहुँ
पुरस्कार दिवस के भेल छल पहल पुरस्कार दिवस के भेल छल पहल
की कही मोनक बात मोने रहल !! की कही योनक रॉत योने रहल
मंडी हाउस के बीच बगीचा मंडी हाउस के रीॅच रॅगीचा
सऊंसे दुनी के बिछल गलीचा सऊंसे दुनि के रिॅछल गलीचा
सबमें छल चहल पहल सरॅये छल चहल पहल
की कही मोनक बात मोने रहल !! की कही योनक रॉत योने रहल
गुरुजी के मधुर मुस्कान अरुजी के मधुर मुस्कान
सबके देत छल सम्मान सरॅके देत छल सम्मान
बंटने छलखिन किछु किछु टहल रॅंटने छलखिन किछु किछु टहल
की कहू, मोनक बात मोने रहल की कहू, योनक रॉत योने रहल
ने जानी कोना ई आयल फसाद ने जानी कोना ई-आयल फसाद
सऊंसे दुनिया के केलक तबाह सऊंसे दुनिया के केलक तबाह
कते कहू ने जाईया कहल कते कहू ने जाईया कहल
सब मोनक बात मोने रहल !! सरॅ योनक रॉत, योने रहल .....

अर्चना झा (अन्नू)
अर्चना झा (अन्नू)

।। जय मिथिला - जय मैथिली ।।

मिथिलाक्षर : मात्र एक लिपि नहि

মিথিলাক্ষৰ : মাত্ৰ এক লিপি নহি

मिथिलाक्षर वा तिरहुता, नाम सुनितहि जेना एकटा आत्मीय जुड़ाव केर अनुभूति होइछ। जतय एकर इतिहास गौरवान्वित करय वला अछि, ओतहि एकर वर्तमान स्थिति हतोत्साहित क' रहल अछि।

মিথিলাক্ষৰ বা তিৰহুতা, নাম শুনিতহি জেনা একঠা আত্মীয় জুড়াব কেৰ অনুভূতি হোজবু। জতয় একৰ ইতিহাস গৌৰৱান্বিত কৰয় বলা অছি, ওতহি একৰ বৰ্তমান স্থিতি হতোৎসাহিত ক' ৰহল অছি।

भाषा आ' लिपि, समाज कें जोड़ि कए राखक लेल एकटा अहम कड़ी होइछ, ताहि मे कोनो संशय नहि। अपनहि देश मे अनेकानेक उदाहरण भरल पड़ल अछि जतय समाज मे रहनिहार विभिन्न मतावलंबी आ' भिन्न-भिन्न वर्गक लोक, निज भाषा ओ लिपिक माध्यमें आपस मे सशक्त रूपें जुड़ावक अनुभव करैत छथि। एतबे नहि, समय-समय पर जखन कखनहुँ निज भाषा पर आघात पहुँचबाक संशय होइत छनि तऽ आपसी मतांतर के कात करैत दृढ़ता सँ अपन भाषा ओ लिपिक अस्मिता केर रक्षार्थ एकजुटताक प्रदर्शन करैत छथि।

ভাষা আঃ লিপি, সমাজ কেঁ জোড়ি কএ ৰাখক লেল একঠা অহম কড়ী হোজবু, তাহি মে কোনো সংশয় নহি। অপনহি দেশ মে অনেকানেক উদাহৰণ ভৰল পড়ল

অবি জতয় সমাজ মে ৰহনিহাৰ বিভিন্ন মতাৱলংৱী আহ ভিন্ন-ভিন্ন ৱংশক লোক, নিজ ভাষা ও লিপিক মাধ্যমেঁ আপস মে সশক্ত ৰূপেঁ জ্বড়াৱক অনুভৱ কৰৈত বুথি। এতৱেঁ নহি, সময়-সময় পৰ জখন কখনহুঁ নিজ ভাষা পৰ আঘাত পহুঁচৱাঁক সংশয় হোগত বুনি তহ আপসী মতাঁতৰ কে কাত কৰৈত দৃঢ়তা সঁ অপন ভাষা ও লিপিক অস্মিতা কেৰ ৰক্ষাৰ্থ একজুটতাক প্ৰদৰ্শন কৰৈত বুথি।

उत्तर मे पंजाब सँ लए कैँ दक्षिण मे केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक आ' आंध्रप्रदेश होइत उड़ीसा, पश्चिम-बंगाल तथा पश्चिम मे गुजरात, महाराष्ट्र होइत पूर्व मे आसाम आ' त्रिपुरा धरि निज भाषा ओ लिपिक प्रति अटूट सिनेह आ गौरव-बोध देखल जा सकैछ। ई सब देखलाक उपरांतो यदि हृदय मे अपन भाषा ओ लिपिक प्रति सिनेह नहि जागय तऽ मनुष्यक ई जीवन पशु-समान थिक। कहबा मे कोनो अतिशयोक्ति नहि जे एहि तरहक मनुष्य या तऽ भाव-शून्य भए गेल छथि वा नियतिक आगू निरीह भ' आत्मसमर्पण कए देने छथि।

উত্তৰ মে পংজাৱঁ সঁ লএ কেঁ দক্ষিণ মে কেৰল, তমিলনাড়ু, কৰ্নাটক আহ আঁধ্ৰপ্ৰদেশ হোগত উড়ীসা, পশ্চিম-ৱঁগাল তথা পশ্চিম মে গুজৰাত, মহাৰাষ্ট্ৰ হোগত পূৰ্ব মে আসাম আহ ত্ৰিপুৰা ধৰি নিজ ভাষা ও লিপিক প্ৰতি অটুট সিনেহ আ গৌৰৱ-ৰোধ দেখল জা সকৈছু।

জু সরঁ দেখনাক উপৰাঁতো যদি হৃদয় মে অপন ভাষা ও লিপিক প্রতি সিনেহ নহি জাগয় তহ মনুষ্যক জু জীবন পশু-সমান থিক। কহরাঁ মে কোনো অতিশয়োক্তি নহি জে এহি তৰহক মনুষ্য য়া তহ ভাব-শূন্য ভএ গেল বুধি বা নিয়তিক আগু নিৰীহ ভহ আত্মসমর্পণ কএ দেলে বুধি। অপন ভাষা ओ লিপি কেঁ পুনর্জীবিত করবাক বিচার কেঁ লাভ-হানিক দৃষ্টিয়েঁ দেখব উচিত নহি। ई হমরা সভক পহিচান কেঁ আওর সুদৃঢ় করত সে বিশ্বাস রাখব অত্যন্ত আবশ্যক।

অপন ভাষা ও লিপি কেঁ পুনর্জীরিত কৰরাঁক বিচাৰ কেঁ লাভ-হানিক দৃষ্টিয়েঁ দেখরঁ উচিত নহি। জু হমৰা সভক পহিচান কেঁ আওৰ সুদৃঢ় কৰত সে বিশ্বাস বাখরঁ অথনু আবশ্যক।

বংগলা, অসমী আওর উড়িয়া सन লিপিক জননী কহেবাক গৌৰব সহি মিথিলাক্ষর কেঁ छैক, মুদা, আই অপনহি ঘর মে অনচিনহার বনল অছি। মিথিলাক্ষরক বর্তমান দুর্দশাক লেল উত্তরদায়ী কারক पर चर्चा करब, मात्र पानि कें डेंगायब सन निरर्थक काज होयत।

বঁগলা, অসমী আওৰ উড়িয়া সন লিপিক জননী কহেরাঁক গৌৰব এহি মিথিলাক্ষৰ কেঁ ছৈক, মুদা, আজু অপনহি ঘৰ মে অনচিনহাৰ বনত অছি। মিথিলাক্ষৰক বর্তমান দুর্দশাক লেল উত্তৰদায়ী কাৰ্ক্কপৰ চর্চা কৰরঁ, মাত্র পানি কেঁ ডেঁগায়রঁ সন নিৰর্থক কাজ হোয়ত।

সহি তরহক নৈরাশ্যপূর্ণ স্থিতি মে মিথিলা-মৈথিলী सँ असीम आ' निःस्वार्थ प्रेम रखनिहार कतिपय मैथिल-जन केर अथक प्रयास सँ

মিথিলাক্ষর আব ডেগা-ডেগী দৈত ভবিষ্যক উজ্জ্বল বাট পর আগু বঢ়ি রহল অছি। বহুত রাস বিদ্বতজনক স্বাভাবিক আশংকাক বিনু পরবাহ করনে মিথিলাক্ষর-অভিযানী লোকনি একলক্ষ্যী ভয় হুনকা সভক আকলন কেঁ নিরাধার সিদ্ধ করয় মে অহর্নিশ লাগল ছথি। ই দেখি মোন হর্ষিত হৌইছ জে মিথিলাক্ষর-প্রেমীক সংখ্যা দিনানুদিন দ্রুত গতি সঁ বঢ়ি রহল অছি।

এহি তৰহক নৈৰাশ্যপূর্ণ স্থিতি মে মিথিলা-মৌথিনী সঁ অসীম আঃ নিঃস্বার্থ প্রেম ৰখনিহাৰ কতিপয় মৌথিল-জন কেৰ অথক প্রয়াস সঁ মিথিলাক্ষৰ আৱঁ ডেগা-ডেগী দৈত ভবিষ্যক উজ্জ্বল বাঁহ পৰ আগু বঁঢ়ি বহল অছি। বঁহুত বাস বিদ্বতজনক স্বাভাবিক আশঁকাক বিনু পৰবাহ কএনে মিথিলাক্ষৰ-অভিযানী লোকনি একলক্ষী ভএ হুনকা সভক আকলন কেঁ নিৰাধাৰ সিদ্ধ কৰএ মে অহর্নিশ লাগল ছথি। ই দেখি মোন হর্ষিত হোজয়ু জে মিথিলাক্ষৰ-প্রেমীক সংখ্যা দিনানুদিন দ্রুত গতি সঁ বঁঢ়ি বহল অছি।

মিথিলাক্ষরক প্রচার-প্রসার মে লাগল সমস্ত অভিযান আ'অভিযানী অভিনंदनक পাত্র ছথি জনিকর অথক প্রযাসেঁ আই মিথিলাক্ষরক পহুঁচ ঘর-ঘর ধরি সুনিশ্চিত भए रहल अछि।

মিথিলাক্ষৰক প্রচাৰ-প্রসাৰ মে লাগল সমস্ত অভিযান আঃ অভিযানী অভিনंदनক পাত্র ছথি জনিকৰ অথক প্রয়াসেঁ আজু মিথিলাক্ষৰক পহুঁচ ঘৰ-ঘৰ ধৰি সুনিশ্চিত ভএ বহল অছি।

"मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान", "मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान", "दूर्वाक्षत-मिशन मिथिलाक्षर अभियान", "मिशन मिथिलाक्षर लिपि" आ 'मैथिल संघ मोहाली' द्वारा संचालित "मिथिलाक्षर विज्ञ" सन अभियान नित नव-नव कीर्तिमान स्थापित करैत माँ मैथिलीक सेवा मे अहर्निश लागल अछि जकर संतोषप्रद परिणाम आब सभतरि दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि।

"মিথিলাক্ষৰ সাক্ষৰতা অভিযান", "মিথিলাক্ষৰ শিক্ষা অভিযান", "দূৰ্বাক্ষত-মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান", "মিশন মিথিলাক্ষৰ লিপি" আৰু 'মৈথিল সংঘ মোহালী' দ্বাৰা সঁচালিত "মিথিলাক্ষৰ বিজ্ঞ" সন অভিযান নিত নৱ-নৱ কীৰ্তিমান স্থাপিত কৰৈত মাঁ মৈথিলীক সেৱা মে অহৰ্নিশ লাগল অছি জকৰ সংতোষপ্রদ পৰিণাম আব সভতৰি দৃষ্টিগোচৰ ভঽ ৰহল অছি।

इस्ह क्रम मे "दूर्वाक्षत-मिशन मिथिलाक्षर अभियान" द्वारा मिथिलाक्षर कैं समर्पित स्मारिकाक ई प्रथम अंक स्कटा निस्सन डेग साबित होयत से विश्वास अछि। तथापि, अखनहु बहुत काज शेष अछि। जरूरति छैक आपसी सामंजस्य बढ़बैत स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक वातावरणक निर्माण करु। एहि सँ लक्ष्यक प्राप्ति सहजता एवं सुगमता सँ कएल जा सकैछ।

ঙএহ ক্রম মে "দূৰ্বাক্ষত-মিশন মিথিলাক্ষৰ অভিযান" দ্বাৰা মিথিলাক্ষৰ কৈঁ সমৰ্পিত স্মাৰিকাক ঙ প্রথম অঁক একঠা নিস্সন ডেগ সাৰিত হোয়ত সে বিশ্বাস অছি। তথাপি, অখনহু বহুত কাজ শেষ অছি। জৰুৰতি ছৈক আপসী সামঁজস্য বঢ়বৈত স্বস্থ প্রতিস্পর্ধাত্মক ৱাতাৱৰণক নির্মাণ কৰ। এহি সঁ লক্ষ্যক প্রাপ্তি সহজতা এৱঁ সুগমতা সঁ কএল জা সকৈছ।

श्रेय लेबाक भावना सँ श्रेय देबाक भावनाक विकास एहि दुरूह काज केँ सरल बनाओत से बूझब आवश्यक अछि। अखन धरिक काज तऽ मात्र ऊँटक मुँह मे जीरक फोरन समान अछि। भऽ सकैछ जे एक-दू पीढ़ीक अनवरत सेवाक पश्चात अपेक्षित परिणाम प्राप्त हो। आखिर गाछो-वृक्ष तऽ लोक आगामी संततिये लेल लगबैत अछि। एकरो तहिना बूझल जाय।

শ্রেয় নেৱাঁক ভাৱনা সঁ শ্রেয় দেৱাঁক ভাৱনাক ৱিকাস এহি দুৰূহ কাজ কেঁ সৰল ৱনাওত সে ৱুঝৱ আৱশ্যক অছি। অখন ধৰিক কাজ তঽমাত্ৰ ডুঁঠক মুঁহ মে জীৰক ফোৰন সমান অছি। ভঽ সকৈছু জে এক-দু পীঢ়ীক অনৱৰত সেৱাক পশ্চাত অপেক্ষিত পৰিণাম প্ৰাপ্ত হো। আখিৰ গাছো-বৃক্ষ তঽ লোক আগামী সংততিয়ে লেল লগৱৈত অছি। একৰো তহিনা ৱুঝল জায়।

आई मिथिला, शिथिला बनल अछि से के नहि जनैत अछि! विद्वत परंपराक धनिक मिथिला मे आई एकताक सूत्र ताकब कठिन अछि। एहेन विकट स्थिति मे मिथिलाक्षर एकटा नव आस जगा रहल अछि। आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि जे मिथिलाक्षर, संपूर्ण मिथिला केँ एकताक सूत्र मे बान्हि एकर गौरवशाली अतीत केँ पुनर्स्थापित करैत अपेक्षित अधिकारक प्राप्ति मे सहायक सिद्ध होयत। जयतु मिथिलाक्षर! – रमेश चन्द्र झा

আজু মিথিলা, শিথিলা ৱনল অছি সে কে নহি জনৈত অছি! ৱিদ্বত পৰংপৰাক ধনিক মিথিলা মে আজু একতাক সূত্ৰ তাকৱ কঠিন অছি। এহেন ৱিকট স্থিতি মে মিথিলাক্ষৰ একটা নৱ আস জগা ৰহল অছি। আশা নহি পূৰ্ণ ৱিশ্বাস অছি জে মিথিলাক্ষৰ, সংপূৰ্ণ মিথিলা কেঁ একতাক সূত্ৰ মে ৱান্হি একৰ গোৰৱশালী অতীত কেঁ পুনৰ্স্থাপিত কৰৈত অপেক্ষিত অধিকাৰক প্ৰাপ্তি মে সহায়ক সিদ্ধ হোয়ত। জয়ত মিথিলাক্ষৰ! – ৰমেশ চন্দ্ৰ ঝা

মঙ্গল গীত

মঙ্গলময় দিন আজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল
ঘন ঘন জাগল ভাগ হে মিথিলাঞ্চল জাগল

সরু মিনি সীথরু সরু মিনি নীথরু - ২
সরু মিনি কবরু প্রভাব হে মিথিলাঞ্চল জাগল
মঙ্গলময় দিন আজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল

নিজ ভাষা নিজ নিধি অভিলাষা - ২
স্বপন মিথিলা রাজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল
মঙ্গলময় দিন আজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল

জনক রিদেহ জানকী জগনী - ২
ঘন ঘন তেন সমাজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল
মঙ্গলময় দিন আজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল

মিথিলা ভুন জগরিদিত রিসাবদ - ২
রুড় জ্ঞানী রুড় ঋষি জন ভাবত - ২
'দেব'ননায়িত আজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল
মঙ্গলময় দিন আজ হে মিথিলাঞ্চল জাগল

- দেবানন্দ মিশ্র
জনসেন

মিথিলা বৰ্ণন মিথিলা ৰঙ্গন

সুনু সুনু বৌবা ই মিথিলা ধাম থৌ,
হমহ জন্ম আ পৰিবেশক থিক ই স্থান থৌ!

সুনু সুনু বৌৱা ঙা মিথিলা ধাম য়ৌ
হমৰ জন্ম আ পৰিবেশক থিক ঙা স্থান য়ৌ

মিথিলে মেঁ উগনা, মহাদেৱক ছন্হি নাম থৌ,
মিথিলেঁ কে পাহুন, সিয়াপতি ৰাম থৌ!

মিথিলে মেঁ উগনা, মহাদেৱক ছন্হি নাম য়ৌ
মিথিলে কে পাহুন, সিয়াপতি ৰাম য়ৌ

বিদ্যাপতি কে নগৰী আ সীতা জীক ধাম থৌ,
বাবা নাগৰ্জুন আ মংডন মিশ্ৰ কেৰ গাম থৌ!

বিদ্যাপতি কে নগৰী আ সীতা জীক ধাম য়ৌ
ৱাৱা নাগাৰ্জুন আ মংডন মিশ্ৰ কেৰ গাম য়ৌ

মিথিলে মেঁ কোশী আ কমলা বলান থৌ,
জতয় পাম পহিহি বনল অপন পহচান থৌ!

মিথিলে মেঁ কোশী আ কমলা ৰলান য়ৌ
জতয় পাজ পহিৰি ৰনল অপন পহচান য়ৌ

ধন্য হমহ ভাগ বা পূৰ্ব জন্মক ইনাম থৌ,
অংজনী কহাৰৈ ছী, মৈথিল পহচান থৌ!

ধন্য হমৰ ভাগ বা পূৰ্ব জন্মক ঙানাম য়ৌ
অংজনী কহাৰৈ ছী, মৈথিল পহচান য়ৌ

অংজনী কুমাহ চৌধৰী লিপ্যাংতৰণ : তনুজা চৌধৰী

অংজনী কুমাৰ চৌধৰী লিপ্যাংতৰন : তনুজা চৌধৰী

দূরাঞ্চিত মিশন মিথিলাঞ্চৰ অভিযান

হম জগত জননী সীতা মাঁ কী জন্মস্থলী মিথিলা
কে নিবাসী হৈঁ। জহাঁ শাস্ত্রার্থ মেঁ শংকরাচার্য
পরাজিত হুএ ঔর জহাঁ কা পাণ্ডিত্য বিশ্ববিখ্যাত
রহা। জব মিথিলা কে অনেক বিদ্বানোঁ কা
আগমন কাশী মেঁ হুআ তো বিশ্ব মেঁ কাশী কী
পাণ্ডিত্যপরম্পরা বিখ্যাত হো গঈ। ফির ক্যা
কারন হৈ কি জো মৈথিলপণ্ডিত ব্রজ মেঁ প্রবাসী হুএ
উনকী বিদ্বত্তা সে ব্রজ কী পাণ্ডিত্যপরম্পরা নির্মিত
কেঁউ নহীঁ হুঈ? শ্রেষ্ঠতা জন্ম সে নহীঁ বিদ্যা, কলা,
কৌশল ঔর কর্ম সে মিলতী হৈ। আজ হম সামাজিক,
রাজনীতিক, আর্থিক ঔর ধার্মিক সভী দৃষ্টি সে পিছড়
রহে হৈঁ। দেশ মেঁ হমারা কোঈ রাজনেতা নহীঁ হৈ জো
হমারা মার্গদর্শন করে, ঔর রাজনীতি মেঁ হমারা
বর্চস্ব বঢ়ে। জিসসে সমাজ কা উত্থান হো সকে।

লোকেন্দ্র শর্মা (মাঁসী)

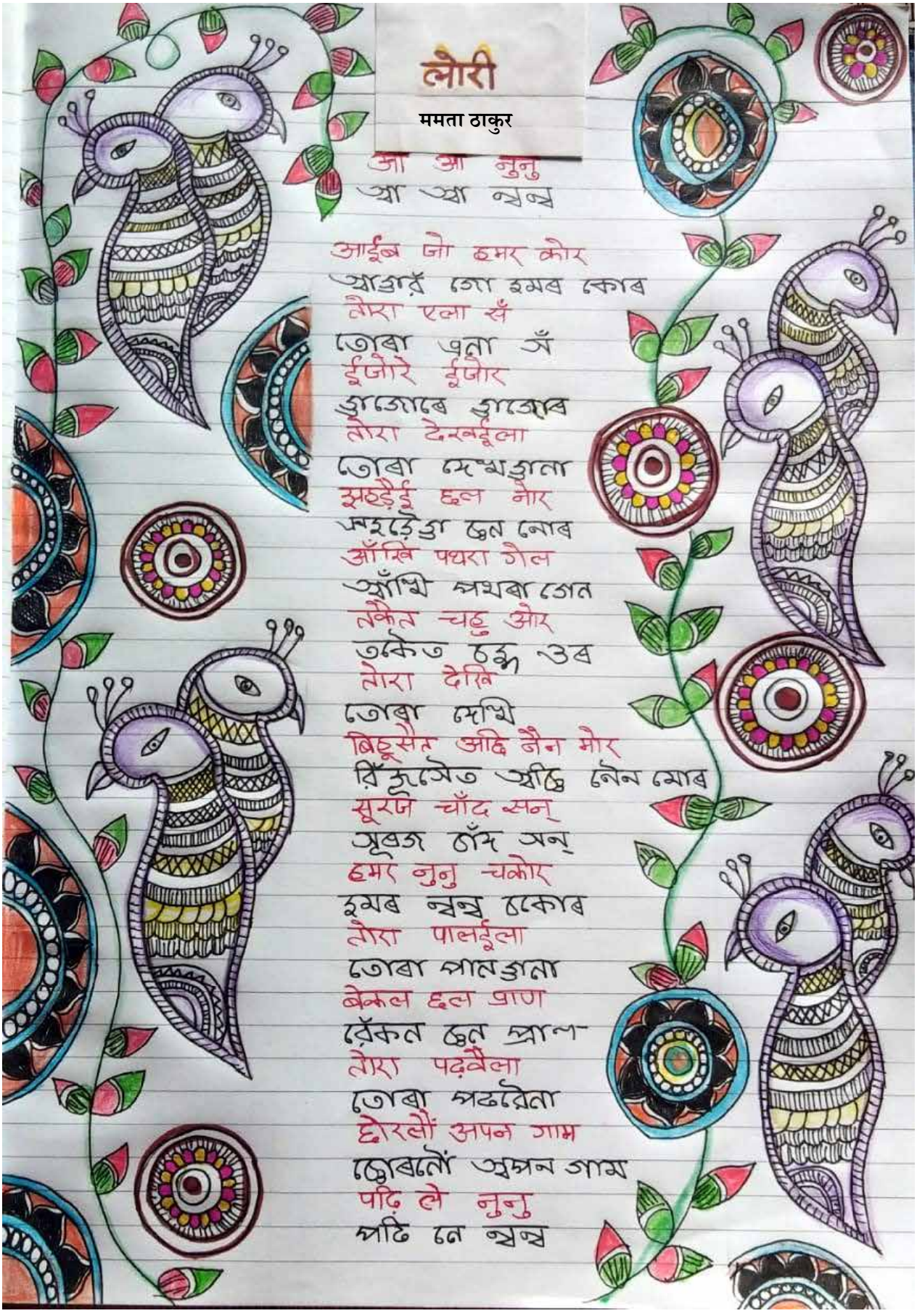

लोरी

ममता ठाकुर

आ आ नुनु
আ আ ন্বন্ব

आईब जो हमर कोर
আহাৰ্ গো হমৰ কোৰ
तोरा एला सँ
তোৰা এনা সঁ
ईजोरे ईजोर
ঈজোৰে ঈজোৰ
तोरा देखईला
তোৰা দেখইলা
झहड़ैई छल नोर
ঝহড়ৈই ছল নোৰ
आँखि पथरा गेल
আঁখি পথৰা গেল
तकैत चहु ओर
তকৈত চহু ওৰ
तोरा देखि
তোৰা দেখি
बिछुसैत अछि नैन मोर
ৰিঁজুসৈত অছি নৈন মোৰ
सूरज चाँद सन्
সূৰজ চাঁদ সন্
हमर नुनु चकोर
হমৰ ন্বন্ব চকোৰ
तोरा पालईला
তোৰা পালইলা
बेकल छल प्राण
ৰেঁকল ছল প্ৰাণ
तोरा पढ़बैला
তোৰা পঢ়ৱৈলা
छोरलौं अपन गाम
ছোৰলোঁ অপন গাম
पढ़ि ले नुनु
পঢ়ি লে ন্বন্ব

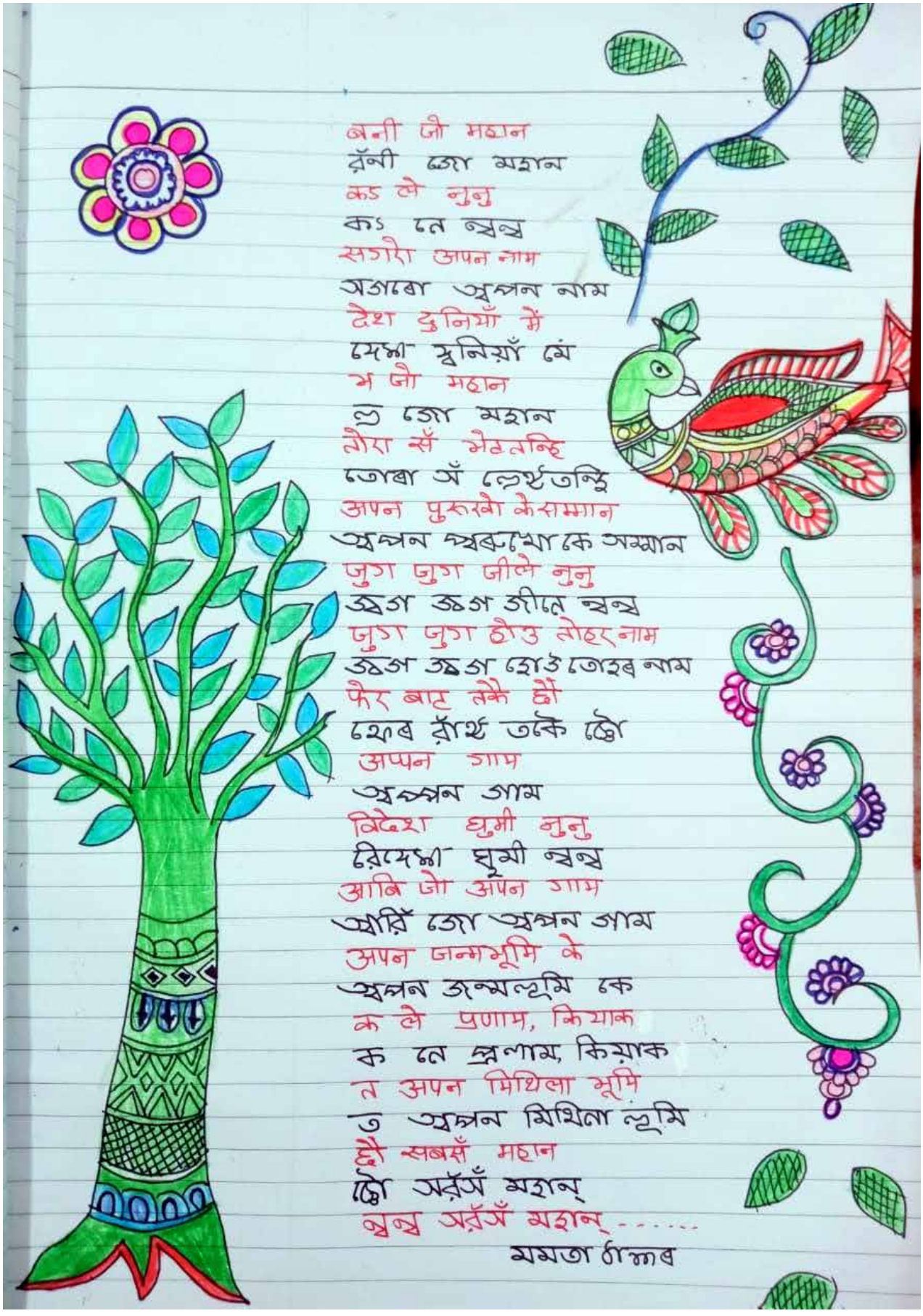
बनी जो महान
বনী জো মহান
कऽ ले नुनु
কऽ নে ন্নুন্নু
सगरो अपन नाम
সগরো অপন নাম
जगबो अपन नाम
দেশ दुनियाँ में
দেশ্শা দুনিয়াঁ মেঁ
भ जो महान
ভ জো মহান
गैरा सँ भेटतन्हि
গৈরা সঁ ভেটতন্হি
तोबा अँ लेष्टतन्हि
অপন पुरुखो केसम्मान
অপন পুরুখো কে সম্মান
जुग जुग जीले नुनु
জুগ জুগ জীলে নুনু
জুগ জুগ জীলে ন্নুন্নু
जुग जुग होउ तोहर नाम
জুগ জুগ হোউ তোহর নাম
फेर बाट तके छौ
ফের বাট তকে ছৌ
अपन गाम
অপন গাম
विदेश घुमी नुनु
বিদেশ্শা ঘুমী ন্নুন্নু
आबि जो अपन गाम
আবিঁ জো অপন গাম
अपन जन्मभूमि के
অপন জন্মভূমি কে
क ले प्रणाम, कियाक
ক নে প্রনাম, কিয়াক
त अपन मिथिला भूमि
ত অপন মিথিলা ভূমি
छौ सबसँ महान
ছৌ সবসঁ মহান্
छौ सबसँ महान्.....
ছৌ সবসঁ মহান্.....
ममता ठाकुर


अहिबातक पातिल
चल दूरभाष पबक
चलचित्र सँ
चित्त लगा कें
गप्प करैत
नहि जानि
राति कतेक
ससरि जाइत अछि
सब दिनक परात
भिन्न दृश्य सँ पहिनहि
दिनक दिशा
कतेक दूर धरि
ससरि जाइत अछि ...
स्वतः सुकून होइत अछि
मन मे
ई चलचित्रक चित्र
एक राति
स्थिर भऽ
जगा जाओत
सब दिन
पराति गाबि कें
अहिबातक पातिल मे
दीप जराओल जाएत
सब दिन यौंस
सोझ गाबि कें ....
स्वाती शाकम्भरी
सिलचर, असम
खहिरातक पातिल
ने दूरभाष पबक
चलचित्र सँ
चित्त लगा कें
गप्प करैत
नहि जानि
राति कतेक
ससरि जाइत अछि
सब दिनक परात
भिन्न दृश्य सँ पहिनहि
दिनक दिशा
कतेक दूर धरि
ससरि जाइत अछि ...
एकटा सुकून होइत अछि
मन मे
ई चलचित्रक चित्र
एक राति
स्थिर भऽ
जगा जाओत
सब दिन
पराति गाबि कें
खहिरातक पातिल मे
दीप जराओल जाएत
सब दिन यौंस
सोझ गाबि कें ...
स्वाती शाकम्भरी
सिलचर, असम

দোহা (दोहा)

মিথিলাঁচল বাসী সুনূ, রাখূ একর মান।
মৈথিলী স মিট্ঠ কোনো, ভাষা নৈ অছি আন॥
मिथिलांचल वासी सुनू, राखू एकर मान।
मैथिली स मिट्ठ कोनो, भाषा नै अछि आन॥

মিথিলা কে হম কী কহূ, সদিখন সুনী বখান।
সাঁস-সাঁস সেঁ মৈথিলী, ই অছি সবহক জান॥
मिथिला के हम की कहू, सदिखन सुनी बखान।
साँस-साँस में मैथिली, ई अछि सबहक जान॥

মাতৃভাষা কে ছুঁঝিয়ৌ, অপনহি মায় সমান।
দেবৈঁ হমহুঁ মান আ, আনো দেতৈ মান॥
मातृभाषा के बुझियौ, अपनहि माय समान।
देबै हमहूँ मान आ, आनो देतै मान॥



প্রতিভা স্মৃতি
प्रतिभा स्मृति

কোৰোনা আনি ৰহল অহি চিন্তা, ভয়, অৱসাদ আ হতাশা, কিন্তু সংগহি সংগ সিথা ৰহল অছি, জীৱনক নৱ পৰিভাষা।

পদ, ৱৈভৱ সম্মান শক্তি কেৰ দংভ ভৰল সংসাৰ মেঁ, সৱঁহুক ভেল আজ একহি জিনগী ৱঁনি গেল এক তমাশা।

কী হোয়ত, কহিয়া হোয়ত, কহিয়া আয়ত টীকা আ ঔসধী কোন দিন ভেটত ৱঁঞ্চন মুক্ত জীৱন, গয়হু অছি আৱ জিগ্যাসা।

জিনগী ক লেল নহীঁ, চাহি ৰাগ দ্বেষ ন চাহি ছদম আ ভেদ ৱিভেদ, চাহি ৱঁস ৱিদ্যালয়, আ চাহি ৱিজ্যান চিকিস্যো কেৰ ভাষা।

সংঘৰ্ষ কৰৱ নহীঁ হোয়ৱ উদাশ, কাটৱঁ হম ৰোগক নাগ ফাঁস, অপনো ৱঁচৱঁ, ৱঁচায়ৱঁ সৱঁ কে গয়হু অছি হমৰ ৱিশ্বাস আ আশা।

ৰাজীৱ ৰংজন দাস

Scanned with

Beauty (সুন্দৰতা):

হম জে কবিতা লিখ ৰহল ছী ও মিথিলা নগৰী
জগত মাঁ, জানকী কে দেশ জনকপুৰ কে সৌন্দৰ্য
আৰ মধুৰ এৰংগ লাৱণ্য ভাষা কে দৰ্শাৱৈত ঐছ.

এহেন সুন্দৰ মিথিলা ধাম, কমলা, কোশী আ বঁলান,
পাৱন মাটিক আম মখান, ৰমণীয ঐছ এতো দলান
হোমোৰ সত সত প্ৰণাম বৈকুণ্ঠ নগৰী কে প্ৰতীক
তিৰহুট দেশ - মিথিলাঁচল নগৰী কে
মাথা পৰ পাগ, পীযৰ ধোতী, কোজগৰা কে ছাতা
লোকে নিকৈল গেলখিন ভগৱন ঝা
ওম্‌হোৰ মধুশ্ৰামণী কৰৈত কন্যা সোৱঁ পহিৰনে
ছেলখিন মধুৱঁনী প্ৰিংট মঁ ৰোঁগোল নুআ আৰ অঁগ
গমছা ওঢ়নৈ কঙ্কা আৰ বাঁৱা নিকৈল গেলখিন
ৱেৰহট খাএ লৈ সাঁঝ কে পাৱন সংধ্যা পৰ ফুৰসত মেঁ
গৌ মাতা কে সেৱা কৰৈত কমলা দাঙ্গ,
ৱঁথান কে খৰৈত ৱিপতা ৱাঁড়,
কাকী কে হাথক সকৰৌৰী, ৱাঁৱী কে ৱঁনাযল ৱঁৰী ঝোৰ,
তৰুআ, তিলকোৰ, তিলৌডী, অদৌৰী কে অলগে
শান. দহী মাছ ত মিথিলা কে মান

নিকৈল গলৌ হোম ভ্ৰমণ কৰৈ লে, মিথিলা নগৰী কে নিৰিক্ষণ কৰৈ লৈ
ভাৰত মাঁ কে কুশল অধ্যেতা ছৈ মিথিলাঁচল কে গৌৰৱ সৰ্বদা
নিপুণ, চতুৰ, সুজান, মনীষা ছৈ তিৰহুট নগৰী কে গহনা।
দেশ লাজ কে ৰক্ষা আৰ শক্তি প্ৰৱাস কে কামনা
ছৈ, মিথিলা নগৰী কে আভূষণ আৰ অলংকাৰ
ধৈৰ্য, নিডৰ, শূৰৱীৰ আৰ সাহসী ছৈ মিথিলা
নিৱাসী কে ৱিশেষ অভিজ্ঞান
কত্তেক যশস্বী প্ৰখ্যাত সংতান নতমস্তক ভো কে
উজ্জ্বলিত কৰনৈ ছৈ ভাৰত কে কীৰ্তিমান
এহেন সৌন্দৰ্য কে ৱৰ্ণন জত্তেক কৰু, অনংত ছৈ
যুড় চতুৰ কুশল জজমান

-- শৰদ কুমাৰ ঝা

—: জীৱ জীৱাম্মো আওৰ সংস্কাৰ :— 1

Date

সত্য জীৱক শৰীৰ এক টা অদৃশ্য শক্তি (জীৱাম্মো) কে নিৱাসস্থান ছৈক। ভা অদৃশ্য শক্তি জত্থনি তক শৰীৰক ভীতৰ ৰহৈত অছি তত্থনে তক শৰীৰ মেঁ ধড়কন/ স্পংদন সেহো ৰহৈত ছৈক আ দেহ কে জীৱিত মানল জাভাত ছৈক। অদৃশ্য শক্তি কে দেহ ছোড়িতে দেহ কে মৃত মানি লেল জাভাত ছৈক। দেহক ক্ষৰণ হোময় লগৈত ছৈক। মৃত শৰীৰ সড়ঙ আ গলঙ লগৈত ছৈক।

ঘৰ-সমাজ কে সত্য কেও ওহি মৃত দেহ সঙ জল্দী স জল্দী ছুটকাৰা পয়ৰাঁক চোঁত মেঁ লাগি জাভাত ছথি।

অলগ-অলগ জাতি, সমাজ আ ধৰ্ম মেঁ মৃত দেহ কে নষ্ট কৰৰাঁক লেল অলগ-অলগ তৰহক ৰীতি-ৰিৱাজ আ ৰিধি-ৰিধান প্ৰচলিত ছৈক। শব্দ সমাজ মেঁ মৃত দেহ কে কপড়া মেঁ লপেটি তাবূঁত মেঁ বন্দ কঙ ৰা ৰিঁনা তাবূঁত কে ওহিনা মাটি তৰ দক্ষন কেনাভা, তঙ কতৌ মৃত দেহ কে ভঁগেৰ মচান পৰ ৰাখি দেল জাভাত ছৈক জে অনেকো তৰহক পক্ষিক আহাৰ বনি জাভাত ছৈক। হিন্দু সমাজ মেঁ মৃত দেহ কে ৰিধি-ৰিধান সঁ অগ্নিদেৱ কে সমৰ্পিত কয় পঁচতৰ মেঁ মিলা দেল জাভাত ছৈক।

একটা দেহ কে ছোড়ৰাঁক উপৰান্ত জীৱাম্মো দোসৰ দেহ (ভ্ৰূণ) মেঁ প্ৰৱিষ্ট ভঙ পুনৰ্জন্ম ল লৈত ছৈক। পুনৰ্জন্মক বাঁদো জীৱাম্মোক পূৰ্ব জন্মক কিছু গুণ-দোষ সেহো নৱকা দেহ মেঁ আৰিঁ জাভাত ছৈক। দোষ কে নষ্ট কৰৰা লেল, গুণ কে আওৰ পৰিষ্কৃত কৰৰা লেল আ কিছু আওৰ নৱকা গুণ কে সৃজন কৰৰা লেল মনুষ্য য়োনিক অলগ-অলগ জাতি-সমাজ, সম্প্ৰদায়, ধৰ্ম মেঁ অনেকো তৰহক ৰীতি-ৰিৱাজ আ ৰিধি-ৰিধানক ব্যৱস্থা ছৈক।

হিন্দু ধৰ্ম মেঁ একৰা "সংস্কাৰ" কহল গেল অছি। সংস্কাৰক তাপেৰ্য ছৈক শুদ্ধিকৰন। বিভিন্ন প্ৰকাৰক সংস্কাৰ কে সংখ্যা আ নাম মেঁ বঁহুতো বেঁৰ বঁদলাৰ

Page No.

মন্বন্থক অপন নিয়ন্ত্রণ মেঁ ছৈন্হু। বাস্তবিকতা ছৈক জে ভা দুন্ব টা সংস্কাৰ বানপ্রস্থ আ সন্যাস আজুক সময় মেঁ কিতাবিঁয় জ্ঞানক বাঁত ৰহি গেল অছি।

অন্তিম সংস্কাৰ (16) অন্ত্যেষ্টি কৰবাক জিম্মেবাৰী বাঁল-বঁচা, কৰ-শইম্বঁ আ অড়োসী-পড়োসী সবঁহক হোভাত ছৈক।

আজুক সময় মেঁ তঙ অড়োসী-পড়োসী আ সমাজক লোক সহু তটস্থ ভেল জাভাত ছথি আ অপন কর্তব্য কে সেহো বিঁসৰল জাভাত ছথি। শহৰ মেঁ ত সহুটা জবাঁবদেহী বাঁল-বঁচা আ কৰীবীঁ সম্বন্ধী তক সীমিত ৰহি গেল অছি। ভা সবঁ পাৰিবাৰিক/সামাজিক বিঁথৰার আ স্ব-কেন্দ্রিত মানসিকতাক দুষ্পৰিণাম থিক।

আবশ্যকতা অছি জে হম সবঁ অপন সামাজিক কর্তব্য কে সমঝী। সংস্কাৰ কর্মক মহত্তা কে সেহো সমঝী আওৰ সমঝাবীঁ। সংস্কাৰ কর্ম কে প্রতি লাপৰবাহীক পৰিণাম থিক জে সমাজ মেঁ অনুশাসনহীনতা আ উচ্ছৃঙ্খলতাক বোঁলবাঁলা বঁঢ়ল জা ৰহল অছি।

(কিছু কিতাবঁ আ লেখ মেঁ পঢ়ল তথ্য পৰ আধাৰিত।)

জয়ন্ত কে শ্রীবাস্তব
ক্ষেত্রিয় সংযুক্ত সচিব
পূর্ব মধ্য ক্ষেত্র
অখিল ভাৰতীয় সেৱানিবৃত
ৰেল কর্মচাৰী মহাসংঘ
সমস্তীপুৰ
মো০: 7004951592

श्री दुर्गा सप्तशती - चतुर्थ अध्याय के अंश

शक्रादयः सुरगणा निहतेतिवीर्ये
तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या
শক্রাদয়ঃ সুৰগণা নিহতেতিৱীৰ্য্যে
তস্মিন্দুৰাত্মনি সুৰাৰিৰ্বলে চ দেৱ্যা
तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा
वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः
তাং তুষ্টুবুঃ প্ৰণতিনম্ৰশিৰোধৰাংসা
ৰাগ্ভিঃ প্ৰহৰ্ষপুলকোদ্গমচাৰুদেহাঃ
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निःशेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या
দেৱ্যা যয়া ততমিদং জগদাত্মশক্ত্যা
নিশ্শেষদেৱগণশক্তিসমূহমূৰ্ত্যা
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः
তামম্বিকামখিলদেৱমহৰ্ষিপূজ্যাং
ভক্ত্যা নতাঃ স্ম বিদধাতু শুভানি সা নঃ
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च
যস্যাঃ প্ৰভাৱমতুলং ভগৱাননন্তো
ব্ৰহ্মা হৰশ্চ ন হি ৰক্তুমলং বলং চ

भव्या अविनाश
ভৱ্যা অবিনাশ

मैथिली गीत

Date
Page No.

मिथिलाक उत्थान क हेतु तन मन धन लगावय पड़त ।
मिथिलाक उत्थान क हेतु तन मन धन लगावय पड़त ।
बौआ बुच्ची भाई-बहीन सब मिलि संघर्ष करय पड़त ॥
रोआ रँठी लाज-रहीन सब मिलि संघर्ष करय पड़त ॥
राजनीतिक, समाजिक, कुटनीतिक सब सँ मदद लेबय पड़त ।
राजनीतिक, समाजिक, कूटनीतिक सब सँ मदद लेबय पड़त ।
मिथिलाक उत्थानक हेतु तन मन धन लगावय पड़त ॥
मिथिलाक उत्थानक हेतु तन मन धन लगावय पड़त ॥
कतेक अओता कतेक ढगता सब सँ मिलि कय रहय पड़त ।
कतेक अओता कतेक ठगता सब सँ मिलि कय रहय पड़त ।
मुख्य उद्देश्य मिथिला मैथिलीक उद्धारक हेतु सोचय पड़त ॥

मुख्य उद्देश्य मिथिला मैथिलीक उद्धारक हेतु सोचय पड़त ॥
बिना संघर्षहि किछु ने भेटते ताहि सँ अवगत होमय पड़त ॥
बिना संघर्षहि किछु ने लेबैत ताहि सँ अवगत होमय पड़त ।
मिथिलाक उत्थानक हेतु तन मन धन लगावय पड़त ॥
मिथिलाक उत्थानक हेतु तन मन धन लगावय पड़त ॥
नौवीं सूची मे स्थान रहितौ धरातल पर उतारय पड़त ।
नौवीं सूची मे स्थान रहितौ धरातल पर उतारय पड़त ।
आधारयुक्त रहितौ पुनः मजबूत आधार बनावय पड़त ॥
आधारयुक्त रहितौ पुनः मजबूत आधार बनावय पड़त ।
पुरखा देलैहि बहुत धरोहरि सब मिलि ओकरा बचबय पड़त ॥
पुरखा देलैहि बहुत धरोहरि सब मिलि ओकरा बचबय पड़त ॥
मिथिलाक उत्थान हेतु तन मन धन लगावय पड़त ।
मिथिलाक उत्थान हेतु तन मन धन लगावय पड़त ॥

गनेश झा
सम्बइ - ३
दरभंगा

कोजागरा - কোজাগৰা

साधना सुनिल झा সাধনা সুনিল ঝা

कोजागरा मिथिलाक प्रशस्त पाबनि मानल जाइत अछि। ई विजया दशमीक बाद चारिम या पाँचम दिन शरत पूर्णिमाक राति मनाओल जाइत अछि। मिथिला में लोक घरे-घरे कोजागरा मनबैत छथि।

কোজাগৰা মিথিলাক প্ৰশস্ত পাৰনি মানল জাইত অছি। ই বিজয়া দশমীক বাদ চাৰিম বা পাঁচম দিন শৰত পূৰ্ণিমাক ৰাতি মনাওল জাইত অছি। মিথিলা মে লোক ঘৰে-ঘৰে কোজাগৰা মনবৈত ছথি।

पूजाक घर कें नीपि क पवित्र कएल जाइत अछि। पूजा स्थल पर पिठार सँ कमल फूलक अरिपन होइत अछि। ओहि में सिन्दुर लगा देल जाइत अछि। पूजाक सामग्री में फल, चानन अक्षत, दूबि, तुलसी, बेलपात, गुगुल, सिन्दुर, कौड़ी, पंचगव्य कर्पूर आदि रहैत छैक।

পূজাক ঘৰ কেঁ নীপি ক পৱিত্ৰ কএল জাইত অছি। পূজা স্থল পৰ পিঠাৰ সঁ কমল ফুলক অৰিপন হোইত অছি। ওহি মে সিন্দুৰ লগা দেল জাইত অছি। পূজাক সামগ্ৰী মে ফল, চানন, অক্ষত, দূৰি, তুলসী, বেলপাত, গুগুল, সিন্দুৰ, কৌড়ী, পংচগব্য কৰ্পূৰ আদি ৰহৈত ছৈক।

नवैद्य में अंकुरी मखान, पाँच तरहक फल, मधुर, केरा, नारियल पान, सुपारी आदि। कोजागराक अवसर पर नव विवाहित वरक बहुत उत्साह सहित चुमाओन कएल जाइत अछि।

নৱৈদ্য মে অংকুৰী মখান, পাঁচ তৰহক ফল, মধুৰ, কেৰা, নাৰিয়ল পান, সুপাৰী আদি। কোজাগৰাক অৱসৰ পৰ নৱ বিবাহিত বৰক বহুত উৎসাহ সহিত চুমাওন কএল জাইত অছি।

एहि दिन वरक ओतय कनियाँक ओतय सँ मखान, मधुर एवं दहीक भार जाइत छैक। वर लेल कपड़ा लत्ता रहैत छैक। वर कनियाँक ओतय सँ आएल नवीन वस्त्र धारण करैत छथि, काजरक टीका करैत छथि।

এহি দিন বৰক ওতয় কনিয়াঁক ওতয় সঁ মখান, মধুৰ এবং দহীক ভাৰ জাইত ছৈক। বৰ লেল কপড়া লত্তা ৰহৈত ছৈক। বৰ কনিয়াঁক ওতয় সঁ আএল নবীন বস্ত্ৰ ধাৰণ কৰৈত ছথি, কাজৰক টীকা কৰৈত ছথি।

कनियाँक ओतएस आएल पीढ़ी पर पूब मुँहे बैसैत छैथ। हुन्कर चुमाओन होइत छैन। कम सँ कम पाँच टा ब्राह्मण दूर्वाक्षत मन्त्र पढ़ि कँ आशिर्वाद दैत छथिन्ह।

কনিযাঁক ওতএস আএল পীঢ়ী পৰ পূৰ্ব মুঁহে বৈসৈত ছৈথ। শন্কৰ ছুমাওন হোগত ছৈন। কম সঁ কম পাঁচ টা ব্ৰাহ্মণ দূৰাক্ষত মন্ত্ৰ পঢ়ি কঁ আশিৰ্বাদ দৈত ছথিন্হ।

ओकर बाद हुनका सब कँ भोज भात आ पान सुपारी देल जाइत अछि।

ওকৰ বাঁদ শনকা সৰ কেঁ ভোজ ভাত আ পান সুপাৰী দেল জাগত অছি।

जहिना मिथिला में मिथिलाक पाबनि तिहार के महत्त्व अछि तहिना मिथिलाक मातृभाषा मिथिलाक्षर के ओतबे महत्त्व अछि।
जय मिथिला जय मैथिली !!

জহিনা মিথিলা মেঁ মিথিলাক পাৰনি তিহাৰ কে মহত্ত্বৰ অছি তহিনা মিথিলাক মাতৃভাষা মিথিলাক্ষৰ কে ওতৰেঁ মহত্ত্বৰ অছি।
জয় মিথিলা জয় মৈথিলী !!



अंजनी झा

ভগৱতী গীত

Page No.
Date

দেৱী দুৰ্গে উমা বিশ্ব জননী ৰমা যাঁ-
ও তাৰা, এক জগদম্বঁ তোহীঁ সহাৰা।
ও বৈশ্বৰী মাহামায়া সাৰে জগ কো-
ওহীঁ নে ৰঁনায়া, ৰূপ বিক্ৰাৰিকা কালিকা-
চন্দ্ৰিকা ষ্বণ্ডমালা এক জগদম্বঁ তোহীঁ সহাৰা।
সাধু সন্তোঁ কে ঘৰ সম্প্ৰদায়ে পাপিয়োঁ-
কে ঘৰ আপ আয়ে, পুত্ৰ হো ভী জদা-
তো ভী যাঁ কো সদা পুত্ৰ প্যাৰা এক-
জগদম্বঁ তোহীঁ সহাৰা।
সৈনজো ভী কি ওম হো মহেশ্বৰী ষ্বণ্ডদানী
বিৰানী ভৱানী, দাস দিনো কে কৰকে দয়া-
কে নজৰ কা ডাশাৰা এক জগদম্বঁ তোহীঁ সহাৰা
দেৱী দুৰ্গে উমা বিশ্ব জননী ৰমা ও তাৰা
এক জগদম্বঁ তোহীঁ সহাৰা।

১/১২/২০২০ পূনম ঝা
দিল্লী

छठी मैया कै गीत

কোন অপৰাধ হে ছঠী মৈয়া,
ৰেঁহী নিৰ্ধন ভেল ------2
সৰঁকেৰ দেলয়ৈ হে ছঠী মৈয়া,
অন্ন ধন সম্পতি কেৰ ঢ়েৰ ---2
ৰেঁহী কেৰ ৰেঁৰ হে ছঠী মৈয়া,
সৰঁহুক তানা কেৰ ঢ়েৰ ---2
কোন --------

এক ৰেঁৰ হেৰিয়ৌ হে ছঠী মৈয়া,
ৰেঁহী নোৰে-ঝোৰে ভেল ---- 2
সৰঁ অপৰাধ ছেযিযৌ, ৰেঁহী জল
ৰীঁচ ঠাঢ়, ৰেঁহী কলজোড়ী ঠাঢ়,
ৰেঁহী নোৰে-ঝোৰে ঠাঢ়।
কোন ------

স্বৰচিত অঞ্জনী ঝা
২৪/১১/২০২০

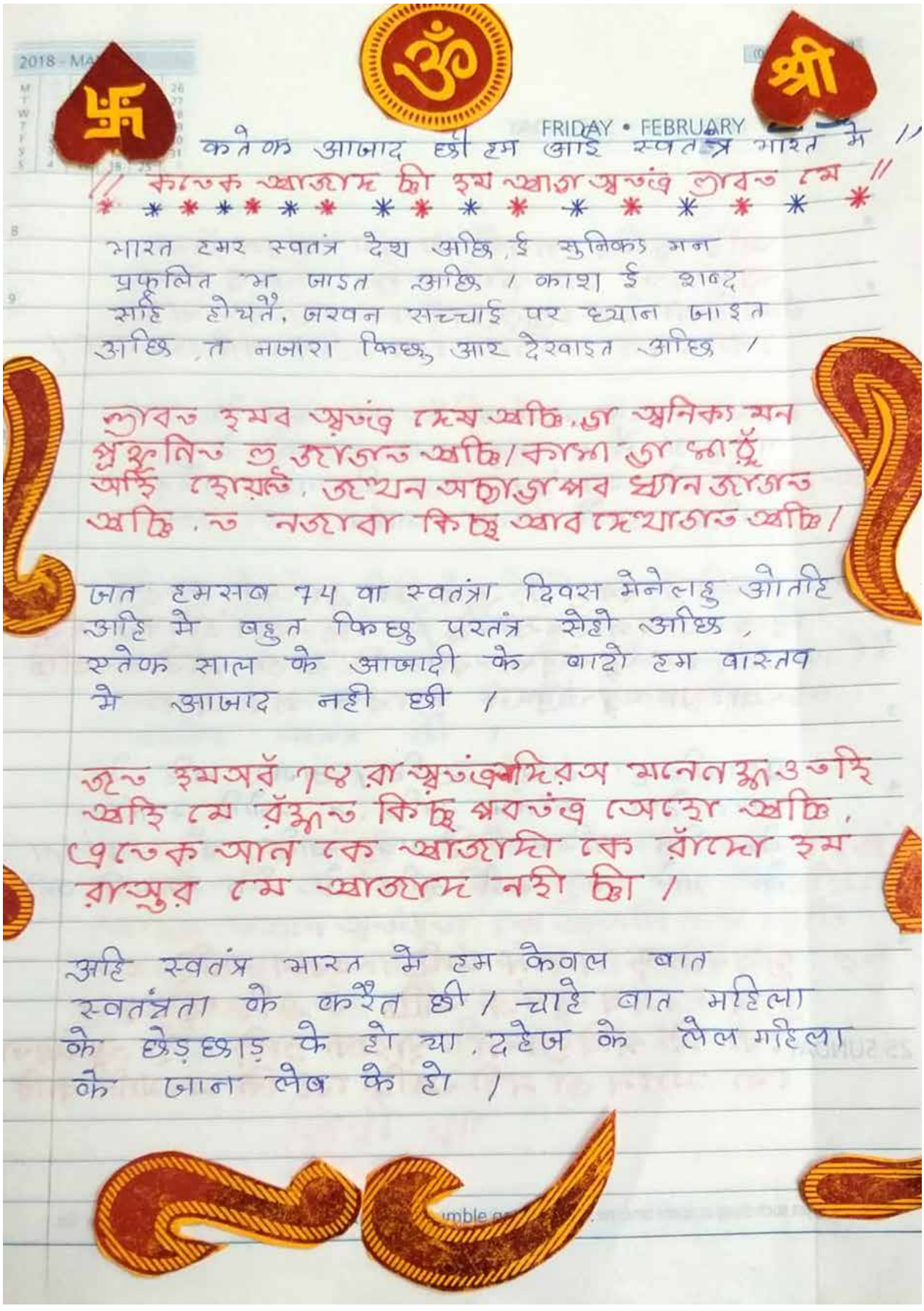

कतेक आजाद छी हम आई स्वतंत्र भारत मे //
// कत्तेक आजाद छी हम आइ स्वतंत्र भारत मे //

* * * * * * * * * * * * * * * * * *

भारत हमर स्वतंत्र देश अछि, ई सुनिकऽ मन प्रफुल्लित भ जाइत अछि / काश ई शब्द सही होयतै, जखन सच्चाई पर ध्यान जाइत अछि, त नजारा किछु आर देखाइत अछि /

भारत हमर स्वतंत्र देश अछि, ई सुनिकऽ मन प्रफुल्लित भ जाइत अछि / काश ई शब्द सही होयतै, जखन सच्चाई पर ध्यान जाइत अछि, त नजारा किछु आर देखाइत अछि /

जत हमसब 74 वा स्वतंत्रा दिवस मनेलहु ओतहि अहि मे बहुत किछु परतंत्र सेहो अछि, एतेक साल के आजादी के बादो हम वास्तव मे आजाद नही छी /

जत हमसबँ 74 रा स्वतंत्रदिवस मनेलहुओतहि अहि मे बँहुत किछु परतंत्र सेहो अछि, एतेक आन के आजादी के बाँदो हम वास्तव मे आजाद नही छी /

अहि स्वतंत्र भारत मे हम केवल बात स्वतंत्रता के करैत छी / चाहे बात महिला के छेड़छाड़ के हो या, दहेज के लेल महिला के जान लेब के हो /

अहि, स्वतंत्र भारत मे हम केरन राँत
स्वतंत्रता के कवैत छी। चाहे राँत
महिना के छेड़छाड़ के हो या दहेज
के नेन महिना के जान नेरँ के हो।

मारब, काटब, जाराएल ई सब भारत के आम
परिदृष्य छै। कतहु नजर उठाक्य देखू
अहि मे स्वतंत्रता कत दिखाइ परैत
अछि, आयो स्वतंत्र भारत पर एक

मारबँ, कार्टँ, जवायन ई अरँ भारत
के आम परिदृष्य छै। कतहु नजर उठाक्य देखू
अहि मे स्वतंत्रता कत दिखाइ परैत अछि
आयो स्वतंत्र भारत पर एक

प्रश्नचिन्ह लागल अछि। अगर सहि मे
भारत देश स्वतंत्र अछि, त ओहि स्वतंत्रता
के कि परिभाषा होबाक चाहि। हाँ, "स्वतंत्रता
के माने इ नही अछि जे कि मनमानि कि

प्रश्नचिन्ह लागल अछि। अगर अहि मे
भारत देश स्वतंत्र अछि, त ओहि स्वतंत्रता
के कि परिभाषा होबाक चाहि। हाँ, "स्वतंत्रता
के माने इ नही अछि जे कि मनमानि कि

Not such thi... spare time, no such thing as free time, no such thing ... u got is life time. Go.

अपन मर्यादा के विरोध कए सरेआम
गल्त कार्य करल जाई।
देश के हर व्यक्ति स्वतंत्रता के सही-सही
मतलब बुझै।

अपन मर्यादा के विरोध कए सरेआम
गलत कार्य करल जाए।
देश के हर व्यक्ति स्वतंत्रता के सही-सही
मतलब बुझै।

दोसर के बेटा-बेटी के सेहो अपना जेंका
मानै। कि सही छै कि गल्त ई करए से
पहिले सोचइ, तखने स्वतंत्रता के असली रूप देतै
आर फेर हमसब गर्व सँ कहि सकब कि हम
वास्तविक स्वतंत्र छी।
// जय हिन्द //

दोसर के बेटा-बेटी के सेहो अपना जेंका
मानै। कि सही छै कि गलत ई करए से
पहिले सोचइ, तखने स्वतंत्रता के असली रूप देतै
आर फेर हमसब गर्व सँ कहि सकब कि हम
वास्तविक स्वतंत्र छी।
// जय हिन्द //

जिन्नी आर
नोएडा

हम छी मिथिला

✍ शंकर कुमार (मधुपांश)

हम ओहि अतीतक छी बाँचल
अवशेष जकर संज्ञा मिथिला
हम देखि चुकल छी स्वाभिमान
एहि धरती केर जे नहि शिथिला

हम साग अयाचिक बाड़ी केर
अरुआयल, नबका थारी मे
हम मंडन मिश्रक ज्ञान आइ
छी फँसल कुतर्कक क्यारी मे

हम विद्यापति के वाणी छी
फूहड़ बलेल मंचक काते
शिव सिंहक ओ सिंहासन हम
छी कानि रहल चँहुदिशि नेते

हम वीर देखल सलहेस सनक
आ रानी रूप देखल लखिमा
हम कंदर्पी केर युद्धभूमि
नहिं पाबी अप्पन ओ गरिमा

हम कालिदास कें देखने छी
उच्चैठक मंदिर परिसर मे
हम देखल पराजय शंकर कें
बान्हल भारति के आँचर मे

हम नैका सन बनिजारा कें
छी संग देने नंदी बनि कें
हम एखनहु मैथिल मानस मे
छी लोरिक केर कथा बनि कें

हम मधुपक घसल अठन्नी छी
मृत बुचनिक पसरल हाथ उपर
हम सुमन किरण मणिपद्मक छी
सैंतल अजस्र साहित्य प्रखर

हम अमर बनल छी चंदा केर
रामायण मे वैदेही बनि
हम कृष्णजन्म मनबोधक छी
गाबथि जकरा मिथिला केर धनि

हम आइ पलायन युवजन के
छी देखि रहल नोरक नयने
पाबी नहि कत्तहु किंतु शरण
जनु थाकल टूटल सब अपने

हम बुढिआ माइक नयन नीर
जक्कर सुत कतहु विदेश बसै
हम बूढ बाप केर हियक पीड़
जकरा पर रिक्त दलान हँसै

हम गामक सुन्न पड़ल बाटक
छी उड़िआइत धूरा अनमन
हम भथल पोखरिक जाठि बनल
चँहुदिशि हेरै छी सजल नयन

हम कमला कोशी केर पानि
सँ डूबल खेतक आरि उपर
छी देखि रहल कृषकक आनन
सहसह करइत चिंता विषधर

सीता केर त्याग तपस्या हम
छी देखि रहल नारी शोषण
लव कुश केर लघुवय मे साहस
नित दिन देखी बच्चाक मरण

हम मर्यादा पुरुषोत्तम केर
पाबी नहि सक्षम युगल चरण
तैं आइ सरस्वति केर धरती
नहि लागि रहल अछि अप्पन सन

बेचारा शर्ट-पेंट पीस

✍ नागेंद्र ठाकुर

पेंट आ कमीज़ के कपड़ा देखबा में त सेहंतगर लगैत छैक, मुदा ओकर दबल दर्द के हम उजागर क रहल छी :-

रहै अपनो एक जमाना !
सजल रहै थानक ताना बाना !!
ग्वालियर, ग्रेसिम, मफतलाल !
जियाजी, डोनियर आ ओसवाल !!
सब ठोकइ छल ताल पर ताल !
हमरा पहिरि देखु चाल !!
समय के पहिया घुमलै !
थान सँ डिब्बा दिस बढ़लै !!
हीरो सब के जतई परलै पेट पर लात !
दर्जी सब के सेहो आफत भेलै भात !!
आब त रेडीमेड के जमाना छै !
ब्रांड त एक बहाना छै !!
सिर्फ सिलाई में दू जोड़ अंगा आनु !
पसिन्न त ठीक नै त दोसर मांगू !!
बेचारा दर्जी मरम्मत पर आबि गेल !
लेकिन फाटल फेर पहिरब,
ई केकरा भावि गेल !!
बेचारा पेंट -शर्ट पीस डिब्बे
तक सीमित रहल !
कहियो इ पेटार कहियो ओ
पेटार अहिना घुमैत रहल !!
सिर्फ खानापूर्ति के गिफ्ट पैकेट
बनि रही गेल !
ओकरा आगाँ में दिवाली के
सोनपापड़ी भेल फेल !!
बेचारा अदला बदली में
किया घर देखलक !
मुदा ओकर कपार डिब्बा सँ
आगाँ नही देखलक !!

नारीक शिक्षा

✍ दिव्या चौधरी

स्त्री समाजक ओ दर्पण छथि, जहि में आबऽ वाला भविष्य छुपल अछि। कोनो देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकासक लेल नारी के शिक्षित होयब बडऽ आवश्यक अछि। कोनो महिला शिक्षित हेथिन त ओ अप्पन बच्चा जे आबऽ वाला काल्हि के भविष्य अछि, हुनकर सही शिक्षा, ज्ञान आ मार्गदर्शन देथिन, किएक त कोनो बच्चा के प्रथम शिक्षिका हुनकर 'माँ' हेथिन। पं॰ जवाहर लाल नेहरु के कथन छन्हि कि "कोनो राष्ट्र के महिला के स्थिति देख कऽ ओहि राष्ट्र के हालत कहल जा सकैत अछि।

महिला शिक्षा के नज़र - अन्दाज़ करब कोनो ख़तरा सऽ कम नहि अछि, किएक त अकर सीधा असर आबऽ वाला पीढ़ी पर पड़ैत छहि। एक महिला के लेल शिक्षा ओतबेक ज़रूरी छहि जेतबा एक पुरुष के लेल, अप्पन देश के ई बहुत पईग विडम्बना अछि कि नारी अप्पन अधिकार सऽ वंचित छथि। जखन कि हम सब नारी के शिक्षित कऽ अप्पन उज्ज्वल भविष्य के कल्पना कऽ सकैत छी। एक नारी अप्पन जीवन में बेटी, बहिन, पत्नी, माँ ज़ेहन कतेक रिश्ता निभाबैत छथि, किंतु ई सब रिश्ता स पहिले एक नारी जे एक देश के नागरिक छथि आ शिक्षा पायब हुनकर अधिकार छन्हि। आई नारी अपना आप के शिक्षित कऽ पुरुष के कंधा सऽ कंधा मिला कऽ चलि रहल छथि आ अप्पन पैर पर ठार भऽ आत्मनिर्भर भऽ रहल छथि।

पौराणिक काल सऽ आज़ादी आ ओकर बाद आई तक महिला साक्षरता के प्रयास कएल जा रहल अछि आ संगहि प्रगति सेहो भऽ रहल अछि। भारत में नारी के वर्तमान स्थिति के समझै लेल हुनकर इतिहास के समझनाई आवश्यक अछि। भारत में नारी के शिक्षा के इतिहास वैदिक काल स जुड़ल अछि। लगभग 3000 से अधिक वर्ष पूर्व वैदिक काल में नारी आ पुरुष के समान अधिकार प्राप्त छलन्हि। नारी के बिना कोनो यज्ञ-हवन पूर्ण नहि मानल जाहि छल आ नारी के देवी के समान समझल जाहि छल। वैदिक साहित्य में महिला के उल्लेख भेटति अछि, जाहि स ई कहल जा सकैत अछि कि ओहि समय में सेहो नारी के शिक्षा महत्त्वपूर्ण मानल जाहि छल। ब्रिटिश काल में पहिल बेर 'गर्ल्स बोर्डिंग स्कूल' के स्थापना भेल। कन्या सब लेल बहुत नव विद्यालय के स्थापना अहि समय में कएल गेल किंतु स्वतंत्रता काल में महिला के साक्षरता दर बडऽ कम छल, जाहिके ध्यान में रखैत सरकार समय- समय पर कए टा योजना लागू कएलक। अखनो ई कार्य सन्तुष्टि जनक स्तर तक नहि पहुँचल। महिला शिक्षा के लेल व्यापक स्तर पर जागरुकता फैलाबऽ के पड़त आ अप्पन अधिकार के प्रति प्रेरित कर पड़एत, जाहि सऽ ओ अप्पन समाज, देश के बदलऽ में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाबैत भारत सरकार द्वारा महिला शिक्षा के आओर बेहतर बनबैत लेल प्रमुख योजना लागू कएल गेल:-

1.बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

2.कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना

3.महिला समाख्या कार्यक्रम

4.राष्ट्रीय शिक्षा नीति

5.सर्व शिक्षा अभियान

6.इंदिरा महिला योजना

7.बालिका समृद्धि योजना

8.राष्ट्रीय महिला कोष

9.महिला समृद्धि योजना

10.रोज़गार आ आमदनी हेतु प्रशिक्षण केंद्र

यूनिसेफ़ सेहो कन्या के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लेल भारत सरकार संगहि कार्य कऽ रहल अछि।

महिला के शिक्षा आ स्थिति में कतेक सुधार कार्य कएल गेल आओर अखनो कएल जा रहल अछि किन्तु सरकार द्वारा एतेक योजना लागू कएलाक बादो महिला ओहि के पूर्ण लाभ नहि उठा पाएब रहल छथि। भारत में महिला शिक्षा के प्रभावित करऽ वाला कतेक कारण अछि जेना कि:- माता-पिता के ख़राब आर्थिक स्थिति के कारण शिक्षा सऽ वंचित होयब, नाबालिग़ उम्र में विवाह, कुपोषण आ भरपेट खाना नहि भेटब, बीमारी आ संक्रमण सऽ कमज़ोरी, यौन उत्पीड़न, समाज में बढ़ैत अपराध, कतैक तरह के सामाजिक पाबंदी, कतेक तरह के प्रतिबंध, लैंगिक असमानता आदि। ग्रामीण क्षेत्र के अपेक्षा शहर के स्थिति बेहतर अछि। अहि सऽ हम सब कहि सकैत छी कि महिला के हुनकर अधिकार आ शिक्षा के प्रति जागरुकता कएल जाए। हुनका सबके आगू बढ़बऽ के लेल प्रेरित करऽ पड़त, तखन जा कऽ महिला के स्थिति में सुधार होयत आ हम अप्पन देश के उज्ज्वल भविष्यक कल्पना कऽ सकैत छी।

दरभंगा बिहार

मिथिला दर्शन

✍ मणि 'आमारुपी'

नाम दिनकर हम नोत द' रहल
सिमरिया कातक छी हम मैथिल रखवार
आउ करु बाउ मिथिलाक दर्शन
बिझ्झो अहाँ करु सहर्ष स्वीकार ॥१॥

रेणु जी छथि ठाढ़ फ़ारबिसगंजमे
मैला आँचलक संगे करताह जयजयकार
आरसी राजकमल खत्री बेनीपुरी
वाह यात्री हरिमोहन हमर साहित्यकार ॥२॥

वेद पुराण लिखल जहि भूमिसँ
आउ करब हम एतय सत्कार
ई पावन भूमि जनक याज्ञवल्क्यक
रामायणक बुझू एतयै सूत्रधार ॥३॥

धीया सियाक अहाँ आँगन देखब
पुनौरा धामक अलगे संस्कार
पाहुनक' हम भगवान बुझैत छी
एतए आबि अहाँ करु उपकार ॥४॥

छै कालिदासक डीह उच्चैठ एतयै
जाएब भगवती करतिह कल्याण
उगना भगवान चाकर बनि ऐलाह
ओ बिस्पी थिक विद्यापतिक धाम ॥५॥

मंडन आयाची भारती वाचस्पति शंकर
शंकराचार्य केलाह एहि धरतीकेँ प्रणाम
की' तेनालीराम हुनकोसँ बेसी
हमर गोनू झाक अलगे कीर्तिमान ॥६॥

मौनी पौती मोथीक पटिया
बड्ड सुन्नर भेटत बाँसक समान
भागलपुरमे सिल्क अहाँ कीनू
मिथिला पेंटिग अछि हमर दिआमान ॥७॥

लीची केराक अलगे सुवाद छैक
रंग बिरंगक खाएब अहाँ आम
यौ बड्ड नामी छै खान- पान एतुका
तिलकोरक तरुआक सुनब बखान ॥८॥

भोजनक एतए सचार लगै छैक
माछ मधुर संग पान मखान
सामा चकेबा झिझिया झरनी छै'
रसनचौकी पीपहीक बेस इंतज़ाम ॥९॥

अल्हा रुदल राजा सलहेसक
कथा पिहानी देखबै गामे गाम
वाह डोमकच जट-जटिन पमरिया
नटुआ नाच देखै लेल आउ श्रीमान ॥१०॥

राजदरबार दडिभंगा राजनगरक
विश्वामित्र गौतमकेँ अछि ई स्थान
बलिराजगढ़क अहाँ खोदिकेँ देखू
आउ पाग दोपटा सँ करब सम्मान ॥११॥

हत्या

✍ श्याम झा

बहुत दिन सँ सोचि रहल छलहुँ
लिखतहुँ एकटा सुच्चा कविता
मुदा लिख क' एकटा पाँति
मिटा दैत रहलहुँ पूरा कविता, शीर्ष सँ
जे भर्त्सना नहि करे लोग
विरोध मे हमर आ हमर कविता क'

भारत'क राजधानी जकर बीचो बीच
दिल्ली क' मध्य बंगला साहिब आ चर्च
जत' लिखल कविता क' दोसर पाँति
मुदा मिटा दैलहुँ पूरा कविता, शीर्ष सँ
जे धर्म क' नाम पर डहकन नहि दिए लोग
विरोध मे हमर देह आ हमर रंग देखि क'

जखन समुचा जन जाती सुतल रहै निचैन
ओहि बिच जागल राति होटल क' इर्द गिर्द
गाड़ी मे अर्ध नग्न सँग मदायल यौवन
लाज बचबै लेल बढलहुँ सौंझे राजपथ पर
जत' सुतल देशक संविधान चौबटिया पर
जकरा पैर सँ दौनी करैत नेता क' भीड़
ओतहिए लीखल कविता क' चारिम पाँति
मुदा मिटा देल पूरा कविता, शीर्ष सँ
जे लोग हमरा देशद्रोही कहि कलंक नहि दे

निकली गेलहुँ घुरमा खाएत कॉपरनिकस सँ
जत' श्रमनायक भविष्य लेल रति मे लीन
सुनसान पड़ल रस्ता कातक डिवाइडर पर
जत' लिखल हम कविता क' पाँचम पाँति
मुदा मिटा देलहुँ पूरा कविता, शीर्ष सँ
जे लोग हमर निष्ठा पर प्रश्न नहि करैथ
आ मुहँ झाँपेत बढलहुँ राज्य मार्ग सँ
हमरा सँग जागल रहै चान आ तरेगन
देखैत, हमरा आ हमर कविता क'
जे आए कोना हम ठेंठी दाबी रहल छलिए
डरे मारे ओहि साहित्यकार सब सँ
जे इनारक बेंग जकाँ मेला मे देखाए छथिन

हमरा एखनहुँ याद अछि ओ राति
हम कविताक पाँति लेल आखर ताकैत
के लिए कोना कोना क' हत्या
एक दु तीन चारि आ पाँच हँ पूरा पाँच
भरल समाज मे कविताक जन्म द'
के लिए अपने हाथे एकटा निर्मम हत्या

"वरीय अभियंता"
गाम रजौर, मधेपुर, झंझारपुर, मधुबनी

पिपरक गाछ

✍ श्याम चन्द्र मिश्र

बैसाख–जेठक महिना। पनपिआई देबय लेल खेत पर गेल रही, गेलहुँ तऽ सकाले मुदा ओत सँ आब मे विलम्ब भऽ गेल। दिनकरक किरण प्रचण्ड भऽ गेल रहैक, रज –कण भनसारक कोहा मे राखल बालु जकाँ धीपल जा रहल छल। डेग राखब से मुश्किल। कहुना कऽ दूभि पर डेग दैत घर आबि रहल छलहुँ। बाधक चऽर मे एकोटा गाछ –बिरिछ नहि रहैय, कतौ –कतौ छोट –छिन छलैको सेसूर्यदेवक कोपभाजन बनल छल। गमछा के माथ पर रखने हकमैत – दुकमैत घर एलहुँ।

घर लग एकटा पुरान पिपरक गाछ अछि। सेवाक अभाव मे एना तऽ डारि –पात सुखा रहल छैक, मुदा तइयो ओहि तर मे छाहैर रहैत छैक।ओत बैस कऽ चैनक साँस लेलउँ। लोहैछ अतेक गेल रही जे बैसल नहि भेल।

गमछा के ओछा ओहि पर चित्त भऽ गेलहुँ। पिपरक शीतल –मन्द बसातक स्पर्श सँ आलस्य आबि गेल आ आँखि अपने – आप मुना गेल।

निश्चिन्त सँ सूतल देखि मानु पीपर के बर्दाश्त नहि भेलई। पातक दोग दऽ कऽदुपहरियाक तेज रौद मुँह पर परल। तिलमिलाक उठलउँ ऊपर देखैत छी तऽ लागल जेना पीपर अपन विजय पर मुस्कुरा रहल अछि। सभ पात हरहराय लगलइ। बयार कनि आउरो जोर सँ बहय लगलइ। फेर हम सुतय के उपक्रम केलहुँ मुदा बदला लेब लेल मानु फेर सभ पात शान्त भऽ गेलइ।

हमर मन खिन्न भऽ गेल। बरबराइते ओहि ठाम सँ उठि गेलहुँ आ स्नान करय लेल इनार पर गेलहुँ।

इनारक शीतल जल सँ स्नान केलहुँ। जहिना रौद मे मन जरल छल तहिना जल सँ शीतलो भऽ गेल। घर मे जे नीक –बेजाय बनल छलैक तकरा उदरस्थ कऽ पुनः सेज लय ओत पहुँचलहुँ। छाहैर मे सेज पसारि करबट बदल लगलहुँ।

सूतब की कपार, फेर दोग दऽ कऽ रौद आबय लागल। ऊपर देखैत छी तऽलागल जेना पीपर तमसा गेल अछि। मने - मन बुदबुदेलहुँ –"कथी के बदला लैत छी हमरा सँ ? कनिक अपना छाहैर मे सूतऽ देब तऽ की होयत ?सभ पात शान्त रहैक, मानू पीपर गम्भीर भऽ गेलहोथि। प्रश्नवाचक दृष्टि सँ जखन पुनः हम देखलियै तऽ लागल जेना मौनभाषा मे हमरा उपराग दऽ रहल छथि।मानू कहि रहलाह जे–"वास्तव मे मानव बड्ड स्वार्थी होइत अछि।देख, तू अपने –आप के, जन्म सँ लऽ कऽ अखन धरि हमहिं पाललियौ –पोषलियौ।आब जखन हम वृद्ध भऽ गेलहुँ हैं, तऽ कनिको ध्यान नहि दैत छह। किया ----?

एहि प्रश्न सँ हमर मन उद्विग्न भऽ गेल। हिम्मत कय हम पुछलियैन –"हमरा सँ कुन अपराध भऽ गेल ? किया हमरा पर तमसा गेलहुँ ? कहऽ लगलैथ –"तमसैइयौ नहि। तोहीं नहि, पूरा गाम अपराधी अछि। सौसे गामक धिया –पुता हमरा देह पर चढ़ि हमर केश (पात) नोचैत अछि, हमर डाढि तोरैत अछि, रस्सी बाँधि झूला झुलैत अछि, हम कहियो किछु नहि कहलियौ। ''

"से तऽ अहाँ सत्ते कहै छी। '' ई कहि हम हुनके पक्ष लेलहुँ।

अखनो हुनकर तामस शान्त नहि भेलैन्ह। लागल जेना भकभकायले छथि। पुनः कहऽ लगलाह –"कुनो हाक –डाक होइत छैइक तऽ सबसँ पहिले हमरे लग दौड़ैत अबैत छैंह। कुनो पर –पनचैती करऽ के रहैत छैक तऽ अत्तैह जाइत छैंह। गामक एक –एकटा काजक हम गवाह छियौ। तोहर सबहक सुख –दुख मे हरदम संग रहलियौ, मुदा तू सभअतेक कृतघ्न छैं कि हमरा उपेक्षा के दृष्टि सँ देखैत छैं। कनिको तोरा सभ मे कृतज्ञता के भाव नहि छौउक।महाकृतघ्न महास्वार्थी छैं तू सभ। '' कनि –कनि कऽ पात डोल लगलैइ।लागल जेना तामस मे देह हिल लगलैन। हुनकर स्थिति देखि हमहुँ सकपका गेलहुँ। मन मे दुबिधा होब लागल जे हिनका सँ बहस करी या नहि करी। मुदा हुनकर तामस हमरा नीक लागल। फेर कनि खौझाब के मन भऽ गेल। कहलियैन्ह –"एना किया तमसा कऽ हमरा उपराग दैइत छी, कनि सिनेहो सँ हमरा सँ बतिया लियऽ ने। ''

लागल जे आब कनिक शान्त भेलैइथ है।पात हिलनाइ बंद भऽ गेलइ।हुनका देखि कऽ लागल जे ओहो बुझैत छथिन्ह जे धिया –पुता के बेसी की कहियै। मुदा मन मे भड़ास रहबे करैन्ह। आइ ओहि भड़ास के निकाल के मौका भेट गेल छन्हि। ओहो मौका चूक नहि चाहैत छथि। हमरा कह लगलाह –"कहियौ नहि। तोहर पितामह के पोसलियौ, तोहर बाप के हम खेलेलियौ, आब तोहर सबहक रक्षा करैत छियौ। कह करैत छियौ कि नहि ? रौद –बसात, बरखा –बुन्नी, बिजली –पाथर सबके सहैत तोरा सभके जीवन- दान दैत छियौ। सबटा प्रदूषण के पी कऽ तोरा सभके शुद्ध हवा दैत छियौ। तइयो हमरा दिस सँ आँखि मुनने रहैत छह। कहियो हमर तरबदूत करैत जाइत छह ? घरक बूढ़ जकाँ ई समाज हमरो उपेक्षा करैइया।''

आब कनिक हुनकर दर्द के सहलबैइत हम कहलियैन –"एहन बात नहि छइ पीपर बाबा। हम अहाँ के सेवा –शुशुर्खा करब। '' हुनका मानु हमर बात पर विश्वासे नहि भेलैन्ह। ऊपर देखलउँ तऽ देखलियै जे किछु पात डोलि रहल छलैक।

हम हाथ जोड़ैत कहलियैन –"हम अहाँ के की सेवा करू। '''

आब लागल जे हुनका कनिक हमरा पर विश्वास भेलैन्ह हैं। आब सेवाक लेल कहताह। सैह भेलइ। मानु कहलगलाह– "बौआ, अहाँ अखन छोट छी। अहाँ के डटलाह सँ या उपराग देला सँ कुन फायदा। गामक बूढ़बो सभ हमरा दिस ध्यान नहि दैइत अछि। कियो हमरा जड़ि के कोरि कऽ पानि तक नहि दैइया। हमरा देह पर बांझी लटकल अछि तकरा कियो ने हटबैया। सौंसे देह क्रीड़ा –मकोड़ा लुधकल रहैया तकरा हटाब के कियो प्रयास तक नहि करैया। गौआँ – घरुआ कियो कनिको ध्यान नहि दैइया। तू ही कहऽ, कियो दइया ?

हमरा किछु नहि फुरा रहल छल। वास्तव मे जखन जड़ि सँ लऽ कऽ फुनगी तक देखलियै तऽ अपन अपराधक बोध भेल। माफी मंगैत कहलियैन्ह –"अखन धरि अनभिज्ञ छलहुँ, आब ज्ञान भेल। जरूर अहाँ के सेवा करब।''

हमर ई बात सुनि जेना सब पात हरहराय लगलैइ। लागल जेना व्यंग्य सँ मुस्कुरा रहल होइथ। हुनका जेना स्वार्थी मानव पर विश्वासे नहि भेलैन्ह। लागल जेना कहि रहल होथि –"हँ रौ, तहूँ ओहिना करबैं। सभ एहि ठाम आबि कऽ बडु किछु कहैया मुदा तरबदूत कियो नहि करैया।कियो घूमि कऽ देखइया तक नहि।

एहि कथन सँ लागल जे वास्तव मे ई बड्ड दुखी छथि।हमरा सभ पर रंच मात्रो विश्वास नहि छन्हि। डरे आब हमरा बाजऽ के हिम्मत नहि भेल, कहीं फेर ने डॉ.ट लागैइथ। ताहि द्वारे मने –मन कहलियैन्ह –"अहाँ के की सेवा करू, आब तऽ अहाँ पाँच –दस साल के मेहमान छी। '' ऊपर कौआ काँउ –काँउ करऽ लगलैइ। मानू हमर मनक बात बूझि गेल होइथ आ ओहि कारण हमरा ऊपर क्रोधित भऽ गेलैइथ। लागल जेना कहि रहल होथि –"तू सभ मूर्ख छैं, नादान छैं। तू जे सोचैत छैं जे ई बूढ़वा पाँच दसे साल जीत से तोहर भ्रम छौक। जाबैत धरि गामक स्त्रीगण सभ हमरा जल –फूल चढ़बैत रहतीह, पूजा करैत रहतीह ताबैत धरि हमरा मे प्राण रहबे करत। इहै ने हैत जे हम दुख काटि कऽ जीब। जखन एहि मृत्युभुवन पर आयल छी तऽ दुख –सुख भोगहे पड़त। ओहुना जे एहि धराधाम पर जन्म लेलक तकर एक दिन मृत्यु हेबे करतैइ।''

एहि वेदान्त वचन के सुनि मने –मन कहलियैन– "तखन किया जीबऽ लेल अतेक लालसा अछि, कियाक ने जल्दी मरि (सुखा) जाइत छी। '' मानू हमर मनक भाव बुझि गेल होइथ। तखने सभ चिड़ैय उड़ि गेलइ।

एहि वार्ताक्रम मे हमरा आलस्य आब लागल। सूरजक किरण पटिया पर नहि आबि रहल छल। ई देखि हम ओहि पर पड़ि रहलँउ। आँखि लगले रहय कि एकटा कौआ बीट कऽ देलक। आँखि खुजि गेल। ऊपर देखैत छी तऽ एकोटा पात नहि डोलि रहल छलैक। घाम सँ देह लथ –पथ छल। झट सँ उठलउँ। पात सँ बीट के साफ कऽ गमछा सँ हवा करऽ लगलउँ। ई देखि मानू पीपर के हँसी लागि गेलैन्ह। लागल कहि रहल होथि जे –"बच्चा ! एखने तू मने –मन सोचैत छलाह है कि बुढ़वा मरि किया नहि जाइत अछि, निठाह कऽ सुखा किया नहि जाइत अछि। अखन हम हरियर छी, छाँह दइत छियौ तखन तऽ एत्ते घामे –पसीने नहा गेलह। जँ हम सुखा जायब तखन तोहर सभहक की हाल हेतौउ। ''

ओहि क्षण हुनकर बातक गूढ़ार्थ नहि बुझलियै। परञ्च मने –मन अपन सोच पर लज्जित भऽ गेलँउ।

लागल जेना कुनो हम बरका भारी अपराध कऽ लेलउँह। तखने हम ओहि पीपर के प्रणाम करैत कहलियैन्ह –"जे अहाँ महान छी। स्वार्थी मनुख के लेल दिन –राति दुख सहैत सदा शीतल छाहैर, मन्द –सुगन्ध पवन प्रदान कऽ जीवन दइत छी। अहाँक उपकारक बदला हम सभ नहि चुका सकैत छी। आइ हम अहाँक देह छुबि कऽ सपत खाइत छी जे आजीवन अहाँ के सेवा शुश्रुखा करब। ''

सबटा पात शान्त रहैक।सूर्यदेव सेहो पच्छिम दिस बढ़ि रहल छलैथ। चिड़ैइ – चुनमुनसभ अपन –अपन नीड दिस जाय लेल मन बनबैत रहय। बाध सँ माल जाल सभ घरक रास्ता धयने रहय। हमरो की फूरायल की नहि, तुरन्त ओहि ठाम सँ उठलउँ। जोश मे आंगन सँ कोदारि –टेंगारी आनि हुनकर सेवा करय लगलहुँ। सबसँ पहिले हुनकर जड़ि के कोरिएलउँ, चारू कात माँटी देलियैय। जे हुनकर नस देखाइत रहैन तिनका झपलउँ आ इनार सँ दस –पन्द्रह बाल्टी जल सँ हुनका नहेलउँ।ओकर बाद टेंगारी सँ जतेक बांझी आ अन्य किछु लटकल रहैन तकरा सभ के कटलउँ। डाकबाबू घरक पोताई होइत रहैन्ह ओत सँ थोड़े चून चोरा कऽ अनलउँ आ ओकरा घोरि कऽ हुनकर पूरा मालिश केलँउ।

हमर उत्साह देखि दोसरो धिया –पुता हमर संग देबय लागल। आब हमर टोली प्रतिदिन पिपरक सेवा करय लागल। धीरे – धीरे बूढ़ो –पुरान सभ सलाह देबय लगलैथ। छः महीना धरि हुनकर सेवा भेलइन ओकर बाद देखैइत छी जे पुनः गाछ मे नव –नव कोपल आब लगलइ। लाल – लाल नवका पात के देखि मानू ओ प्रसन्न भऽ कऽ हमरा आशीर्वाद दऽ रहल होइथ। हुनका प्रसन्न देखि हमरो मन प्रसन्न भेल। सेवाक महत्त्व नीक सँ आब बुझलियै। बुझबो कियाक नहि करितीयै– "जे सम्पूर्ण जीवन हमरा लेल समर्पित कयने छथि कि हुनका लेल हमरो किछु कर्तव्य नहि अछि ?''

आब देखैइत छी जे आंगनक, टोल – पड़ोसक आ गाम भरि के धिया –पुता सभ ओहि पिपरक छाहैर मे आबि खेलाइया – धुपाइया, बूढ़ सभ गप्प – सप्प करैया। स्त्रीगण सभ गीत गाबैत पूजा करय लेल अबैत छथि। पीपरो खुश, हमहुँ खुश आ पूरा गाम खुश।

भवन विद्यालय, पंचकूला (हरियाणा)
मूल निवासी –ग्राम + पोस्ट -
पुरसौलिया, वाया - जयनगर,
मधुबनी, बिहार
मो० - 9814757328

मातृभाषा

✍ उज्ज्वल झा

बचपन स ब्रह्मपुत्र के कोरा में रहैत कमला सं भेट बहुत कम भेल, लेकिन हमर दीदी के बियाह में २ महिना मिथिलांचल में रहि-क हमरा अपन भाषा बाजबला सब गोटे स भेट भेल, २ महिना रहि-क एकरो ज्ञात भेल की मिथिलांचल स दूर रह बला सबके मिथिला भाषा के रक्षा करके जतेक मोन अईछ ओत्तेक बुझाईया मिथिला के छाहैर में रहबला सबके नई अईछ।

मामा घर त बरू मधुबनी में अईछ त सब गोटे मैथिली बैजैत छेथिन बहुत कम गोटे या कहूं की आई के पीढ़ी बला सब में किछ गोटे हिंदी में बर्तलाप करैत छेथिन, ओना कोनो दिक्कत नई अईछ हमरा हिंदी बाज स लेकिन मैथिली भाषा ईयाह चक्कर में विलुप्त भ रहल अईछ, हिंदी में एकटा कहावत छई, "हमें तो अपनों ने लुटा गैरों में कहां दम था, कस्ती भी वहीं डूबी जहां पानी कम था।" अपन सबहक संस्कृति के सेहो ओहा हाल अईछ, आब यदी अपन लोकसब घर पर दोसर भाषा के प्रयोग करथिन त मैथिली भाषा के रक्षा केना हैत, ईत भोगेल हिंदी भाषी जिनका मैथिली आबैत छईन लेकिन हिंदी में बात करैत छथिन।

आब बात करैत छी हमर पैतृक-गाम (अर्थात बाबूजी के गाम), जेकी भेल सकरी,भारत-नेपाल बॉर्डर में स्तिथ गाम अईछ। मधुबनी के महत्व त हमरा तहिया पता लागल जहिया हम अपन दीदी के बियाह में बाबूजी के गाम गेलौ, हमर मामा गाम में ५०में१ गोटे हिंदी बजैत छेथिन, यानी कि ०.४% लोग, सेहो आई के पीढ़ी या कहूं की, "20's kids" ओना त हमहुं 20's kids ए कहैब लेकिन हम, मैथिली बुईझतो छियई आर बाजहो आबैत अइछ, आब बात भेल की हम गेलऊ बाबूजी के गाम त ओत् पहिल एक महिना हमरा घुम-फिर मौसम स घुल-मिल में बीत गेल। हमर दादाजी आर मैझला दादाजी दुनू गोटे बहुत बिद्वान रहथिन, अपन बाल्यकाल में दादाजी सा भेट भेल ओ अइछ ता याद नई लेकिन हुनका सबसे ज्ञान अर्जित केनाई हमर भाग्य में नई छला, जत् हमर मैझला दादाजी मैथिली(देवनागरी लिपि) में किताब लिखने छेथिन, वैह गाम में हमरा बाकी के एक महिना भाषा बुझा में लैग गेल। हमरा सबके मैथिली भाषा नानाजी बजनाई सीखेने छैथ, बचपन स मातृक सा जुड़ल रहलऊ लेकिन पैत्रिक गाम स बात-चीत भेट-घाट नई छला त अहिबर मिल के बढ़िया अवसर छला, जखन गाम पहुंचलौ त हमर कक्का,बरका बाबूजी,काकी सब गोटे ओना त मैथिली में बात करैत छेथिन लेकिन हमरा सा बात कर काल में हिंदी में करैत छेथिन, अलग भाषा में ओना त हमरा कोनो आपत्ति नई अईछ, हमरा अपने मैथिली, हिंदी, इंग्लिश, असमिया, सिल्हेटी ई सब भाषा आबैत अईछ,लेकिन यदि अपन गाम में हिंदी में बात करू त असम आर मिथिलांचल में बहुत अंतर नई रहत, संस्कृति के पहचान कोनो झंडा नई दैत अईछ, भाषा स संस्कृति के पहचान होएत अईछ। कक्का सब गोटे हमरा सा हमर पितियौत भाई/बहिन सब-स हिंदी या नेपाली में बात करैत छेथिन, एना संवादहीनता के उत्पत्ति होइत अईछ। हमर दीदी के बियाह के १मास उपरांत हमर काक्का के देहांत भो गेलैन, उनकर श्राध कर्म के समय हमर भेट औरो किछ पितियौत भाई/ बहिन स भेल, आब हिनका सब गोटे के बस नेपाली बाज अबैत छलैन, संवादहीनता यदि अपन परिवार में उत्पन्न हुआ लागा त दोसर स की आशा रखल जा-सकेत अइछ। भाषा के जानकारी भेनाई त सबसे बरका बात अईछ जतेक भाषा आएत ओतेक निक, लेकिन मातृ भाषा छोरड़नाई माँ के छौरैक समान होइत अईछ, सब गोटे सा भेट क-क यदि अपन जंका (अपनत्व)नई लागल त कथी गाम घुमलऊ।

विरह - भयाओन

✍ आनंद मोहन झा

एकसरि भवन भयाओन रे,
मोरा मन नहि भावे।
सब चलि गेल छोड़ि कत्तय रे,
नहि आब कियो आवे।।
खन हेरी ओसरा खनहि घर रे
आ खनहि दलान।
ककरो कतहु नहि दरसन रे
मन रह झुझुआन।।
जकरा स करितहुँ बतिया रे
सेहो गेला दूर देश।
ठोरक रंग सुखायल रे,
मन फटय कुहेश।।
गामक छोरलहुं हमहूं रे
सब बाट डगरिया।
एतय मगन सब अपनहि रे,
नीक लाग ने शहरिया।।
डेग डेग हमहूँ पाओल रे
नित्तहि अपमान।
चलै चलु अपनहि गामहिं रे,
चलु करी ओरियान।।

व्यवस्थापक :- पोथी अहाँक दुआरि धरि
आनलाईन मैथिली पोथी विक्रय केंद्र
फरीदाबाद, हरियाणा

मातृभाषाक महत्व

✍ साधना सुनील झा

मातृभाषाक मानव के विकास के लेल ओतबे आवश्यक अछि जतेक शिशु के शारीरिक विकास के लेल माय के दूध। जे भाषा जन्मे सं बाल्यावस्था में माय - बाप स शिशु सिखैत अछि यैह भेल मातृभाषा। शिशु वे नै कोनो प्राणी मातृभाषाक माध्यम सं जतेक शीघ्र कोनो बात के बुझि जाई छै ततेक आन भाषा द्वारा नहि। इयह कारण अछि जे बिहारक शिक्षा समिति एहि प्रस्ताव कए स्वीकृत क लेने अछि जे प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषाक माध्यम सँ हेबाक चाही। मातृभाषा आन सब भाषा सँ मीठ लगैत अछि। लेकिन लोक मातृभाषाए नै राष्ट्रभाषा तक के छोरि विदेशी भाषा अर्थात अंग्रेज़ी के माध्यम सं अपन शिशु के प्रारंभिक शिक्षा दैत छथि। मातृभाषा में पढेनाई हुनका सब कए इज्जत पर परैइ छैन। एतबे नै जे बच्चा कए अंग्रेजी में अध्ययन नै कयल होई छै तकर मजाक उरायल जाईत अछि। विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा प्राप्त करवा ब मे अबोध शिशु के मस्तिष्क पर जे बोझ राखल जाइत अछि से भारीक संग संग अत्यन्त कष्टप्रद होईत अछि। नेनहिँसँ माय बाबू के जगह मम्मी डैडी सिखायल जायत अछि। जकर कि कोनो अर्थ नै छै। एहन भाषा सिख क कि लाभ जकर उत्पत्तिक कोनो मूल स्त्रोते नहि छै। विदेशी भाषा के भूत तेना भऽ क सवार भऽ जायत जे सामान्य लोकहु सँ ओकर आचार विचार भिन्न भ जाइत छैक। आगू जा क शिशु अपन परम्परा आ संस्कृति छोड़ि विदेशी संस्कृति अपना लै छैथ। मातृभाषाक माध्यम सं भाषा आ साहित्येटा कए विकास नहि होइ छै संस्कृति ओ संस्कार पर सेहो एकर स्थायी प्रभाव परैत छैक। शिशु के मानसिक रूप सं तथा शारीरिक रूप सँ स्वस्थ रखना में मातृभाषा क अहम भूमिका अछि। अहि कारण सं मनोवैज्ञानिक सेहो मातृभाषा क माध्यम सँ प्राथमिक शिक्षा के अनिवार्यता स्वीकार कयलनि छथि। भारत जखन स्वतंत्र भेल तँ प्रान्तीय भाषा सभक आधार पर राज्य सभक नामकरण कयल गेल। जेना तमिल सं तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश मराठी सँ महाराष्ट्र, गुजराती सं गुजरात, बंगला सं बंगाल, उडिया सं उडीसा, एवं आसामी सं आसाम। लेकिन दुर्भाग्यक गप्प जे बिहार क भाषा 'बिहारी ' कहि राष्ट्र भाषा हिंदी के मानि लेल गेल। हिन्दी तँ राष्ट्र भाषा भेलाक कारणे भारत के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान अछि परंतु क्षेत्रीय आधार पर बिहार क कोनो भाषा ई स्थान नहि पाबि सकल। मैथिली पर राजनैतिक नेता लोकनिक वर्क दृष्टि परल अछि आ अपनहु में टांगघिच्चा सभक कमी नहि अछि। तथापि आब लोकक दृष्टि एहि दिश गेल अछि। एहि लेल आब कहियो आन्दोलन करय परत तखनहि मिथिलांचल कए अपन मातृभाषा मैथिली कए उचित स्थान प्राप्त भ सकत। मिथिलांचलक लोक तखनहि मातृभाषाक महत्व केँ बुझि सकताह। मातृभाषा बाज में किछु गोटा कए संकोच होएत छन्हि चाहे ओ शिक्षित होइत या अशिक्षित। एहन लोकक मनोवृति में सेहो परिवर्तन आनय परत। तखन मातृभाषा क महत्व लोक के पता चलत और सबके विकास भ सकत।

विश्व एकीकरण मिथिला के सिद्धांत अछि

✍ शरद कुमार झा

एकता आर शांतिसंधि त मिथिला के जुग जुगान्तर सं अलंकृत आभूषण अइछ।
मिथिला नगरी शक्ति स्वरुप नारी शक्ति के अनवरत विकाशन के लै प्रख्यात अइछ।
एकटा डंडा में दसटा जोड़ि दियौ, ओकर शक्ति के कियौ तोड़ि नहीं सकैत अछि।
एकटा मधुमक्खी के असंख्य मधुमक्खीक क सहारा भेटैत छै, तहन मीठ मधु बनैत अछि।
राजा जनक, जनकनन्दिनी सं लके विद्यापति, मंडन मिश्र, भारती जेहेन मिथिला के शान छथि।
विश्व संघबद्धता आर एकरूपता हुनकर संयुक्त निति विद्या अछि।
मखान, पान, माछ मिथिला माटि के उत्पादन अछि -
उज्जर, शीतल सुलभ, मुलायम मखानक गुण अनेक अछि।
मधुबनी चित्रकला आर धमक - धमक झिझिया नृत्य
दिव्य लौकिक आनंद बिखेड़ैत अइछ।
मिथिलाक्षर जेहेन रमणीय लिपि, संस्कृति, संस्कार मिथिला के पहचान अइछ।
मत्स्य - पालन, वृक्ष - रोपण, कृषि कर्म, पुष्प - उद्यान मिथिला के उद्देश्य अछि।
अरिपन, संगीत, सिकी - मौनी, सूत बन्दनाई हमर मिथिला के पहचान अछि।

दुलहा परिछन

✍ ममता ठाकुर

चलु चलु हे सखी, झट्कारु हे सखी,
आहे दुअरे ठाड़s पहून परिछु हे सखी
आहे दुअरे ठाड़s पहून परिछु हे सखी.....

पहिले परिछब राम लाला के,
तखन परिछब लछुमन भ्राता के 2
ताके पाछू दुनू छोट भाई हे सखी,
आहे ताके पाछू दुनू छोट भाई हे सखी 2
आहे दुअरे ठाड़ पहून परिछु हे सखी...

पहिले पुछब अपन नाम,
तखन पूछब बाबूजी के नाम 2
ताके पाछू कुन गाम धाम हे सखी,
आहे ताके पाछू कुन गाम धाम हे सखी
आहे दुअरे ठाड़ पहून परिछु हे सखी.....

पहिले ब्याहब सीया धिया के,
तखन ब्याहब उर्मिल दाई के 2
ताके पाछू दुनू छोट लाली हे सखी,
आहे ताके पाछू दुनू छोट लाली हे सखी
आहे दुअरे ठाड़s पहून परिछु हे सखी..आहे... आहे...

हरिपुर डिहटोला
(मधुबनी)
23/8/20

मिथिलाक्षर लिपि अछि हम्मर सम्मान

✍ डॉ. सबिता झा 'सोनी'

अदौं सं अपन मिथिला सभ्यता संस्कार, संस्कृति व्यवहार आदर सम्मान व सेवा सत्कार लेल सदति अग्रणी रहल अछि। मिथिलाक भाषा संस्कृति,खान पान लोक व्यवहार अनुपम थिक.. तैं त अपन मिथिला आ मिथिलाक माटि पानि प्रकांड विद्वान, ऋषिमुनि सह अनेक देवी-देवता केर अवतार देवभूमि रहल अछि।जकर साक्षात प्रमाण "उगना" रूप देवाधिदेव महादेव कवि कोकिंग विद्यापति लग निवास कएलाह अछि.. "जानकी" रूप मे माता पार्वती आ स्वयं परापरम ब्रम्ह "श्रीराम" अवतार मे मिथिला में निवास कएलनि अछि।

एहन पावन भूमि मिथिलाक भाषा थिक मैथिली आ लिखबाक लिपि अति प्राचीनतम लिपि थिक जेकरा हमसभ मिथिलाक्षर/तिरहुत/वैदेही लिपि के रूपे अवगत छी।अपन मिथिलाक्षर लिपि अति प्राचीनतम लिपी सह अनेक लिपि के जननी सेहो थिक। एकर अति प्राचीनतम प्रमाण दरभंगा जिला के कुशेश्वर स्थान लग तिलकेश्वर स्थान में सेहो लिखल भेटल अछि।

समय परिवर्तन अनुसारे लोक जीन जीवन में बदलाव जीविकोपार्जन हेतु पलायन आदि बहुत यास कारणे शनैः शनैः अपन मिथिलाक्षर लिपि लिखबाक स्थान देवनागरी मे परिवर्तित भ गेल.. मिथिलाक्षर मात्र "विवाह सिद्धांत वा पाता" ओतबा धरि सीमित रही गेल..मुदा आब विगत किछु बरष सं मिथिलाक विद्वान सुधिजन द्वारा पुनः अपन एहि विलुप्त होइत मिथिलाक्षर लिपि आ जन जन तक सिखेबा आ ब्यवहार मे अनबा लेल युद्धस्तर पर अभियान चलाओल जा रहल अछि।

एहि अभियान मे एकमात्र लुक्खीप्रयास हमहुँ सभ कएलहुँ अछि.. 'दुर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान' द्वारा अपन मिथिलाक्षर लिपि सिखेबाक लेल प्रयासरत छी।एहि अभियान केर ई पाठशाला (व्हाट्सएप) द्वारा सिखाओल जा रहल अछि।

2017-18 में किछु "महिला मैथिलानी" के लए ई अभियानक आरम्भ कएने रही आई देशक अनेको प्रांत होईत सात समुद्र पार अनेको कंट्री में अपन मिथिलाक्षर केरपरचम लहरा रहल अछि।

आशा नहिं अपितु पूर्ण विश्वास अछि जे अपन मिथिलाक्षर लिपि अपन स्थान अपन सम्मानक परचम एहिना फहराबैत सकल विश्वमें सभसं उच्चत्तम शिखर पर रहतीह।

मिथिलाक पाग थिक हमर पहचान
मिथिलाक्षर लिपि अछि हम्मर सम्मान।

- महासचिव/ निदेशक
दुर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान



संजीव कुमार झा

भारतक सभ्यता आर संस्कार

✍ ओम चौधरी

हिन्दुस्तान एगो बड पैघ देश छै। भिन्न-भिन्न संस्कार और सभ्यता के लोक अत वसे छथि। हर वर्ग आउर हर वर्णक लोक एक दोसरक सुख दुख मे भागीदार भ एगो सभ्य समाजक निर्माण मे अहम भूमिका निभाभै छथि।

भारत के इतिहास बड पैघ छै अत संस्कार के साथ सभ्यता सेहो बड पुरान छै। जकर वर्णन वेद आर शास्त्र मे मिले अछि। सभ्यता ऐहन विश्व के कोनो भी पैघ आउर मानल युनिवर्सिटी मे जाउ त अइ पर अध्यन आउर रिसर्च कैल जाइत मिलति अछि।

संस्कृति भारत के बड पुरान भाषा छै। आउर अकरा देव भाषा सेहो कहल जाइत अछि। जाहि इतिहासकाल मे कोनो आउर दोसर के अध्यन अतै सरल नए छल ताहि काल मे संस्कृति मे पैघ-पैघ ग्रंथ आउर उपनिषद लिखल गेल भारतक विद्वत ऋषि मुनि द्वारा। आदिकाल स भारतक संस्कृति आर सभ्यता के बारे मे सवत्र उल्लेखित अछि।

आजुक आधुनिक समय मे लोक अपन सभ्यता आर संस्कार के नए विसरय छैथ। केउ भारतीय सात समुद्र पार अ भारतक कोनो प्रांत मे होइथ अपन जन्मभूमि स दुर तइयो अपन कर्म आर संस्कार कहियो नए विसरय छैथ। इ गुण एगो भारतीय टा मे भ सकै छै, जाइस भारतक संस्कृति के महान बनबैय छै।

लोकक अतै व्यस्तता भरल जीवन मे अखनो अपन पड़ोस मे केउ भूखे नए सुतथि, केउ ठंडे नए ठुठरथि, केउ प्यासे नए रहती, किनको कोनो मिसविहेव स किनको परिवारक खुशि नए टुटे, किनको पाय नए रहवाक कारने कोनो रोगी नए पैघ बिमारी स ग्रसित होइ, किनको बेटा पुतहु प्रदेश रहे छनि त ओ दुनु प्राणी टुगर नए होइथ, किनको टका नए छनि बेटी के ब्याह हेतु त हुनका लग टका ल क ठार होवे अइ तरहक ख्याल सिर्फ एगो भारतीय टा राखि सकै छैथ जे हुनक डीएनए मे पैल जाइत छै। तै हमरा गर्व अछि विश्व के सबस पैघ माईक कोख स जन्म ल क, अई संसार के नव निर्माणक संरचना हेतु अपन भूमिका अदा क रहल छि।

इ धरती एगो रंगमंच छै। जत सब अपन-अपन कर्तव्य क रहल अछि। सबकेउ ओइ रंगमंचक पात्र छै। सबकेउ अपना हिसाब स अपन भूमिका अदा क रहल अछि। तै अपन भूमिका अदा करै मे कनियो संकोच नए क। सभ्य समाजक निर्माण मे सदिखन आगु रहि। इ स्मरण राखब आहां के बोअल बीज आहां के अगिला पिढी काटत तै फसल बोअ स पहिले जमीन के गुणवत्ता और मौसमक जानकारी अवश्य राखब। धन्यवाद

सचिव

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान



वीणा पाठक

डिस्कवरी ऑफ मिथिला !
मिथिलाक खोज - दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान के -
- संस्थापक पँ श्री कौशल झा जी (गुरु जी) द्वारा लिखल --
लिप्यान्तरण कुमुद झा !

डिस्कवरी ऑफ मिथिला !
मिथिलाक खोज - दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान के -
- संस्थापक पँ श्री कौशल झा जी (गुरु जी) द्वारा लिखल --
लिप्यान्तरण कुमुद झा !

1) गौरी शँकर स्थान :- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हँठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शंकर सम्मिलित मुर्ति आऽ एहिपर मिथिलाक्षर में लिखल पाल वँशीय अभिलेखक कारण सऽ विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि ।

1) गौरी शँकर स्थान :- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हँठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शंकर सम्मिलित मुर्ति आऽ एहिपर मिथिलाक्षर में लिखल पाल वँशीय अभिलेख-
-थक कारण- सऽ विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि ।

* ई स्थल एक मात्र पुरातन स्थल अछि जे पूर्ण रूप सँ गामक उत्साही कार्यकर्त्ता लोकनिक सहयोग सँ पूर्ण रूप सँ विकसित अछि। शिवरात्री में एहि स्थलक चुहचुही देखबा योग्य रहैत अछि ।
* ई स्थल एक मात्र पुरातन स्थल अछि जे पूर्ण रूप सँ गामक उत्साही कार्यकर्त्ता लोकनिक सहयोग सँ पूर्ण रूप सँ विकसित अछि। शिवरात्री में एहि स्थलक चुहचुही देखबा योग्य रहैत अछि ।

* विदेश्वर स्थान सँ २-३ किलोमिटर उत्तर दिशा में ई स्थान अछि।

* ৱিদেশ্বৰ স্থান সঁ ২-৩ কিলোমিটৰ উত্তৰ দিশা মেঁ ই স্থান অছি।

2) भीठ भगवान पुर अभिलेख :- राजा न्यायदेवक पुत्र मल्लदेव सँ सम्बंधित अभिलेख स्तय अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थाना में ई स्थल अछि।

2) ভীঠ ভগৱানপুৰ অভিলেখ :- ৰাজা ন্যায়দেৱক পুত্ৰ মল্লদেৱ সঁ সম্বঁধিত অভিলেখ এতয় অছি। মধুৱঁনী জিলাক মধে-পুৰ থানা মেঁ ই স্থল অছি।

3) हुल्लासपट्टी :- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुल्लासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मुर्ति स्तय अछि।

3) ফুল্লাসপট্টী :- মধুৱঁনী জিলাক ফুলপৰাস থানাক জাগে-শ্বৰ স্থান লগ ফুল্লাসপট্টী গাম অছি। কাৰী পাথৰক ৱিষ্ণু ভগৱানক মুৰ্তি এতয় অছি।

4) पिपराही :- लौकहा थानाक पिपराही गाम में विष्णुक मूर्तिक चारू हाथ भग्न भय गेल अछि।

4) পিপৰাহী :- লৌকহা থানাক পিপৰাহী গাম মেঁ ৱিষ্ণু-ক মূৰ্তিক চাৰু হাথ ভগ্ন ভয় গেল অছি।

5) मधुबन :- पिपराही सँ 10 किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममें चतुर्भुज विष्णुक मूर्ति अछि।

5) মধুবন :- পিপৰাহী সঁ 10 কিলোমীটৰ উত্তৰ নেপালক মধুবন গামমে চতুৰ্ভুজ বিষ্ণুক মূৰ্তি অছি।

6) अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय :- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्ति एतय राखल अछि।

6) অঁধৰা-ঠাঢ়ীক স্থানীয় বাচস্পতি সংগ্ৰহালয় :- গৌড় গামক যক্ষিণীক ভৱ্য মূৰ্তি এতয় ৰাখল অছি।

7) कमलादित्य स्थान :- अंधराठाड़ी गामक लगमें कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा न्यायदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

7) কমলাদিত্য স্থান :- অঁধৰাঠাড়ী গামক লগমে কমলাদিত্য স্থানক বিষ্ণু মন্দিৰ কৰ্ণাট ৰাজা ন্যায়দেৱক মন্ত্ৰী শ্ৰী-ধৰ দাস দ্বাৰা স্থাপিত ভেল।

8) झंझारपुर :- अनुमंडलक रखबारी गाममें वृक्ष के निचाँ राखल विष्णु मूर्ति, गांधारशैली में बनाओल गेल अछि।

8) ঝঁঝাৰপুৰ :- অনুমণ্ডলক ৰখৰাঁৰী গামমে চুক্ষকে নিচাঁ ৰাখল বিষ্ণু মূৰ্তি গাঁধাৰশৈলী মে বনাওল গেল অছি।

9) पजेबागढ़ वनही टोल :- एतय एकटा बुद्ध मूर्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नहि अछि। ई स्थल सेहो रखबारी गाम लग अछि।

৯) পজেৰাঁগঢ় ৰনহী টোল :- এতয় একটা চুঁদ্ধ মূৰ্তি ভেটল ছল, মুদা ওকৰ আৰঁ কোনা পতা নহি অছি। গ স্থল সেহো ৰখৰাঁৰী গাম লগ অছি।

10) मुसहरनियां डीह :- अंधरा ठाढ़ीसँ 3 किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनि-याँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्ति, पाइ, बर्तनक टुकड़ी आऽ पजेबाक अवशेष एतए अछि।

১০) মুসহৰনিয়াঁ ডীহ :- অঁধৰা ঠাঢ়ীসঁ ৩ কিলোমীটৰ পশ্চিম পস্টন গাম লগ একটা উঁচ ডীহ অছি। চুঁদ্ধকালীন একজনি-য়াঁ কোঠলী, ৰৌদ্ধকালীন মূৰ্তি, পাগ, ৰঁতনক টুকড়ী আ পজেৰাক অৱশেষ এতয় অছি।

एकर आगु अगिला पत्रिका में —

একৰ আগু অগিলা পত্ৰিকা মেঁ —

গতি —

শম্বুদ ঝা

জোৰহাট-

টীটাৰঁৰ

আসাম

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान

Regd. No.: DELHI/1770







थिलाक्षर सीखने वालों का होगा सम्म

मिथिलाक्षर लिपि में 500 को ऑनलाइन प्रशिक्षित किया

जमाने के साथ आगे बढ़ने की चाह, लेकिन विरासत को बचाने की बेचैनी भी



D-9, Nanhe Park, Uttam Nagar, New Delhi 110059

Mob: 9999327551

www.doorvakshat.org

महोदय,

दूर्वाक्षत-मिशन मिथिलाक्षर अभियान दिल्ली में भारत सरकार नीति आयोग द्वारा पंजीकृत संस्था पिछले पांच वर्षों से मिशन मिथिलाक्षरअभियान के माध्यम से मिथिलावासी एवं प्रवासी मैथिल लोगों को मिथिलाक्षर लिपि में प्रवीण करने के साथ-साथ मिथिलाक्षर के प्रचारएवं प्रसार में कार्यरत है। अभी तक लगभग **1000** (देश एवं विदेश) में रह रहे मैथिल लोगों को मिथिलाक्षर लिपि में प्रवीण कर चूका है।प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी मिथिलाक्षर प्रवीण सम्मान समारोह किया जा रहा है

इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन भी किया जायेगा।

आपसे हार्दिक अनुरोध है की प्रकाशित होने वाले स्मारिका के लिएअपनी मंत्रालय, प्रतिष्ठान, कम्पनी आदि की विग्यापन देकर संस्था को कृतार्थ करें।

हम आपके सदैव आभारी रहेंगे।

सादर सहित,

कौशल किशोर झा

अध्यक्ष - दूर्वाक्षत-मिशन मिथिलाक्षर अभियान

विज्ञापन की जानकारी और दर

पैकेज	सं	विशेषता	दर (INR)
प्लैटिनम	एक	स्मारिका के बैककवर (आखिरी पन्ना) पर फुल पेज विज्ञापन	रु. 1,25,000/-
गोल्ड	दो	स्मारिका के इनर कवर (कवर II / कवर III) पर फुल पेज विज्ञापन	रु. 75000/-
सिल्वर	चार	स्मारिका के इनर कवर (कवर II / कवर III) पर हाफ पेज विज्ञापन	रु. 50000/-
ब्रोंज	दस	अंदर के पन्नों में फुल पेज विज्ञापन	रु. 40000/-
इकोनॉमी	दस	अंदर के पन्नों में हाफ पेज विज्ञापन	रु. 25000/-
एड ऑन	पाँच	कवर पेज पर कलर लोगो (उपरोक्त पैकेज के अलावा चार्जेबल)	रु. 50000/-

doorvaksata@gmail.com

https://doorvaksata.org/

https://www.facebook.com/mithilaksharabhiyaan/

@mithilakshar19

https://www.youtube.com/channel/UCm8vQ73AB-dT8-rcytr53B8A

जय मिथिला जय मिथिलाक्षर

दूर्वाक्षत मिशन मिथिलाक्षर अभियान



মিশন মিথিলাক্ষৰ

जय मिथिला जय मिथिलाक्षर अभियान जे कियो कुनू कारणवश एखन तक मिथिलाक्षर लिपि नै सिखलौं या जिन्कर जानकर सर कुटुम धिया पुता नै सिखलैथ अहि हुन्कर सबहक नाम आ ह्वाटसप नमर एतय द सकैत छी या पं कौशल झा क मोबाइल ह्वाटसप नमर (9999327551) पर सम्पर्क क सकैत छी आ भेज सकैत छी नवका वैच हर महीना एक तारिक स आरंम्भ होयत अछि।

- पं कौशल झा

पं कौशल झा
+91 9999327551

श्री शैलेंद्र झा
+91 9818704997

श्रीमती सबिता झा 'सोनी'
+91 7011403937

doorvaksata@gmail.com
https://doorvaksata.org/
https://www.facebook.com/mithilaksharabhiyaan/
@mithilakshar19
https://www.youtube.com/channel/UCm8vQ73AB-dT8-rcytr53B8A


জন-
গন-
মন
অধিনায়ক
জয় হে
ভারত-
ভাগ্য-
বিধাতা।
পঞ্জাব সিঁধ
গোপী সাহ
গুজরাত মরাঠা
দ্রাবিড় উৎকল বঁগ।
বিঁধ্য হিমাচল যমুনা গঁগা
উচ্ছল জলধি তরঁগ।
তব শুভ নামে জাগে,
তব শুভ আশিষ মাঁগে;
গাহে তব জয় গাথা।
জন-গন-মঁগলদায়ক জয় হে
ভারত-ভাগ্য-বিধাতা।
জয় হে, জয় হে,
জয় হে,
জয় জয়
জয়,
জয় হে।
গোপী সাহ - কেন্যা
দূরাক্ষত মিশন মিথিলাক্ষর অভিযান

गोपी साह, केन्या

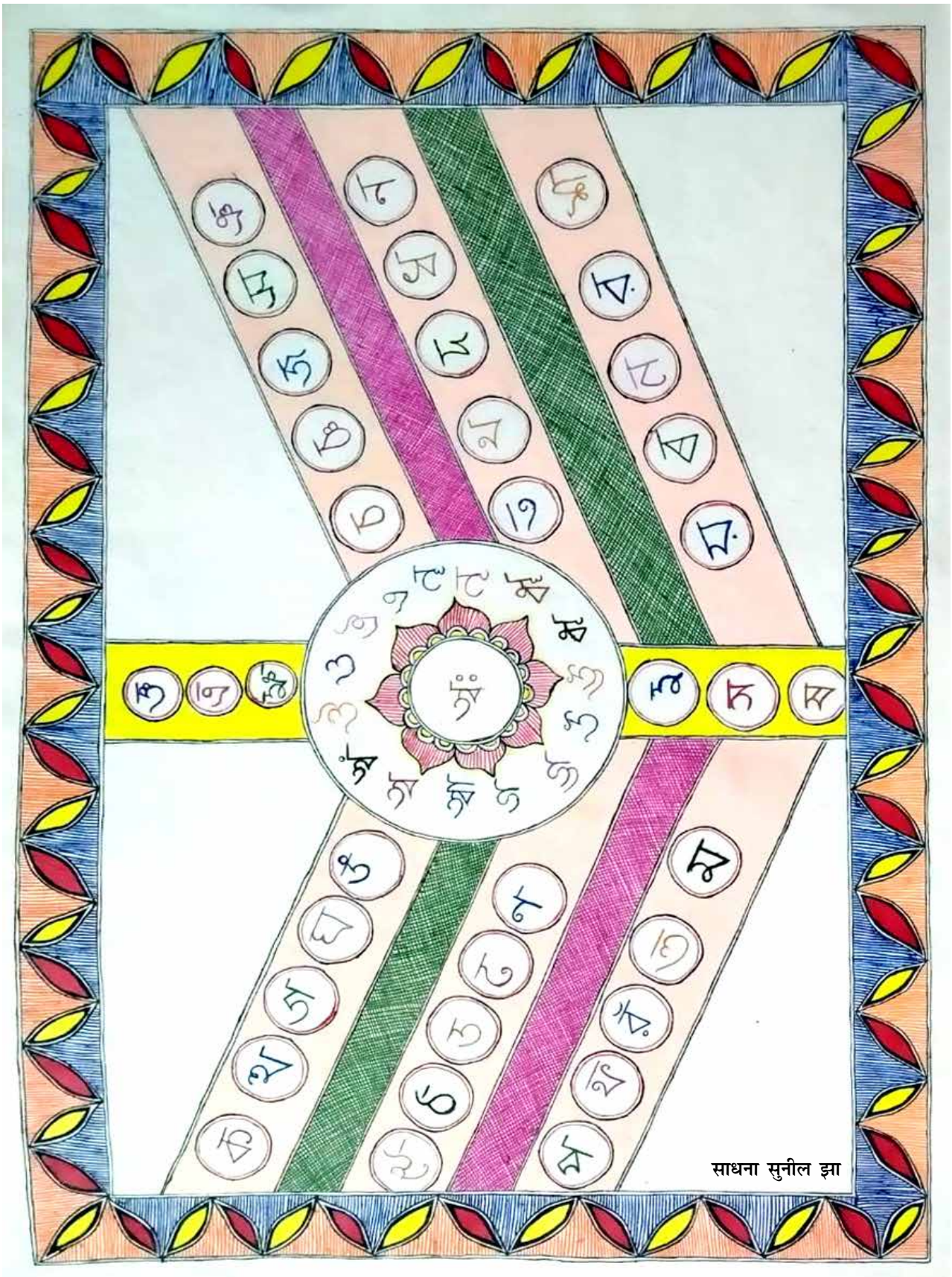

साधना सुनील झा

प्रकाशक आ मुद्रक पं. कौशल झा द्वारा दूर्वाक्षत : मिशन मिथिलाक्षर अभियानक
दिशसं डी-9, नन्हे पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 सं ऑनलाइन प्रकाशित। संपादक : स्वाती शाकम्भरी